CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सीडी सहित)

सरल संगीत शिक्षा

(भाग - तीन)

डॉ० तेजसिंह टाक

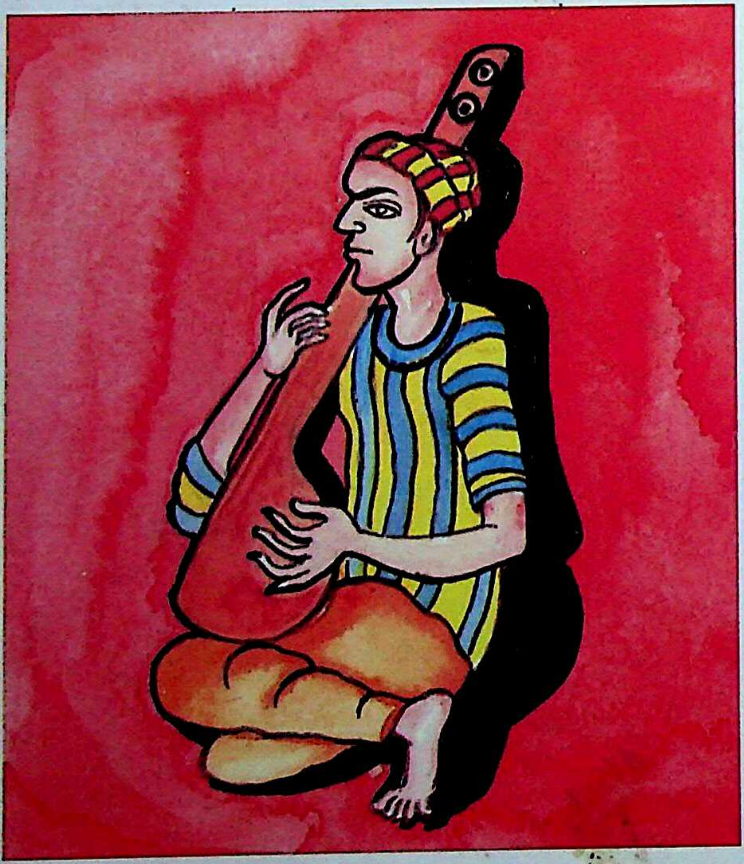

बेकरॉं आलमी फाउण्डेशन

लखनऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10.4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरल संगीत शिक्षा

(भाग- तीन)

(संगीत के सभी विद्यार्थियों के लिए)

डॉ० तेज सिंह टाक

बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वाधिकार ©	लेखकाधीन
आवरण	अमित कुमार
प्रथम संस्करण	सन् 2009 ई०
मूल्य (सी०डी० सहित)	Rs. 300.00, $ 15.00, £ 10.00
प्रकाशक	बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन 873, एम.आई.जी., शेखूपुरा कॉलोनी अलीगंज, लखनऊ- 226 022
डी.टी.पी. एवं मुद्रण	के.सी.कम्प्यूटर्स LG-10-11, तरुण मार्केट, निकट डालीगंज रेलवे क्रासिंग सीतापुर रोड, लखनऊ- 226 020 फ़ोन नं :- 9415569069, 9235846999
ध्वन्यांकन	1- स्वरांजलि स्टूडियो, 48- प्राइवेट पेपर मिल कॉलोनी निशातगंज, लखनऊ। फोन नं:- 9415014595 2- अनुपम गुलवाडी डिजिटल ड्रीम्स 2A, एसोसिएशन रोड, जार्ज टाउन, इलाहाबाद। फोन नं:- 9335156700
पुस्तक प्राप्ति स्थान	1- 503/322, बरौलिया, डालीगंज, लखनऊ - 226 020 फोन नं - (0522) 2740630, 09621405080 2- द्वारा- निर्मल दर्शन प्रताप नगर, कुर्सी रोड, लखनऊ- 226 022 फ़ोन :- (0522) 2363136, 09838178877

SARAL SANGEET SHIKSHA (Part -3) - *Dr. Tej Singh Tak*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पण

स्व० बल्देव शर्मा

की स्मृति को

तेरा तुझको अर्पण

इस पुस्तक शृंखला में बंदिशों के अतिरिक्त अधिकतर आलाप-तान आदरणीय स्मृतिशेष की शिक्षा की निधि हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकीय

"The superior man is slow in his words and earnest in his conduct."

डॉ० तेज सिंह टाक उन विरले लोगों में हैं जिनको वचन से अधिक अपने कार्य पर विश्वास है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि प्रज्ञाचक्षु होने की अपनी सीमाओं को समझने के पश्चात् भी इसको बाधा न मानते हुए पुस्तक लेखन का संकल्प किया। अपार हर्ष है कि अपने संकल्प को मूर्त रूप देने के क्रम में डॉ० टाक ने सन् 2001 से प्रारम्भ कर इस वर्ष अपनी छठी और इस शृंखला की तीसरी पुस्तक प्रस्तुत की है।

बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन को ऐसे प्रेरणादायी कार्यों के प्रति सदैव अनुराग रहा है। फ़ाउण्डेशन के लिए गौरव की बात है कि उसे डॉ० तेज सिंह टाक की पुस्तकों के प्रकाशन का अवसर प्राप्त हुआ।

इस पुस्तक शृंखला में समाहित किए गए राग या बंदिशें वैसे तो विभिन्न शास्त्रीय गायकों के स्वर में कैसेट और सी०डी० में उपलब्ध हैं परन्तु उन बंदिशों का प्रस्तुतिकरण उच्च स्तर का होता है इसलिए सामान्यतः वह विद्वानों एवं गुणी रसिकों के सुनने के उपयोग में ही आ पाती हैं, सामान्य विद्यार्थियों के नहीं, अतः डॉ० टाक का इस प्रकार का प्रयोग इसीलिए और भी उपयोगी लगता है।

इसी को दृष्टिगत् रखते हुए इस पुस्तक में भी इस शृंखला के पूर्व के दो भागों की भाँति विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पुस्तक में दिए गए रागों की बंदिशों को गायकों के स्वर में विद्यार्थियों के स्तर के अनुकूल सी०डी० में भी प्रस्तुत किया जा रहा है। विश्वास है कि पूर्ववत् यह पुस्तक भी अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चर्चित युवा चित्रकार श्री अमित कुमार को आकर्षक आवरण चित्रण के लिए धन्यवाद एवं संगीत की दुरूह सामग्री टंकित करने के लिए श्री कपिल चाँदवानी और श्री दुर्गेश कुमार का आभार।

बंदिशों के ध्वंयांकन के लिए स्वरांजलि स्टूडियो, लखनऊ एवं अनुपम गुलबाडी डिजिटल ड्रीम्स स्टूडियो, इलाहाबाद के प्रति भी आभार।

डॉ० टॉक को इस पुस्तक की बधाई के साथ ही अगली रचनाओं की शुभकामनाएँ एवं पुस्तक के संबंध में सजग पाठकों एवं विद्वानों की सार्थक प्रतिक्रिया की आशा के साथ.......

निर्मल दर्शन
प्रवक्ता
बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन

लखनऊ
मकर संक्रान्ति, 2009

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखक परिचय

डॉ० तेज सिंह टाक

नाम	-	डॉ० तेज सिंह टाक
पिता	-	स्व. किशन सिंह
माता	-	श्रीमती भगवान कौर
जन्म	-	11 दिसम्बर सन् 1945 ई०
जन्म स्थान	-	ग्राम- फुल्लोमिट्ठी जनपद- बठिण्डा (पंजाब)
शिक्षा	-	प्रारम्भिक-अन्धविद्यालय अमृतसर, पंजाब उच्च- गांधर्व मण्डल, नई दिल्ली पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
शोध	-	बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०) जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त (1973-78)
प्रकाशित कृतियाँ	-	संगीत : जिज्ञासा और समाधान, संगीत : विज्ञान एवं गणित, सुबोध संगीत शास्त्र एवं सरल संगीत शिक्षा भाग-1 एवं भाग-2
अन्य	-	सेमिनार प्रतिभागिता- 1. मैक्समुलर भवन, कलकत्ता 2. अन्धविद्यालय, अहमदाबाद 3. हम्पी विश्वविद्यालय, हम्पी (कर्नाटक) 4. राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित (2006) 5. एशिया में ब्रेल लिपि का स्तर (2008)
सम्प्रति	-	भातखण्डे संगीत संस्थान (सम विश्वविद्यालय), लखनऊ में सन् 1979 ई० से प्रारम्भ में शास्त्र एवं पश्चात् में व्यवहार तथा विगत् दस वर्षों से शास्त्र शिक्षक से रूप में सेवारत।
पता	-	503/322 बरौलिया, डालीगंज, लखनऊ - 226 020 दूरभाष (0522) 2740630, 09621405080

* संगीत विशारद एवं संगीत अलंकार (गायन)

** एम.ए. (वायलिन) - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

इस पुस्तक के पिछले दो भागों में 30 राग दिये जा चुके हैं। इस भाग में 20 राग दिये गये हैं। संभवतः यह पुस्तक सरल संगीत शिक्षा भाग-3 इस श्रृंखला की अंतिम कड़ी है। इसलिए स्नात्तकोत्तर स्तर के 6 रागों में 3 ध्रुपद और 3 धमार भी इसी पुस्तक के अंत में दे दिये गये हैं। जिज्ञासु पाठकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए रागों की स्वर मालिका, विलंबित एवं द्रुत ख्याल, ध्रुपद, धमार आदि सभी इस पुस्तक में दिये गये हैं।

इनमें से 10 रागों में आलाप, तान सहित विलम्बित ख्याल, 14 रागों में स्वर मालिका और कम से कम एक द्रुत ख्याल तान सहित दिया गया है। पाँच रागों में दो या तीन छोटे खयाल दिये गये हैं। 6 रागों में ध्रुपद तथा 8 रागों में लयकारी सहित धमार दी गयी हैं। अंतिम 6 रागों में केवल ध्रुपद या धमार ही दिये जा सके हैं। यदि इस पुस्तक का चौथा भाग भी प्रस्तुत हो पायेगा तो उसमें उच्च स्तर के रागों को विधिवत् रूप से सम्मिलित किया जायेगा।

कृतज्ञता ज्ञापनः-

इस पुस्तक के मूल रूप से दो भाग हैं। ध्वंयांकित सम्बन्धी सी.डी. और लिखित रूप में पुस्तक। सी.डी. के विषय में यह कहना होगा कि गायी गईं 55 बन्दिशों में से 45 रश्मि चौधरी द्वारा गाई गयी हैं। इस सहयोग के लिए मैं इनका आभार प्रकट करता हूँ। शेष ध्रुपद, धमारों में से 1 ध्रुपद श्रीमती मनुराय, दो श्री आलोक शुक्ल और 7 श्री विनीत पवैया द्वारा गाये गये हैं। इन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ। तबले की संगत में इलाहाबाद के श्री विनोद मिश्र, लखनऊ के त्रिदीब ज्योति गोस्वामी का सहयोग सराहनीय है। ध्वन्यांकन के लिए मुख्य रूप से इलाहाबाद के श्री अनुपम गुलवाड़ी और लखनऊ के श्री हेमसिंह के सहयोग से सुरीला संगीत रिकार्ड हो सका। इसके लिए इन्हें भी हार्दिक धन्यवाद। पुस्तक की अधिकतर बंदिशें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री मिलन देबनाथ की अपनी कम्पोज़्ड पुस्तक क्रमिक मालिका (1 से 4) से ली गयी हैं जिससे बहुत सहायता मिली तथा श्रम और समय की बचत हुई, इसके लिए श्री मिलन देबनाथ का मैं हृदय से आभारी हूँ।

आलाप और तान लिखने एवं कम्प्यूटर कार्य प्रिय छात्र श्री अनुपम अवस्थी द्वारा किया गया इन्हें आशीष। मेरी दोनों बेटियों लालिमा और गरिमा ने लगातार समय देकर संगीत संबंधी चिह्नों को लगवाने और प्रूफ़ रीडिंग का दायित्व भी निभाया इसके लिए इन दोनों को आशीर्वाद।

कुछ बंदिशे क्रमिक (1 से 6) में से भी साभार ले ली गयी है। अधिकतर रागों के आलाप-तान प्रारंभ से गुरुओं द्वारा सिखाये गये ही दिये हैं। मुख्य रूप से स्व० बलदेव कृष्ण शर्मा द्वारा दी गयी सामग्री आलाप-तान के रूप में सरल संगीत शिक्षा 1,2,3 में दी गयी है। **'तेरा तुझको अर्पण'** के आधार पर उन्हीं को ये तीसरा भाग समर्पित है। कहीं-कहीं तान संग्रह (1 से 3) और तान-तरंग (1 से 3) से भी कुछ तानें साभार ले ली गयी हैं। श्री कैलाश जोशी का इस पुस्तक के प्रणयन और रिकार्डिंग में पहले की तरह सहयोग मिला, तथा इन्होंने स्वर अभ्यास के लिए हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 32 थाट भी इस भाग के अन्त में गाए हैं, इनको आशीवांद।

यद्यपि इन सहायकों ने पूर्ण मनोयोग से कार्य किया है फिर भी अनेक स्थलों पर भूले रह जाने की संभावना हो सकती है, उन सबका दायित्व मुझे पर ही है अतः विज्ञ पाठक मेरी सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए उसे सुधार कर पढ़ लें। बेकराँ आलमी फ़ाउण्डेशन के प्रति विशेष आभार कि मेरी पुस्तकों के प्रकाशन में निरंतर उसकी रुचि बनी हुई है। सुहृद विद्वानों से, शिक्षकों से तथा योग्य विद्यार्थियों से प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा है। उनकी अमूल्य राय भविष्य की रचना में मार्गदर्शन करेगी।

मकर संक्रान्ति 2009 **डॉ० तेज सिंह टाक**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

पृष्ठ

1. राग कामोद 1 - 7
राग परिचय
स्वर मालिका
हूँ तो जनमन..................(विलम्बित ख़याल)
कारे जाने न दूँगी...............(द्रुत ख़याल)
लाल मोरी चूनर (इसी के पार्ट-1 में)

2. राग छायानट 8 - 27
राग परिचय
स्वर मालिका
ए करत हो................... (विलम्बित ख़याल)
पल पल सोच विचार............ (द्रुत ख़याल)
माननी मान (ध्रुपद)
अब मोसे खेलन लागे (धमार)

3. राग हिण्डोल 28 - 31
राग परिचय
स्वर मालिका
बरन बरन के फूल फूले.......................(द्रुत ख़याल)
नाद वेद अपरम्पार ध्रुपद (इसी पुस्तक के पार्ट-1 में)

4. राग शुद्ध कल्याण 32 - 39
राग परिचय
स्वर मालिका
बोलन लागी..................(विलम्बित ख़याल)
बाजो रे बाजो...............(द्रुत ख़याल)
मान जिन करो माननी धमार (इसी पुस्तक के पार्ट-1 में)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5. राग देशकार 40 – 43
राग परिचय
स्वर मालिका
तुम पर वारि...............(द्रुत ख़याल)
जागिये गोपाल लाल (इसी पुस्तक के पार्ट-1 में)
6. राग गौड़ मल्हार 44 – 56
राग परिचय
स्वर मालिका
काहे हो हमसों..................(विलम्बित ख़याल)
गरजत बरसत भीजत...............(द्रुत ख़याल)
उमड़ घुमड़.........................(धमार)
7. राग रामकली 57 – 66
राग परिचय
स्वर मालिका
ले साहेब को नाम..................(विलम्बित ख़याल)
नित उठ सुमिरन करिये...............(द्रुत ख़याल)
सगरी रैन के...............(द्रुत ख़याल)
8. राग बसन्त 67 – 75
राग परिचय
स्वर मालिका
नबि के दरबार..................(विलम्बित ख़याल)
सरस सुगन्ध...............(द्रुत ख़याल)
फगवा ब्रिज देखन...............(द्रुत ख़याल)
पिया संग खेलूँ...............(द्रुत ख़याल)
9. राग श्री 76 – 79
राग परिचय
स्वर मालिका
एरि हूँ तो आस न गइली...............(द्रुत ख़याल)
10. राग पूरिया 80 – 83
राग परिचय
स्वर मालिका
श्याम सुन्दर की...............(द्रुत ख़याल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11. राग मियाँ मल्हार 84 - 93

राग परिचय

स्वर मालिका

करीम नाम तेरो..................(विलम्बित ख़याल)

बोले रे पपैया...............(द्रुत ख़याल)

बिजुरी चमके...............(द्रुत ख़याल)

चमकत घनश्याम बीज ध्रुपद (इसी पुस्तक के पार्ट-1 में)

12. राग अड़ाना 94 - 99

राग परिचय

स्वर मालिका

अचानक आये..................(विलम्बित ख़याल)

गगरी मोरी भरन नाहि देत...............(द्रुत ख़याल)

13. राग दरबारी 100 - 117

राग परिचय

स्वर मालिका

मुबारक बादियाँ..................(विलम्बित ख़याल)

जो गुरु कृपा करे...............(द्रुत ख़याल)

घर जाने दे छाँड़...............(द्रुत ख़याल)

ना द्रे द्रे द्रे तुं द्रे द्रे द्रे...............(तराना)

मंदर डफ बाजन लागे.................(धमार)

14. राग मुल्तानी 118 - 124

राग परिचय

स्वर मालिका

गोकुल गाँव के..................(विलम्बित ख़याल)

रुनक झुनक मोरी...............(द्रुत ख़याल)

आज बाजत बधाई..............(द्रुत ख़याल)

15. राग विभास 125 - 130

ये नर हर................(ध्रुपद)

16. राग मेघ 131 - 143

आयो अब बरखा रुत................(ध्रुपद)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17. राग भूपाल तोड़ी 144 – 150

सुगन्ध मलयागिरी में.................(ध्रुपद)

18. राग नायकी कान्हड़ा 151 – 159

लाल लाड़ली.................(धमार)

19. राग मधुमाद सारंग 160 – 166

ढफ की धुंकार.................(धमार)

20. राग शहाना 167 – 174

कुंजन उड़त है गुलाल.................(धमार)

परिशिष्ट 175 – 177

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 32 थाट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(1) कामोद

यह राग कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी प संवादी रे है। इसका गाने का समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर रे-प तथा न्यास के स्वर सा-प हैं। इसकी जाति वक्र-सम्पूर्ण है क्योंकि आरोह-अवरोह में क्रमानुसार स्वर प्रयुक्त नहीं किए जाते।

दशविध राग वर्गीकरण के तीसरे वर्ग 'राग' के अन्तर्गत कामोद (सं० र० 2 - पृ० - 9) का उल्लेख शार्गंदेव ने किया है अतः यह प्राचीन राग है। कामोद का निकटवर्ती राग छायानट है। कामोद की प्रकृति छायानट की अपेक्षा चंचल है। म रे प की स्वर संगति कामोद और मल्हार में मुख्य अंग के रूप में मानी जाती है। दोनों में अन्तर यह है कि म रे प करते समय रे के बाद जल्दी से प लगाने पर कामोद और कुछ अन्तर से मींड के साथ प के प्रयोग से मल्हार होता है। इसमें कल्याण अंग की सा नि़ रे सा, प म ध प, प सां तथा हमीर अंग की ग म ध प म प ग म रे सा स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे प, म प ध प, नि ध सां

अवरोह :- सां नि ध प, म प ध प, ग म प, ग म रे सा

पकड़ :- रे प, म प ध प, ग म प, ग म रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामोद - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म	म	रे	मं	मं	प		मं	प		ग	प	ग		सा	
रे	रे	प	प	ध	ध	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	-
x				2				0				3			
म	रे	प	म	प				सा	सा			ऩि	ऩि		मं
रे	प	म॑	प	ग	म	रे	सा	रे	रे	सा	ऩि	ध़	ध़	प़	प़
x				2				0				3			
ध़	ध़	प़		ऩि	सा			म		ग	प	ग	सा		ऩि
प़	प़	सा	-	रे	रे	सा	-	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
x				2				0				3			

अंतरा

मं	मं	प		नि	नि			मं	पं	मं	पं	गं	मं		
प	प	सां	-	सां	रें	सां	-	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	-
x				2				0				3			
नि	नि			नि	नि		मं	प		ग	प	ग	सा		
सां	रें	सां	नि	ध	ध	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	-
x				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामोद – त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

हूँ तो जन मन छाँड, निस दिन प्रेम पिया के संग।

अंतरा

बिधना तोपै यही मैं मांगा, मोरे पिया को कीजे एकरंग।

स्थायी

नि़
सा
हूँ

म	रे	मंमं	मंमं	मं				प	प	ग़	मं	ग	सा		नि़
रें	प	पप	ध,प	प	–	–	मंप	ग	म	प	प(प)	म	रे	सा	,सा
तो	ऽ	जन	म,न	छा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	डूँ	,नि
3				x				2				0			
सा	म			नि़		सा		प		ग		ग	सा		रे
म	रे	–	सा	सा	–	ध़	नि़प	ग	म	प	(प)	म	रे	सा	-सा
स	दि	ऽ	न	प्रे	ऽ	म	ऽपि	या	ऽ	ऽ	ऽ	के	सं	ग,	ऽहूँ
3				x				2				0			

अंतरा

म	मं	प		नि	नि	नि		सां	ध		नि	नि		सां	
प	प	सां	–	सां	रें	सां	–	ध	सां	–	रें	सां	(सां)	ध	नि़प
बि	ध	ना	ऽ	तो	ऽ	पै	ऽ	य	ही	ऽ	मैं	मां	ऽ	गा	ऽऽ
3				x				2				0			
मं		मं	प	सां				प		ग		ग	सा		नि़
प	–	प	सां	ध	-नि़	प	–	ग	म	प	(प)	म	रे	सा	-सा
मो	ऽ	रे	पि	या	ऽऽ	को	ऽ	की	ऽ	जे	ए	क	रं	ग,	ऽहूँ
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) छाऽऽऽ सा - (सा) ,ध़ नि प़, मं प़ ध़ प़ नि़ ध़ सां - हूँ तो जनमन
(2) छाऽऽऽ सा रे प, मं प, ग म प ग म रे सा - हूँ तो जनमन
(3) छाऽऽऽ म रे प, मं प ध प, ग म प ग म सा रे सा - हूँ तो जनमन
(4) छाऽऽऽ प मं ध प, सां ध नि प मं प ध मं प ग म
प ग म रे प ग म रे सा - हूँ तो जनमन

::तान::

(1) छाऽऽऽ सासा मरे पप मंप गम पग मरे सा-
मरे पमं धप मंप गम पग मरे सा-
पमं धप सांसां धप गम पग मरे सा-
सारें सांसां धप मंप गम पग मरे सा-
गम पग मरे सा- गम पग मरे सा- हूँ तो जनमन

(2) छाऽऽऽ साम रेप मंप गम सारे निसा
साम रेप मंध पध मंप गम सारे निसा
साम रेप मंध पसां निसां पध मंप गम सारे निसा
साम रेप मंध पसां निरें निसां पध मंप गम सारे निसा रेप मंप गम रेसा
हूँ तो जनमन

(3) छाऽऽऽ सासा मरे पप मंप गम पग मरे
पमं धप मंप गम पग मरे
पमं धप सांसां धप मंप गम पग मरे
पमं धप सारें सांसां धप मंप गम पग मरे सा-
हूँ तो हूँ तो हूँ तो जनमन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

कामोद - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

कारे जाने न दूंगी ए री माई, अपने बालम को,
नैनन में कर रखी पलकन मूँद मूँद।

अंतरा

चमक बिजुरी मेहा बरसे,
सदारंगीले मोमदसा, बरसे मेहा बूँद बूँद।

स्थायी

	रे
-	सा
ऽ	का

म			मं		मं	मं		मं			प	प			मं
रे	प	-	प	प	प	ध	-	प	-	-	ध	ध	प	-	प
रे	ऽ	ऽ	जा	ने	न	दूँ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ए	रि	मा	ऽ	इ
0				3				x				2			

प			म	ग	सा			नि़		नि़		सा		नि़	
ग	म	प	ग	म	रे	सा	-	सा	-	रे	सा	ध़	-	प़	प़
अ	प	ने	बा	ल	म	को	ऽ	नै	ऽ	न	न	में	ऽ	क	र
0				3				x				2			

प़		नि़		नि़	सा		नि़				रे		नि़	रे	
सा	-	सा	-	रे	रे	सा	सा	गमप	गम	रे	सा	-	रे	सा	-
रा	ऽ	खी	ऽ	प	ल	क	न	मूँऽऽ	ऽऽ	द	मूँ	ऽ	द,	का	ऽ
0				3				x				2			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

मं		मं	प			नि		नि		नि		नि	नि		
प	प	प	सां	–	सां	सां	–	सां	–	सां	–	सां	रें	सां	–
च	म	क	बी	ऽ	ज	री	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ब	र	से	ऽ
0				3				x				2			
सां	नि	नि	नि	ध		नि		सां		नि	नि	सां			
ध	ध	ध	ध	सां	–	सां	–	निसां	रें	सां	सां	ध	–	नि	प
स	दा	ऽ	रँ	गी	ऽ	ले	ऽ	मोंऽ	ऽ	म	द	सा	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
ग	म	रे		म						प	ग		नि़	रे	
म	रे	प	–	ध	–	प	–	मंपध	मंप	ग	म	सा	रे	सा	–
ब	र	से	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	बूँऽऽ	ऽऽ	द	बूँ	ऽ	द,	का	ऽ
0				3				x				2			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	रे प - प	प प ध -	म- रेप -म॑ ध	पध म॑प गम सा
	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	जाऽ ऽने ऽऽ ना	दुऽ ऽऽ गीऽ का
	0	3	x	2
(2)	रे प - प	प प ध -	सां- -ध -- प-	पध म॑प गम सा
	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	जाऽ ऽने ऽऽ नऽ	दुऽ ऽऽ गीऽ का
	0	3	x	2

::स्थायी की तान::

(1)	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	सासा मरे पप म॑प	गम पग मरे का
	0	3	x	2
(2)	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	मरे पम॑ धप म॑प	गम पग मरे का
	0	3	x	2
(3)	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	पम॑ धप सांसां धप	गम पग मरे का
	0	3	x	2
(4)	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	सारें सांसां धप म॑प	गम पग मरे का
	0	3	x	2
(5)	रे ऽ ऽ जा	ने न दूँ ऽ	गी ऽ ऽ ए	रि मा ऽ इ
	0	3	x	2
	गम पग मरे सा-	रे- प- -- --	म॑प धम॑ पध म॑प	गम पग मरे सा-
	0	3	x	2
	रे- प- -- --	ग- म- रे- का	रे ऽ ऽ जा	ने ना ऽ जा
	0	3	x	2
	ने ना ऽ जा	ने न दूँ ऽ	गी	
	0	3	x	

::अन्तरे की तान::

(1)	च म क बी	ऽ ज री ऽ	सांसां धप गम रेसा	मरे पम॑ धप सां-
	0	3	x	2
(2)	च म क बी	ऽ ज री ऽ	सारें सांसां धप म॑प	म॑प धप निध सां-
	0	3	x	2
(3)	च म क बी	ऽ ज री ऽ	मरे पम॑ धप निध	सांनि धप निध सां-
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(2) छायानट

यह राग कल्याण थाट के अन्तर्गत होता है। इसमें दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे संवादी प होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। इसका गायन-वादन समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7.00 से 10.00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर रे तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। इसके आरोह-अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है किन्तु क्रमानुसार नहीं होता अतः इसकी जाति वक्र-सम्पूर्ण है।

छायानट का निकटवर्ती राग कामोद है। छायानट राग के स्वर विस्तार को देखते हुए इसका थाट बिलावल अधिक उपयुक्त लगता है। भातखण्डे जी ने भी इसके लक्षण गीत में छायानट को "शंकर भूषण मेल मिलावत" (क्र० - 4 पृ० 117) यानी बिलावल थाट का कहा है। इस राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग कुछ ही बन्दिशों में मिलता है किन्तु छायानट में कल्याण अंग प्रधान होने के कारण इसे कल्याण थाट का ही माना जाता है। इसमें कोमल निषाद विवादी रूप में होते हुए भी प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त किया जाता है। इसमें कल्याण अंग की नि रें सां, सां रें सां नि ध प, म प ध प, प ध प सां, अल्हैया अंग की ग म नि ध प तथा नट अंग की ग रे ग रे ग म स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह	:-	सा, रे, ^ग^रे ग म प, नि ध सां
अवरोह	:-	सां नि ध प, म प ध प, ग म रे सा।
पकड़	:-	रे ग म <u>नि</u> ध प (प) रे ग रे ग ‿गमप‿ ग म रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छायानट - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	नि̲		मं	प	म	प	ग	ग		ग			नि̣		
ध	ध	प	प	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	-
0				3				x				2			
नि̣	नि̣	सा		म	म			नि̣	नि̣			सा	नि̣		मं̣
सा	सा	ग	म	रे	रे	सा	-	सा	रे	सा	नि̣	ध̣	ध̣	प̣	प̣
0				3				x				2			
ध̣	ध̣	ग	ग	ग	म	प	ग	ग		ग		रे	नि̣		
प̣	प̣	रे	रे	रे	ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	-
0				3				x				2			

अंतरा

मं	मं	प		नि	नि			गं	मं	पं	मं	पं	मं		
प	प	सां	-	सां	रें	सां	-	रें	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां
0				3				x				2			
ध	ध	प	सां	नि			मं	प	म	प	म	प		म	
प	प	रें	रें	सां	नि	ध	प	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छायानट - एकताल (विलंबित)

स्थायी

ए करत हो मोसे नेहा की झूठी झूठी बतियाँ बनाय।

अंतरा

वे तो हम हूँ जानत तुम हूँ जानत,
सरस जग जानत, हिय सों हियरा देत जनाय।

स्थायी

म	रेरे		नि़	ग			म				
गम	गग	(सा)	सा	रे	-	-	गम	(प)	म	ग	(म)ग
एऽ	कऽ	र	त	हो	ऽ	ऽ	मोऽ	ऽ	से	ऽ	नेऽ
3		4		x		0		2		0	
म		सा		ध़		प़	ध़	ग	रे		
रे	सा	ध़नि़	प़	प़	-	साध	सा	रे	ग	(सा)	-
ऽ	हा	ऽऽ	की	झू	ऽ	टीऽ	ऽ	झू	ऽ	टी	ऽ
3		4		x		0		2		0	
ग		म़		ग			ग	म		नि़	
रे	गरे	गम	(प)	म	-	ग	म	रे	-	सा	नि़सा
ब	तिऽ	याँऽ	ब	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽऽ
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ग		ग		प	सां		सां	मग	रे	मप	
म	मग	प	,प	सां	रें	सां	धनिप	रे	गरे	गम	प
वे	तोऽ	ह	,म	हूँ	ऽ	जा	नऽत	तु	मऽ	हूँऽ	ऽ
3		4		x		0		2		0	

नि़	नि़		नि़	नि़	नि़	म	ग	म	नि़	नि़	
सा	रे	सा	सा	सा	सा	ग	म	रे	सा	सा	–
जा	ऽ	न	त	स	र	स	ज	ऽ	ग	जा	ऽ
3		4		x		0		2		0	

	सा				मं	सा	ध़	म	रे रे		
–	ध़	नि़	प़	प़	प़	ध़	सा	रे	गग	(सा)	–
ऽ	न	ऽ	त	हि	य	सों	ऽ	हि	यऽ	रा	ऽ
3		4		x		0		2		0	

ग	रे	मप					ग	म		नि़	
रे	गरे	गम	(प)	म	–	ग	म	रे	–	सा	नि़सा
दे	ऽऽ	तऽ	ज	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽऽ
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) होऽ सा, (सा) ध़ <u>नि</u> प़, प़ सा - रे सा एकरत
x 4

(2) होऽ सा रे, रे ग ग म म प, सा रे सा एकरत
x 4

(3) होऽ रे ग म <u>नि</u> ध, (प) रे, रे ग म प ग म रे सा एकरत
x 4

(4) होऽ प सां - सां ध <u>नि</u> (प), रे, रे ग गमप म, ग म रे सा एकरत
4

::तान::

(1) होऽ सासा रेग मप मग मरे सा- सासा रेग म<u>नि</u> धप रेग मप मग मरे
x
सा- सासा रेग मप सांसां धप रेग मप मग मरे सा- सांरें सांसां धप
रेग मप गम रेसा एकरत
4

(2) होऽ रेग मप गम रेसा रेग म<u>नि</u> धप रेग मप गम रेसा
x
रेग पम सांसां धप रेग मप गम रेसा
रेग मप सांरें सांसा धप रेग मप रेग मप रेग मप गम रेसा एकरत
4

(3) होऽ धध पध धप मप रेग मप गम रेसा
x
सांसां धसां सांध सांसां धप मप रग मप गम रेसा
रेंरें सांरें रेंसा रेंरें सांरें सांसां धप मप रेग मप गम रेसा निसा --
एकरत
4

(4) होऽ सारे गम रेग मप रेग रेग मप
x
रेग मरे गम रेग मप मग मरे सारे सा-
सासा रेग मप सांसां रेंगं मंपं मंगं मंरें
सांरें सांनि धप मंप रेग मप गम रेसा एकरत
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छायानट - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पल पल सोच विचार करूँ मैं, काहे प्रीतम अजहुँ न आये।

अंतरा

भोर भई तब आये पियरवा, तुम सौतन के द्वार बसाये।

स्थायी

प	नि	नि		प		म	ध	ग		ग	म	नि़	नि़		
सां	सां	ध	प	रे	ग	गुम	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	-
प	ल	प	ल	सो	ऽ	चुऽ	वि	चा	ऽ	ऽ	र	क	रूँ	मैं	ऽ
0				3				x				2			
नि़		ग		म		म		ग		ग		नि़	नि़		
सा	-	रे	-	ग	म	ध	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा	-
का	ऽ	हे	ऽ	पी	ऽ	त	म	अ	ज	हुँ	न	आ	ऽ	ये	ऽ
0				3				x				2			

अंतरा

म		प	नि	नि		नि		सां	नि	ध	नि	नि	रें	सां	
प	-	सां	सां	सां	-	रें	सां	ध	ध	सां	रें	सां	सां	ध	प
भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	त	ब	आ	ऽ	ये	पि	य	र	वा	ऽ
0				3				x				2			
ध	ध	प		नि	नि	नि		मग	रे		ध	ग			
प	प	रें	-	सां	सां	ध	प	रे	ग	गुम	प	म	ग	मरे	सा
तु	म	सौ	ऽ	ति	न	के	ऽ	द्वा	ऽ	रऽ	ब	सा	ऽ	ऽऽ	ये
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	सासा	रेग	मप	रेग	मप	मग	मरे	सा-
	0				3				x				2			
(2)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	रेग	मनि	धप	रेग	मप	मग	मरे	सा-
	0				3				x				2			
(3)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	रेग	मप	सांसां	धप	रेग	मप	गम	रेसा
	0				3				x				2			
(4)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	सांरें	सांसां	धप	मंप	रेग	मप	गम	रेसा
	0				3				x				2			
(5)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	धध	पध	धप	मंप	रेग	मप	गम	रेसा
	0				3				x				2			
(6)	प	ल	प	ल	सो	ऽ	चऽ	वि	चा	ऽ	ऽ	र	क	रूँ	मैं	ऽ
	0				3				x				2			
	रेग	मप	रेग	मनि	धप	रेग	मप	सांसां	धप	रेग	मप	सांरें	सांसां	धप	गम	रेसा
	0				3				x				2			

::अन्तरे की तान::

(1)	भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	त	ब	सांसां	धप	गम	रेसा	रेग	मप	निध	सां-
	0				3				x				2			
(2)	भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	त	ब	सांसां	धप	मंप	धप	रेग	मप	निध	सां-
	0				3				x				2			
(3)	भो	ऽ	र	भ	ई	ऽ	त	ब	सांरें	सांसां	धप	मंप	रेग	मप	निध	सां-
	0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छायानट – चौताल (विलंबित)

स्थायी

माननी मान काहे को करत अपने पिया के संग।

अंतरा

तू जैसी सुघर नारी सब रस जानत, ता ते तू ना कर ढंग।

स्थायी

											मं
											प
											मा
मग	रे	म	ध	ग		म	ग	म		नि	नि़
रे	ग	गम	प	म	–	ग	म	रे	–	सा	सा
ऽ	ऽ	नऽ	नि	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	का
3		4		x		0		2		0	
				नि़			सा			प़	ग
साग	म	रे	सा	रे	सा	–	ध़	नि़	प़	सा	रे
ऽ	हे	ऽ	को	क	र	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	प
3		4		x		0		2		0	
ग	रे	म	ध	ग			ग	म			सा
रे	ग	गम	प	म	–	ग	म	रे	–	सा	प
ने	पि	याऽ	के	सं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग,	मा
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दुगुन 3 ½
मात्रा से

											प
											मा
रे	ग	गम	प	म	–	ग	1प	रेग	गमप	म-	गम
S	S	नS	नि	मा	S	S	1मा	SS	नSनि	माS	SS
3		4		x		0		2		0	
रे-	सासा	सागम	रेसा	रेसा	-ध़	निप़	सारे	रेग	गमप	म-	गम
SS	नका	Sहे	Sको	कर	SS	Sत	अप	नेपि	याSके	संS	SS
3		4		x		0		2		0	
रे-	साप	रेग	गमप								
SS	गमा	SS	नSनि								
3		4									

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिगुन 10 1/3 से

प
मा

रे	ग	1परे	गगमप	म-ग	मरे-	सासासाग	मरेसा	रेसा-	धनिप	सारेरे	गगमप
ऽ	ऽ	1माऽ	ऽनऽनि	माऽऽ	ऽऽऽ	नकाऽ	हेऽको	करऽ	ऽऽत	अपने	पियाऽके
3		4		x		o		2		0	

म-ग	मरे-	सापरे	गगमप
संऽऽ	ऽऽऽ	गमाऽ	ऽनऽनि
3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 1 ¾ से

												प
रे	ग़	गम	प	म	123प	रेगगमप	म-गम	रे-सासा	सागमरेसा	रेसा-ध़	निप़सारे	मा
ऽ	ऽ	नऽ	नि	मा	123मा	ऽऽनऽनि	माऽऽऽ	ऽऽनका	ऽहे ऽको	करऽऽ	ऽतअप	
3		4		x		o		2		0		
रेगगमप	म-गम	रे-साप	रेगगमप									
नेपियाऽके	संऽऽऽ	ऽऽगमा	ऽऽनऽनि									
3		4										

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

तू जैसि सुघर नारि सब रस जानत ताते तू न करत ढंग

अंतरा

						नि		नि			
मं			प		नि	नि		नि		नि	
प	–	–	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
तू	ऽ	ऽ	जै	ऽ	सि	सु	घ	र	ना	ऽ	रि
x		0		2		0		3		4	
सां			सां			मग	रे	ग		नि़	
रें	सां	–	ध	नि	प	रे	ग	म	सा	रे	सा
स	ब	ऽ	र	ऽ	स	जा	ऽ	ऽ	ऽ	न	त
x		0		2		0		3		4	
नि		ग		ग	मं	मं			सां		
सा	–	–	मग	प	प	प	रें	सां	ध	नि	प
ता	ऽ	ऽ	तेऽ	ऽ	तू	न	ऽ	ऽ	क	ऽ	र
x		0		2		0		3		4	
मग	म	प	ग		नि़		सा				
रे	ग	म	प	सा	रे	सा	प				
ढं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग,	मा				
x		0		2		0					

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

प-	-सां	-सां	सांसां	सांसां	रेंसां	रेंसां	-ध	नि॒प	रेग	मसा	रेसा
तूऽ	ऽजै	ऽसि	सुघ	रना	ऽरि	सब	ऽर	ऽस	जाऽ	ऽऽ	नत
x		0		2		0		3		4	
सा-	-मग	पप	परें	सांध	नि॒प	रेग	मप	सारे	सा,प	रेग	गमप
ताऽ	ऽतेऽ	ऽतू	नऽ	ऽक	ऽर	ढंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ग,मा	माऽ	नऽनि
x		0		2		0		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

प	-	-	सां	-	सां	सां	सां	प--	सां-सां	सांसांसां	सारेंसां
तू	ऽ	ऽ	जै	ऽ	सि	सु	घ	तोऽऽ	जैऽसि	सुघर	नाऽरि
x		0		2		0		3		4	
रेंसां-	धनि॒प	रेगम	सारेसा	सा--	मगपप	परेंसां	धनि॒प	रेगम	पसारे	सापरे	गगमप
सबऽ	रऽस	जाऽऽ	ऽनत	ताऽऽ	तेऽऽतू	नऽऽ	कऽर	ढंऽऽ	ऽऽऽ	ग,माऽ	ऽनऽनि
x		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

प--सां -सांसांसां	सांसांरेंसां रेंसां-ध	<u>नि</u>परेग मसारेसा	सा--म गपपप	रेंसांध<u>नि</u> परेगम	पसारेसा रेगगमप
तूऽऽजै ऽसिसुघ	रनाऽरि सबऽर	ऽसजाऽ ऽऽऽत	ताऽऽते ऽऽतून	ऽऽकऽ ढंऽऽऽ	ऽऽग,मा ऽऽनऽनि
3	4	x	0	2	o

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छायानट - धमार (विलंबित)

स्थायी

अब मोसे खेलन लागे होरी, श्याम सुन्दर करत हो बरजोरी।

अंतरा

अबीर उड़ावत गारी गावत, मुख मल दई है गोरी।

स्थायी

सा म				प	रे		म	ग	ध		ग		
नि	ध	प	प	रे	ग	-	ग	म	प	-	म	ग	-
अ	ब	मो	सें	खे	ऽ	ऽ	ल	न	ला	ऽ	गे	ऽ	ऽ
3				x					2		0		
ग	म			नि़			म		ग म		नि़		
म	रे	सा	-	सा	-	-	ग	-	म	रे	रे	सा	-
हो	ऽ	री	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	सुं	द	र	ऽ
3				x					2		0		
सा	नि़			ग	रे		प	प	ग		नि़	नि़	
ध़	ध़नि़	प़	-	रे	ग	-	ग	म	प	सा	सा	रे	सा
क	रऽ	त	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	र	जो	ऽ	री
3				x					2		0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 6 मात्रा से

नि	ध	प	प	रे	ग	-	ग	म	निध	पप	रेग	-ग	मप
अ	ब	मो	से	खे	ऽ	ऽ	ल	न	अब	मोसे	खेऽ	ऽल	नला
3				x					2		o		
-म	ग-	मरे	सा-	सा-	-ग	-म	रेरे	सा-	ध़ध़नि	प़-	रेग	-ग	मप
ऽगे	ऽऽ	होऽ	रीऽ	श्याऽ	ऽम	ऽऽ	सुंद	रऽ	करऽ	तऽ	होऽ	ऽऽ	ऽच
3				x					2		o		
सासा	रेसा	निध	पप										
रजो	ऽरी	अब	मोसे										
3													

तिगुन 12 2/3 मात्रा से

नि	ध	12नि	धपप	रेग-	गमप	-मग	-मरें	सा-सा	--ग	-मरे	रेसा-	ध़ध़नि़प़	-रेग
अ	ब	12अ	बमोसे	खेऽऽ	लनला	ऽगेऽ	ऽहोऽ	रीऽश्या	ऽऽम	ऽऽसुं	दरऽ	करऽत	ऽहोऽ
3				x					2		o		
-गम	पसासा	रेसानि	धपप										
ऽऽऽ	बरजो	ऽरीअ	बमोसे										
3													

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 2 ½ मात्रा से

नि	ध	प	प	रे	ग	12निध	पपरेग	-गमप	-मग-	मरेसा-	सा--ग	-मरेरे	सा-ध़ध़नि
अ	ब	मो	से	खे	ऽ	12अब	मोसेखेऽ	ऽलनला	ऽगेऽऽ	होऽरीऽ	श्याऽऽम	ऽऽसुंद	रऽकरऽ
3				x					2		0		

प़-रेग -गमप सासारेसा निधपप
तऽहोऽ ऽऽऽच रजोऽरी अबमोसे
3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

अबीर उड़ावत गारी गावत मुख मल दई है गोरी

अंतरा

मं	मं		प			नि	नि			नि			
प	प	-	सां	-	-	सां	सां	-	-	रें	-	सां	-
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	उ	ड़ा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
					2		0			3			
नि़			ध		नि		नि			सां	नि		
सां	-	ध	सां	-	रें	-	सां	-	-	ध	धनि॒	प	-
गा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	वऽ	त	ऽ
					2		0			3			
मं	मं		प		नि		नि	नि		सां			
प	प	-	रें	-	सां	-	सां	सां	-	ध	नि॒	प	-
मु	ख	ऽ	म	ऽ	ल	ऽ	द	ई	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
					2		0			3			
मग	रे		प		ध		नि़	नि़					
रे	ग	-	ग	म	प	-	सा	रे	सा				
गो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री				
					2		0						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

पप	-सां	--	सांसां	--	रें-	सां-	सां-	धसां	-रें	-सां	--	धधनि	प-
अबी	ऽर	ऽऽ	उड़ा	ऽऽ	वऽ	तऽ	गाऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽगा	ऽऽ	ऽवऽ	तऽ
x					2		0			3			
पप	-रें	-सां	-सां	सां-	धनि	प-	रेग	-ग	मप	-सा	रेसा	निध	पप
मुख	ऽम	ऽल	ऽद	ईऽ	हेऽ	ऽऽ	गोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽरी	अब	मोसे
x					2		0			3			

तिगुन 9 1/3 मात्रा से

प	प	-	सां	-	-	सां	सां	-	1पप	-सां-	-सांसां	--रे	-सां-
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	उ	ड़ा	ऽ	1अबी	ऽरऽ	ऽउड़ा	ऽऽव	ऽतऽ
x					2		0			3			
सां-ध	सां-रें	-सां-	-धधनि	प-प	प-रें	-सां-	सांसां-	धनिप	-रेग	-गम	प-सा	रेसानि	धपप
गाऽऽ	रीऽऽ	ऽगाऽ	ऽऽवऽ	तऽमु	खऽम	ऽलऽ	दईऽ	हैऽऽ	ऽगोऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽरीअ	बमोसे
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

पप-सां	--सांसां	--रें-	सां-सां-	धसां-रें
अबीऽर	ऽऽउड़	ऽऽवऽ	तऽगाऽ	ऽरीऽऽ
x				
प-रेग	-गमप	-सारेसा	निधपप	
ऽऽगोऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽरी	अबमोसे	
3				

-सां--	धधनिप-
ऽगाऽऽ	ऽवऽतऽ
2	

पप-रें	-सां-सां	सां-धनि
मुखऽम	ऽलऽद	ईऽहेऽ
0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(3) हिण्डोल

यह राग कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें मध्यम तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ध संवादी ग है। इसके गाने का समय दिन के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर म तथा न्यास के स्वर सा-ग हैं। इसके आरोह-अवरोह में रे और प वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-औड़व है।

यह अत्यन्त प्राचीन राग है। कर्नाटकी संगीत में इसे सुनाद-विनोदिनी कहते हैं। राग-रागिणी वर्गीकरण में भरत और हनुमन् मत के अनुसार हिन्डोल को पुरुष राग कहा गया है। श्री राग की भाँति हिन्डोल राग के स्वरों को भी पलट दिया गया है। ग्रन्थों में हिन्डोल के स्वर वर्तमान मालकौंस के समान है। मालकौंस के ही स्वरों को कोमल के स्थान पर तीव्र स्वरों के प्रयोग से हिन्डोल राग हो जाता है।

जैसेः-	**मालकौंसः-**	सा	ग	म	ध	नि
	हिन्डोल :-	सा	ग	म	ध	नि

इसके आरोह में निषाद अति अल्प वक्र रूप में प्रयुक्त होता है। अनेक बन्दिशों में तो निषाद प्रयुक्त ही नहीं हुआ। इसे गाते-बजाते समय तानपूरे के प्रथम तार को मन्द्र निषाद में मिलाया जाता है। हिन्डोल राग में ध की अपेक्षा ग अधिक प्रयुक्त होता है इसलिए कुछ विद्वान् इसका वादी-संवादी ध-ग के स्थान पर ग-ध मानते हैं।

आरोह :- सा ग म ध नि ध सां।
अवरोह :- सां नि ध म ग सा मं ग सा।
पकड़ :- सा ग, म ध नि ध म ग, सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिण्डोल – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
सा		नि़		नि़	नि़	नि़	ध़		
ग	ग	सा	–	सा	ध़	ध़	सा	–	–
x		2			0		3		
नि़	म	ध	नि	ध		ध		म	
सा	ग	मं	ध	नि	ध	मं	ग	ग	सा
x		2			0		3		
नि़	नि़	सा			ध	नि	ध		ध
सा	सा	ग	–	ग	मं	ध	नि	ध	मं
x		2			0		3		
मं			मं		ध		ग		
नि	ध	मं	नि	ध	मं	ग	मं	ग	सा
x		2			0		3		

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
मं	मं	ध	मं	ध	मं		नि		नि
ग	ग	मं	ध	मं	सां	–	सां	–	सां
x		2			0		3		
नि	नि	सां			गं		नि		
सां	सां	गं	गं	मं	गं	गं	सां	–	सां
x		2			0		3		
नि							ध	नि	ध
सां	नि	ध	नि	ध	मं	ग	मं	ध	सां
x		2			0		3		
		ध	मं				ग		
नि	ध	मं	नि	ध	मं	ग	मं	ग	सा
x		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिण्डोल – तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

बरन बरन के फूल फूले,
सखियाँ मन भाये ल्याये री।

अंतरा

काहु के सीस मोतियन को सेरा, दूजी के गर सोहत मोहन माला।

स्थायी

ध		सां	ध			ध			मं		ग				
सां	नि	ध	सां	नि	ध	मं	–	–	ग	–	मं	ग	–	सा	–
ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	ऽ	फू	ऽ	ल	फू	ऽ	ले	ऽ
x				2				0				3			
ऩि	ऩि	सा		ध	ध	मं		ध		नि		ध	सां	मं	
सा	सा	ग	–	मं	मं	ध	–	सां	–	सां	ध	सां	मं	ध	–
स	खि	याँ	ऽ	म	न	भा	ऽ	ये	ऽ	ल्या	ऽ	ये	ऽ	री	ऽ
x				2				0				3			

अंतरा

मं	मं		ध		ध	नि	नि	ध	नि	नि		नि		नि	
ग	ग	ग	मं	–	मं	ध	ध	सां	सां	सां	–	सां	–	सा	–
का	हु	के	सी	ऽ	स	मो	ति	य	न	को	ऽ	से	ऽ	रा	ऽ
x				2				0				3			
नि	नि	सां	गं			नि	नि	नि			नि	नि		ध	मं
सां	सां	गं	मं	गं	सां	सां	सां	सां	–	सां	सां	सां	ध	सां	ध
दु	जी	के	ग	र	सो	ह	त	मो	ऽ	ह	न	मा	ऽ	ला	ऽ
x				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	साग	मंग	गमं	धमं	मंध	मंग	मंग	सा-
	x				2				o				3			
(2)	ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	गमं	गमं	धमं	गमं	धनि	धमं	गमं	गसा
	x				2				o				3			
(3)	ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	सांनि	धसा	निध	सांनि	धमं	गमं	ग-	सा-
	x				2				o				3			
(4)	ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	मंमं	गमं	ग-	सा-	धध	मंध	मंग	मंमं
	x				2				o				3			
	गमं	ग-	सा-	निनि	धनि	धमं	धध	मंध	मंग	मंमं	गमं	ग-	साग	मंध	निध	सां-
	x				2				o				3			

::अंतरे की तान::

(1)	का	हु	के	सी	ऽ	स	मो	ति	सांनि	धमं	गमं	गसा	गमं	धमं	निध	सां-
	x				2				o				3			
(2)	का	हु	के	सी	ऽ	स	मो	ति	सांगं	सांनि	धमं	गसा	गमं	धमं	निध	सां-
	x				2				o				3			
(3)	का	हु	के	सी	ऽ	स	मो	ति	सांसां	धसां	सांध	सांसां	धमं	गमं	निध	सां-
	x				2				o				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(4) शुद्ध कल्याण

यह राग कल्याण थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ग संवादी ध होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। इसके गाने-बजाने का समय रात्रि के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर रे-प तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। इस राग के आरोह में म और नि नहीं लगते, अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है। अतः इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है।

शुद्ध-कल्याण एक गम्भीर प्रकृति का पुरुष राग है। कर्नाटकी संगीत में इसे मोहन-कल्याणी कहते हैं। इसका स्वर विस्तार मन्द्र, मध्य सप्तकों में अधिक होता है। मध्यम और निषाद के प्रयोग को लेकर शुद्ध कल्याण में मतभेद है। कुछ लोग अवरोह में नि का प्रयोग तथा नि और म का प्रयोग स्पष्ट रूप से करते हैं तथा तीसरे वर्ग के लोग प-ग तथा सा-ध का मींड में म-नि का प्रयोग सूक्ष्म रूप से करते हैं। तान करते समय नि-म का प्रयोग अवरोह में सरल रूप से कर लिया जाता है। इसके निकटवर्ती राग भूपाली और देशकार हैं। इस राग की उत्पत्ति भूपाली व कल्याण के मिश्रण से हुई है। अतः इसे कुछ लोग भूप कल्याण भी कहते हैं। इसमें कल्याण अंग की ग ग प ध प सां, सांरें सां, नि ध प, प रे सा, प म ग ध प म ग तथा भूपाली अंग की ग रे सा ध़ सा रे ग प ग ध प ग स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे ग प ध सां

अवरोह :- सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ :- ग रे सा ऩि ध़ प़ सा, ग रे, प (रे) सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धकल्याण - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा			नि		ऩि		ऩि	ऩि	ध़		ग	रे			
ग	रे	सा	ध़	-	ध़	-	प़	ध़	सा	-	रे	ग	रे	सा	-
x				2				0				3			

रे	रे	सा		मं		ग				रे		मं			
सा	सा	ग	रे	ग	-	प	मं	ग	रे	ध	प	ग	रे	सा	-
x				2				0				3			

अंतरा

मं	मं	ग	प		प		ध	रें	गं	रें		ध			
ग	ग	प	ध	प	सां	-	सां	सां	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प
x				2				0				3			

ध			प					रे		रे	मंग	रे			
नि	ध	प	ध	प	मं	ग	रे	ग	रे	प	रे	ग	रे	सा	-
x				2				0				3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धकल्याण – एकताल (विलंबित)

स्थायी

बोलन लागी पपीहा री, ननदी मैं का भवन न भावे।

अंतरा

मोरे सैंयाँ कछु संदेसवा न भेजो,
अधिक सोच जिया अति ही अकुलावे।

स्थायी

ग	म	मं		मं	ग	नि	ऩि	सा	मं		ग
प	ग	गप	मंपधप	रे	–	सा	-सा	प	ग	–	प
बो	ऽ	ऽल	ऽऽऽन	ला	ऽ	गी	ऽप	पी	ऽ	ऽ	हा
3		4		x		0		2		0	
मंग		मं		प		मं	मं	ग			
रे	गमंप	प	मंप	ध	प	ग	रे	प	रे	सा	–
ऽ	ऽऽऽ	री	ऽऽ	न	न	दी	ऽ	मैं	ऽ	का	ऽ
3		4		x		0		2		0	
सा		ऩि		प़	मं		ग	मंग			
रे	सा	ध़	प़	प	ग	–	प	रे	–	सा	–
भ	व	न	न	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

(kan) मं	मं	ग	पनि	ध		ध	नि	नि	गं	रें	
प	ग	प	सांध	सां	-	सां	सां	सां	रें	गं	रें
मो	रे	सैं	ऽऽ	याँ	ऽ	क	छु	सं	दे	ऽ	स
3		4		x		0		2		0	
(kan)		ध		ग	मं	ग	मंग			नि़	
सां	निध	निध	प	प	ग	प	रे	-	सा	रे	सा
वा	नऽ	भेऽ	जो	अ	धि	क	सो	ऽ	च	जि	या
3		4		x		0		2		0	
(kan) सा	सारें			ग	मं	ग	मंग			सारे	रे
सां	गंगं	(सां)	-	प	ग	प	रे	-	सा	गग	सा
अ	तिऽ	ही	ऽ	अ	कु	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽऽ	वे
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) लाऽ सा रे सा - ध़ प़, प़ ध़ प़ सा बोलन
x 4

(2) लाऽ सा (रे) ग -, प - ग प (रे) सा बोलन
x 4

(3) लाऽ प ग, प ध प ग, ग रे सा बोलन
x 4

(4) लाऽ ग ग प ध प सां ध, सां, सां रें सां ध,
x

प ध प ग - प रे सा, सा ध़ प़ ग रे सा बोलन
4

::तान::

(1) लाऽ पमं गरे सा-
x

पध पमं गरे सा-

सांनि धप गरे सा-

सारें सांनि धप गरे सा-

सारे ग- रेग प- गप ध- पध सांध सारें सारें गरें

सांनि धप गरे सा- बोलन
4

(2) लाऽ पध परे गरे सा-
x

सांनि धप पध परे गरे सा-

सारें सांनि धप पध परे गरे सा-

सारें गरें सारें सांनि धप पध परे गरे सा-

गरें सांनि धप पध परे गरे बोलन
4

(3) लाऽ सानि़ ध़प़
x

सारे सानि़ ध़प़

सारे गरे सारे सानि़ ध़प़

नि़नि़ ध़प़ ध़ध़ प़नि़ नि़ध़ सानि ध़प़ ध़सा रेग रेसा रेग पमं गरे गध

पमं गरे सारे गप धप गरे गरे सा- बोलन
4

(4) लाऽ गग रेग गरे सा-
x

पप गप पग पप गरे सा-

सांसां धसां सांध सांसां धप गरे सा-

गंगं रेंगं गरें सांनि धप गरे सा- बोल बोल बोलन
3 4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धकल्याण – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

बाजो रे बाजो मंदलरा,
सुघर सुघर नर नारि मिल करही आनंद रहस रस गावे हुँ मंगलरा।

अंतरा

एक समधिन संग चौक पुरावो,
एक समधिन गर डारो हि हरवा, एक हँस हँस घिसलावो संदलरा।

स्थायी

सा
ग
बा

ग		नि̣		नि̣ध̣				ध̣	प̣		ग	रे	सा		
रे	सा	ध̣सा	रेसा	प̣	–	–	–	प̣	सा	–	रे	ग	रे	सा	–
ऽ	जो	ऽऽ	ऽरे	बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	मं	द	ल	रा	ऽ
3				x				2				0			
म̣ं	प̣		प̣	मं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	ग	मं	ग	
प̣	ध̣	प̣	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रे	प	ग	प	–
सु	घ	र	सु	घ	र	न	र	ना	री	मि	ल	क	र	ही	ऽ
3				x				2				0			
प	प		मं		प	मं	ग	मं	मं	रे	ग	रे			सा
ध	ध	प	प	प	ग	ग	प	ग	रे	सा	रे	ग	रे	सा	ग
आ	नं	द	र	ह	स	र	स	गा	वे	हुँ	मं	ग	ल	रा,	बा
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

								नि							
मं				ध	ध		ध	नि				नि			
प	प	प	मंग	प	प	सां	निध	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	-
ए	क	स	मऽ	धि	न	सं	गऽ	चौ	ऽ	क	पु	रा	ऽ	वो	ऽ
3				x				2				0			
नि				ध		नि	नि	नि	गं	रें		नि	नि		
सां	सां	सां	निध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	निध
ए	क	स	मऽ	धि	न	ग	र	डा	ऽ	रो	हि	ह	र	वा	ऽऽ
3				x				2				0			
मं		म	मं	ग		मं	मं				नि	मं	सा		सा
प	ग	ग	ग	प	प	ध	प	पपधनि	सांरेंसांनि	सां	धप	ग	रे	सा	ग
ए	क	हँ	स	हँ	स	धि	स	लाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	वोसं	द	ल	रा,	बा
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	रे	सा	ध़सा	रेसा	प़	-	सा	रे	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा	ग
	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	बा	ऽ	जो (2)	ऽ	रे	ऽ	बा (0)	ऽ	जो	बा
(2)	रे	सा	ध़सा	रेसा	प़	-	प	ग	ग	ग	ग	प	रे	-	सा	ग
	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	बा	ऽ	ऽ (2)	जो	ऽ	रे	बा (0)	ऽ	जो	बा
(3)	रे	सा	ध़सा	रेसा	प़	-	सां	प	ग	ग	-	प	रे	-	सा	ग
	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	बा	ऽ	ऽ (2)	जो	ऽ	रे	बा (0)	ऽ	जो	बा
(4)	रे	सा	ध़सा	रेसा	प़	-	सांरें	गंरें	सांरें	सांनि	धप	पध	पमं	गरे	सा-	ग
	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ (2)	जोऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ (0)	ऽऽ	ऽऽ	बा

::स्थायी की तान::

(1)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	सारे (2)	गप	धसां	निध	पमं (0)	गरे	सा-	बाऽ
(2)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	पमं (2)	गरे	सा-	पध	पम (0)	गरे	सा-	बाऽ
(3)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	सांरें (2)	सांनि	धप	पध	पमं (0)	गरे	सा-	बाऽ
(4)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	सांरें (2)	गंरें	सांरें	सांनि	धप (0)	गरे	सा-	बाऽ
(5)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	प़मं (2)	गरे	सा-	पध	पमं (0)	गरे	सा-	सांनि
	धप (3)	पध	पमं	गरे	सा- (x)	सांरें	सानि	धप	पध (2)	पम	गरे	सा-	बाऽ (0)	जोबा	ऽजो	बाऽ
(6)	ऽ (3)	जो	ऽऽ	ऽरे	बा (x)	ऽ	ऽ	ऽ	सारे (2)	गरे	गप	गप	धप (0)	मंग	रेग	पग
	पध (3)	पध	सांनि	धप	गप (x)	धप	धसां	धसां	रेंसां (2)	निध	पध	सांध	सांरें (0)	सांरें	गंरें	सांनि
	धप (3)	गरे	सा-	बा	ऽ (x)	जो	ऽ	रे	ऽ (2)	बा	ऽ	जो	ऽ (0)	रे	ऽ	बा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(5) देशकार

यह बिलावल थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं इसका वादी ध और संवादी ग है। इसका गायन-वादन समय दिन के प्रथम प्रहर में 7:00 से 10:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर प तथा न्यास के स्वर सा-प-ध हैं।

इसकी जाति औड़व-औड़व है क्योंकि इसके आरोह अवरोह में म-नि वर्जित हैं। उत्तरांगवादी होने के कारण देशकार राग का विस्तार मध्य और तार सप्तक में अधिक होता है। यह द्रुत गति में अधिक रोचक लगता है इसलिए इसकी प्रकृति चंचल है। इसका निकटवर्ती राग भूपाली है। देशकार और भूपाली समान स्वरों में गाए-बजाए जाते हैं। देशकार में प ध ग प करके प पर न्यास किया जाता है जबकि भूपाली राग में प ग ध प ग करके ग पर न्यास होता है। देंशकार में बिलावल अंग की प ध ग, सां ध प, ध ग स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे ग प ध सां।
अवरोह :- सां ध प गपधप ग रे सा।
पकड़ :- सा ध प ध ग प, सांधप, पधगप, गपधपग,
पधपगरेसा रेध़सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

देशकार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा			ध़	सा			प	ग	प	ध	प	ध	प		ग
ग	रे	सा	सा	ध	-	ध	प	प	ग	प़	ध	प	ध	प	प
3				x				2				0			

ग	प	ग	सां	ध		सां		प	ध	प		प			
प	ग	प	ध	सां	-	ध	प	ग	प	ध	प	ग	रे	सा	-
3				x				2				0			

अंतरा

ग	प	ग	सां	ध			सां	ध		ध	सां		सां		
प	ग	प	ध	सां	-	रें	सां	सां	ध	सां	रें	सां	रें	सां	ध
3				x				2				0			

ध			सां		ध	सां		प	ग	प		प			
गं	रें	सां	रें	सां	सां	ध	प	ग	प	ध	प	ग	रे	सा	-
3				x				2				0			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशकार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

तुम पर वारी कृष्ण मुरारी, इतनी हमारी सुनो वनवारी।

अंतरा

लेकर चीर कदम पर बैठे, हम जल मांझ उधारी।।

स्थायी

																ध
																सां
																तु
सां	ध		ध	सांध				प	ग	प		प सा				
ध	सां	-	सां	प	-	-	प	ग	प	ध	प	ग	-	रेसा	रे	
म	प	ऽ	र	वा	ऽ	ऽ	रि	कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	ऽरि	इ	
3				x				2				0				
सा	सा		ध़	ध़			सा	प	ग	प					ध	
ध़	ध़	-	सा	सा	-	सा	प	ग	प	ध	प	ग	-	रेसा	सां	
त	नी	ऽ	ह	मा	ऽ	रि	सु	नो	ऽ	ब	न	वा	ऽ	ऽरि,	तु	
3				x				2				0				

अंतरा

																प
																ते
सां	ध		ध	ध			ध	सां	सां	ध	सां	रें	सां		ध	
ध	सां	-	सां	सां	-	सां	सां	ध	ध	सां	रें	सां	रें	सांध	गं	
ऽ	क	ऽ	र	ची	ऽ	र	क	द	म	प	र	बै	ऽ	ठऽ	ह	
3				x				2				0				
			सां			सां	ध								सा	
रें	सां	-	रें	सां	-	ध	प	पध	सांसां	धप	गप	धप	गरे	सा	सां	
म	ज	ऽ	ल	माँ	ऽ	झ	उ	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽ,	तु	
3				x				2				0				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	सारे गप धप गप	धप गरे सा- त
3	x	2	o
(2) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	गप धसां धप गप	धप गरे सा- त
3	x	2	o
(3) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	धसां रेंसां धप गप	धप गरे सा- त
3	x	2	o
(4) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	गरें सांसां धप गप	धप गरे सा- त
3	x	2	o
(5) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	गप गप धप गप	धसां धप गप धसां
3	x	2	o
रेंसां धप गप धसां	रेंगं रेंसां धप गप	धप गरे सा- त	म तु म त
3	x	2	o
(6) म प ऽ र	वा ऽ ऽ रि	सारे गप ध- --	पध गप ध- --
3	x	2	o
पध धसां धप गप	ध- -- पध सारें	गरें सांसां धप गप	धप गरे सा- त
3	x	2	o

::अन्तरे की तान::

(1) ऽ क ऽ र	ची ऽ र क	सांसां धप गरे सा-	सारे गप धसां ले
3	x	2	o
(2) ऽ क ऽ र	ची ऽ र क	सारें सांसां धप गरे	सारे गप धसां ले
3	x	2	o
(3) ऽ क ऽ र	ची ऽ र क	सारें गरें सारें सांध	सांसां धसां धप धध
3	x	2	o
पध पग पप गप	गरे सा- सारे गप	धसां सारे गप धसां	सारे गप धसां ले
3	x	2	o

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(6) गौड़मल्हार

यह राग खमाज थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी म संवादी तार सा है। इसका गायन-वादन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसका प्राण स्वर म तथा न्यास के स्वर सा म प हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है।

गौड़-मल्हार में गौड़ और शुद्ध मल्हार इन दो रागों का मिश्रण है। काफ़ी थाट के गौड़-मल्हार का उल्लेख भी प्राप्त होता है पर यह प्रचार में बहुत कम है। मल्हार का प्रकार होने के कारण यह वर्षा ऋतु का राग है। इसकी अधिकतर बंदिशों में वर्षा ऋतु से सम्बन्धित विवरण मिलता है। गौड़-मल्हार में एक मत के अनुसार अतिकोमल निषाद लगता है (ध्व० सं० पृ०-260)। गौड़-मल्हार के आलाप के आरम्भ में रे ग म ग म तथा समाप्त करते हुए रे ग रे म ग रे सा या ग रे ग रे सा यह स्वर समुदाय लेने का प्रचलन है। इसमें गौड़ अंग की रे ग रे म ग रे सा तथा मल्हार अंग की सां ध नि प म, म रे रे प स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा रे ग रे म ग रे सा, म रे प, म प ध सां
अवरोह :- सां ध <u>नि</u> प म प म ग म रे सा।
पकड़ :- म रे प -, म प ध सां, धपम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़मल्हार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ग		म	रे		म			ग		म		प			ग
रे	ग	रे	म	ग	रे	सा	सा	रे	ग	रे	प	म	प	म	ग
0				3				x				2			
म	म	रे	प	म	म	ध		सां	ध	नि		प			ग
रे	रे	प	म	प	प	म	प	ध	सां	ध	प	म	प	म	ग
0				3				x				2			

अन्तरा

प			म	नि	नि	सां	सां	नि		नि		नि	नि		
म	-	प	प	ध	ध	नि	नि	सां	-	सां	-	सां	रें	सां	-
0				3				x				2			
नि		सां	नि	ध		नि		नि	नि	नि		सां			म
सां	नि	ध	ध	सां	-	सां	-	सां	रें	सां	नि	ध	नि	प	प
0				3				x				2			
म	म	रे	प	म		ध		नि	ध	नि		प	म	ग	
रे	रे	प	म	प	प	म	प	ध	सां	ध	प	म	प	म	ग
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़मल्हार - त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

काहे हो, हमसों पीतम आँखें फेर डारी री।

अंतरा

का मोंसे चूक परी, सुधार लेहो, सदारंग तुम पर वारी।

स्थायी

नि़ गम	म म मरे	ग ग ग	ग ग
सा रेगम ,रेग	म गमरेप म ,गम	म प म ग	ग पपमगरेग सारेगम म
ऽ का हेऽऽ ,ऽऽ	हो ऽऽऽऽ ऽ ,ऽऽ	ह म सों ऽ	पी ऽऽऽऽऽऽ तऽऽऽ म
3	x	2	0
ग ध ध	निसां ध ध	ग ग ग	ग ग गप ग
म पध नि प	धनिसांसांनिध निध नि प	म ग म रे	रे गम धधपमप ग
आँ खेंऽ ऽ ऽ	फेऽऽऽऽऽऽ ऽऽ ऽ र	डा ऽ ऽ ऽ	री ऽऽ ऽऽऽऽऽ री
3	x	2	0
रे रे गम			
गम ग सा रेगम			
ऽऽ ऽ का हेऽऽ			
3			

अंतरा

म प ध	नि नि	नि नि नि	नि
प निनि	सां - निसां सां	सां निसां रें सां	सां (सां) ध निप
ऽ ऽ का मोसें	चू ऽ ऽऽ क	प रीऽ ऽ सु	धा ऽ ऽ ऽर
3	x	2	0
प	नि सां	ग ग म	ग मप
म निध सांसांनिध निप	मपनिसां रेंसां सां(सां) ध,निप	म ग म रे	रे ग धध (म)
ले ऽऽ होऽऽऽ ऽऽ	सदारंग तुम पऽ ऽ,रऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ री
3	x	2	0
रे रे			
ग ग सा रेगम			
ऽ ऽ का हेऽऽ			
3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) होऽ सा - रे ग म, म रे प म ग रे ग रे म ग - रे सा काहे
x

(2) होऽ म रे प, मपध, नि प, म पपमगरेग, सा - रे ग म काहे
x

(3) होऽ म प ध नि प, रे प, म म प प ध ध (नि) प म ग म रे सा काहे
x

::तान::

(1) होऽऽऽ सासा रेग मप मग रेग रेम गरे सा-
x

सासा रेग मप धप मग रेग रेम गरे सा-

सासा रेग मप धनि पप मप मग रेग रेम गरे सा-

सासा रेग मप धनि सांसां धप मप मग रेग रेम गरे सा- काहे ऽऽऽ

(2) होऽऽऽ मग रेसा ऩिसा रेग म- --
x

मरे पप मप मग मग रेसा ऩिसा रेग म- --

मरे पप धसां धप मप मग मग रेसा ऩिसा रेग म- --

रेग रेम गरे सा- रेग रेम गरे सा- रेग रेम गरे सा- काहे ऽऽऽ

(3) होऽऽऽ रेग रेम गरे सा-
x

रेप मप मग रेग रेम गरे सा-

रेप मप धनि पप मग रेग रेम गरे सा-

रेप मप धनि सांसां धप मग रेग रेम गरे सा-

सांरें सांसां धनि पप मप मग रेग रेम गरे सा- काहेऽऽऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौड़मल्हार - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

गरजत बरसत भीजत आइलो तुमरे मिलन को,
अपने प्रेम पियरवा लो गरवा लगाय।

अंतरा

जो लौं हम तुम एक ढिंग रहिलो, तो लौं रहिलो हियरा समान,
सावन आइलो, लाल चुनरिया देहो रंगाय।

स्थायी

ग		रे	ग	म	म	ध	म	ध		नि		ग	ध	म	
म	रे	म	म	प	प	म	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	ग
ग	र	ज	त	ब	र	स	त	भीऽ	ऽ	ज	त	आ	इ	लो	ऽ
0				3				x				2			
ग	म			प	म	ग		ग		रे		ग			म
म	<u>नि</u>	ध	प	म	प	म	ग	म	रे	ग	-	म	(म)	-	रे
तु	म	रे	मि	ल	न	को	ऽ	अ	प	ने	ऽ	प्रे	ऽ	ऽ	म्पी
0				3				x				2			
रे	नि़							ग	म		ध	ग			
सा	रे	सा	-	-	-	-	मग	म	<u>नि</u>	ध	प	म	(म)	-	-रे
य	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लोऽ	ग	र	वा	ल	गा	ऽ	ऽ	ऽय
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म		म		प		ध	नि	नि		नि	नि	नि	नि		
प	-	प	-	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	-
जो	ऽ	लौं	ऽ	ह	म	तु	म	ए	क	ढिं	ग	र	हि	लो	ऽ
x				2				0				3			

सां	नि	सां	नि	ध		नि		नि	नि		नि				
ध	ध	ध	ध	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां	(सां)	ध	नि	प
तो	ऽ	लौं	ऽ	र	हि	लो	ऽ	हि	य	रा	स	मा	ऽ	ऽ	न
x				2				0				3			

रे		रे	प	म		प		ध		नि	ध	ग	ग		
म	रे	प	म	प	प	निम	प	धनि	सां	ध	प	म	प	म	रे
सा	ऽ	व	न	आ	ई	लोऽ	ऽ	लाऽ	ऽ	ल	चु	न	रि	या	ऽ
x				2				0				3			

ग	म		ध	ग				ग		रे	म
म	नि	ध	प	म	(म)	-	रे	म	रे	म	म
दे	ऽ	हो	रं	गा	ऽ	ऽ	य	ग	र	ज	त
x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ग र ज त	ब र स त	सासा रेग मप मग	रेग रेम गरे सा-
	0	3	x	2
(2)	ग र ज त	ब र स त	मरे पप मप मग	रेग रेम गरे सा-
	0	3	x	2
(3)	ग र ज त	ब र स त	मरे पप धप मग	रेग रेम गरे सा-
	0	3	x	2
(4)	ग र ज त	ब र स त	भीऽ ऽ ज त	आ इ लो ऽ
	0	3	x	2
	मम रेप पम धध	पसां सांध रेरें सांसां	धनि पप मप मग	रेग रेम गरे सा-
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	जो ऽ लौं ऽ	ह म तु म	सांसां धप मप मग	मरे पप मप धसां
	x	2	0	3
(2)	जो ऽ लौं ऽ	ह म तु म	सांरें सांध निप मग	मरे पप मप धसां
	x	2	0	3
(3)	जो ऽ लौं ऽ	ह म तु म	निसा रेग म- मरे	प- मप धनि सां-
	x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौड़मल्हार – धमार (विलम्बित)

स्थायी

उमड़ घुमड़ घन ज्यों रंग बरसत परत केसर की पिचकारी।

स्थायी

			रे प प
			उ म ड
प ध म प	ध सां - ध प	म म	ग म प
घु ऽ म ड	घ न ऽ ज्यों ऽ	रं ग	ब र ऽ
3	x	2	o
म ग - ग	म रे - सा -	सा सा	म प निध
स त ऽ प	र त ऽ के ऽ	स र	की ऽ ऽऽ
3	x	2	o
सांनि रें सां सां	सां - ग म प	म -	रे प प
ऽऽ ऽ पि च	का ऽ ऽ ऽ ऽ	री ऽ	उ म ड़
3	x	2	o

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 3½ मात्रा से

											रे	प	प
											0 उ	म	ड़
प	ध	म	प	ध	सां	-	1रे	पप	पध	मप	धसां	-ध	पम
घु	ऽ	म	ड़	घ	न	ऽ	1उ	मड़	घुऽ	मड़	घन	ऽज्यों	ऽरं
3				x					2		0		
मग	मप	मग	-ग	मरे	-सा	-सा	साम	पनि॒ध	सांनिरें	सांसां	सां-	गम	पम
गब	रऽ	सत	ऽप	रत	ऽके	ऽस	रकी	ऽऽऽ	ऽऽऽ	पिच	काऽ	ऽऽ	ऽरी
3				x					2		0		
-रे	पप	पध	मप										
ऽउ	मड़	घुऽ	मड़										
3													

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

तिगुन 11 ²/₃ से

												रे	प	प
												उ o	म	ड
प	12रे	पपप	धमप	धसां-	धपम	मगम	पमग	-गम	रे-सा	-सासा	मपनिध	सांनिरेंसां	सांसां-	
घु	12उ	मड़घु	ऽमड़	घनऽ	ज्योंऽरं	गबर	ऽसत	ऽपर	तऽके	ऽसर	कीऽऽऽ	ऽऽऽपि	चकाऽ	
3				x					2		o			
गमप	म-रे	पपप	धमप											
ऽऽऽ	रोऽउ	मड़घु	ऽमड़											
3														

चौगुन 1¾ मात्रा से

											रे	म	प
											उ o	म	ड़
प	ध	म	प	ध 123रे	मपपध	मपधसां	-धपम	मगमप	मग-ग	मरे-सा	-सासाम	पनिधसांनिरें
घु	ऽ	म	ड़	घ 123उ	मड़घुऽ	मड़घन	ऽज्योंऽरं	गबरऽ	सतऽप	रतऽके	ऽसरकी	ऽऽऽऽऽऽ
3				x				2		o		
सांसांसां-	गमपम	-रेपप	पधमप									
पिचकाऽ	ऽऽऽरो	ऽउमड़	घुऽमड़									
3												

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

अबीर गुलाल के बादर छाये मानो कामिनी दामिनी चमकत बदन उघारी।

अंतरा

प प - ध ध	सां -	सां सां -	सां रें सां सां
अ बी ऽ र गु	ला ऽ	ल के ऽ	बा ऽ द र
x	2	0	3
ध ध ध नि सां	- सां	सां रें सा	ध - नि प
छा ऽ ऽ ए ऽ	मा नो	का ऽ ऽ	मि ऽ ऽ नि
x	2	0	3
म - रे प प	ध मप	ध सां -	ध प म प
दा ऽ ऽ मिं नी	च मऽ	क त ऽ	ब द न उ
x	2	0	3
ध सां ग म प	म -	रे प प	
घा ऽ ऽ ऽ ऽ	रो ऽ	उ म ड़	
x	2		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

पप -ध धसां -सां सां-	सांरें सांसां	धध धनि सां-	सांसां रेंसां ध- निप
अबी ऽर गुला ऽल केऽ	बाऽ दर	छाऽ ऽए ऽमा	नोका ऽऽ मिऽ ऽन
x	2	0	3
म- रेप पध मपध सां-	धप मप	धसां गम पम	-रे पप पध मप
दाऽ ऽमि निच मऽक तऽ	बद नउ	घाऽ ऽऽ ऽरी	ऽउ मड़ घुऽ मड़
x	2	0	3

तिगुन 9 1/3 मात्रा से

प प - ध ध	सां -	सां सां 1पप	-धध सां-सां सां-सां रेंसांसां
अ बी ऽ र गु	ला ऽ	ल के 1अबी	ऽरगु लाऽल केऽबा ऽदर
x	2	0	3
धधध निसां- सांसांरें सांध- निपम	-रेप पधमप	धसां- धपम पधसां	गमप म-रे पपप धमप
छाऽऽ एऽमा नोकाऽ ऽमिऽ ऽनिदा	ऽऽमि निचमऽ	कतऽ बदन उघाऽ	ऽऽऽ रीऽउ मड़घु ऽमड़
x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

पप-ध	धसां-सां	सां-सांरें	सांसांधध	धनिसां-	सांसांरेंसां	ध-<u>नि</u>प	म-रेप	पधमपध	सां-धप
अबीऽर	गुलाऽल	केऽबाऽ	दरछाऽ	ऽएऽमा	नोकाऽऽ	मिऽऽन	दाऽऽमि	निचमऽक	तऽबद
x					2		0		
मपधसां	गमपम	-रेपप	पधमप						
नउघाऽ	ऽऽऽरी	ऽउमड़	घुऽमड़						
3									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(7) रामकली

यह राग भैरव थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे-ध कोमल, दोनों मध्यम, दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग के वादी संवादी स्वरों के विषय में तीन मत हैं :- प रे, ध रे, प सां।

हमारे मतानुसार इसका वादी संवादी पं सां ही अधिक उपयुक्त है। यह संधिप्रकाश राग है। इसका गायन, वादन सुबह 5:00 से 7:00 बजे तक है। अतः यह उत्तरांगवादी राग है। इसके प्राण स्वर रे-ध तथा न्यास के स्वर सा-प हैं। इसकी जाति के विषय में भी मतभेद है। कुछ विद्वान् इसे सम्पूर्ण जाति का मानते हैं, पर आरोह में रे वर्जित तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति षाड़व-वक्र-सम्पूर्ण होनी चाहिए। रामकली एक लोकप्रिय राग है। रामकली का मध्य और तार सप्तक में अधिक स्वर विस्तार होता है, इसलिए इसकी प्रकृति भैरव की अपेक्षा चंचल है। भैरव राग में म प ध नि ध प इस स्वर समूह के प्रयोग से इस राग की उत्पत्ति हुई है। पंचम का अधिक, मध्यम का कम, आन्दोलन रहित रे-ध और मध्य गति के प्रयोग से रामकली राग भैरव से भिन्न हो जाता है।

आरोह :- सा ग म प ध नि सां

अवरोह :- सां नि ध प म प ध नि ध प ग म रे सा।

पकड़ :- ध प म प ध नि ध प ग म रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामकली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

म		म	नि̱		प	प	मं	प			प		म	प	ग
ग	म	नि̱	ध̱	प	ध̱	मं	प	ध̱	प	–	म	–	प	ग	म
0				3				x				2			

	म	प	ग	म	प	म	प	ग	प	ग	म	ग	म	ग	
–	ग	म	रे̱	ग	म	प	ग	म	प	म	ग	म	ग	रे̱	सा
0				3				x				2			

सा	नि़	म	ग	म	प		ग	म		नि	ध̱	नि̱		प	ग
नि़	सा	ग	म	प	ग	–	म	सां	नि	ध̱	नि̱	ध̱	प	ग	म
0				3				x				2			

अंतरा

म	म	प	प	ध̱		सां	नि	रे	गं	मं	गं	गं	ग		
प	प	ध̱	ध̱	सां	–	नि	सां	सां	रे̱	गं	मं	रें̱	रें̱	सां	–
0				3				x				2			

नि	सां			नि	ध̱		मं	प	प	म	प	ग	म	ग	
सां	रें̱	सां	नि	ध̱	नि̱	ध̱	प	ग	म	प	ग	म	ग	रे̱	सा
0				3				x				2			

सा	नि़	म	प	म	प		ग	म		नि	ध̱	नि̱		प	ग
नि़	सा	ग	म	प	ग	–	म	सां	नि	ध̱	नि̱	ध̱	प	ग	म
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामकली - एकताल (विलंबित)

स्थायी

ले साहेब को नाम, पूरन होत तेरे काम।

अंतरा

पाँच पहर जंजाल तीन तू सोया, हररंग अजहूँ सुमिर सीता राम।

स्थायी

											नि
											सा
											ले
सा	म	म	प	नि			नि				म
म	गम	प	मंप	ध	-	-	ध	-	प	-	प
सा	ऽऽ	हे	ऽब	को	ऽ	ऽ	ना	ऽ	म	ऽ	पू
3		4		x		0		2		0	
ग	ग	म	ग	म		प	ग	मग			सा
मग	मरे	गम	प	प	म	ग.	मग	रे	-	सा	निसा
रऽ	नऽ	होऽ	त	ते	रे	ऽ	काऽ	ऽ	ऽ	म,	लेऽ
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म	प	नि	सां	नि	नि		नि	सां	नि	नि	
प	मप	ध	-नि	सां	सां	–	सां	नि	सां	सां	निसां
पाँ	ऽऽ	च	ऽप	ह	र	ऽ	जं	जा	ऽ	ल	ऽऽ
3		4		x		0		2		0	
नि		ध	नि	सां			सां	नि	नि		प
ध	–	नि	सां	रें	–	सां	नि	सां	ध	–	ध
ती	ऽ	न	तू	सो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ह
3		4		x		0		2		0	
निध	नि		प	मं	मं	प	नि		ध	नि	नि
नि	ध	प	मंप	प	प	मंप	ध	–	नि	सां	सां
र	रं	ग	ऽऽ	अ	ज	ऽऽ	हूँ	ऽ	सु	मि	र
3		4		x		0		2		0	
	सां			सां	नि	नि	ध	नि			ग
–	रें	–	सां	नि	सां	ध	नि	ध	–	प	प
ऽ	सो	ऽ	ता	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म,	ले
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) कोऽ सारे -सा गम रे- सा- ले साहेब
x 4

(2) कोऽ साग मप, मंप, गम रेसा ले साहेब
x 4

(3) कोऽ प- मंप धनि धप, गम पग मरे सा- ले साहेब
x 4

(4) कोऽ पध निसां, रेंनि सांध निध प, धमं पग
x
मनि धप, मंप गम रेसा ले साहेब
4

::तान::

(1) कोऽ पप मग रेसा निसा गम प- मंप धनि धप
x
मंप गम प- गम पध निसां धनि धप मंप गम प-
गम पध निसां रेंसां निसां धनि धप मंप मग रेसा निसा ले साहेब
4

(2) कोऽ गम पम गरे सा- मंप धनि धप मंप गम पम गरे सा-
x
धनि सांरें सांनि धप मंप धनि धप मंप गम पम गम गरे सा-
पम गरे सा- गम पम गरे ले साहेब
4

(3) कोऽ पध पध मंप मंप धनि धप धप मंप सारें सारें निसां निसां धनि
x
धप धप मंप गम पम गरे सा- पध मंप धनि धप सांरें निसां
धनि धप मंप गम रेसा -- ले साहेब
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामकली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

नित उठ सुमिरन करिये,
धरिये ध्यान प्रभु के चरन कमल को, भवसागर को उतरिए तरिए।

अंतरा

मालव गौड़ सुठाठ बिचरिए, पंचम अंशरु मुक्त म करिए,
सुध मुद्रा सुध वाणी सुचतुर, राम नाम हरदम हुँ उचरिए।

स्थायी

म	ग	म		म	प	म		प		प		म		ग	
ग	म	नि	ध	प	प	मं	प	ध	प	म	–	ध	प	म	–
नि	त	उ	ठ	सु	मि	र	न	क	रि	ये	ऽ	ध	रि	ये	ऽ
0				3				x				2			
प		ग	म	ग		रे		ग		प	म	मग	ग		
ग	–	म	ग	रे	–	ग	–	प	मग	म	ग	रे	रे	सा	–
ध्या	ऽ	न	प्र	भु	ऽ	के	ऽ	च	रऽ	न	क	म	ल	को	ऽ
0				3				x				2			
सा	ऩि	म	प	ध	नि	सां	नि	सां		नि	ध	नि		ग	
ऩि	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	रे	सां	ध	नि	ध	प	म	ग
भ	व	सा	ऽ	ग	र	को	उ	त	रि	ए	ऽ	त	रि	ए	ऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

म		म	म	नि		सां	सां	नि		नि	नि	सां	नि	नि	
प	–	प	प	ध	–	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	सां	–
मा	ऽ	ल	व	गौ	ऽ	ड़	सु	ठा	ऽ	ठ	बि	च	रि	ए	ऽ
0				3				x				2			
सां		मं	गं	गं			नि			रें	नि	नि		प	
रे	–	गं	मं	रें	–	सां	सां	निसां	रें	सां	सां	ध	प	म	–
पं	ऽ	च	म	अं	ऽ	श	रु	मुऽ	ऽ	क्त	म	क	रि	ए	ऽ
0				3				x				2			
नि	सां	नि		नि	ध	नि		ग	म		म	ग	ग		नि़
सां	नि	सां	–	ध	नि	ध	प	म	ग	(म)	ग	म	रे	सा	सा
सु	ध	मु	ऽ	द्रा	ऽ	सु	ध	बा	ऽ	नी	ऽ	सु	च	तु	र
0				3				x				2			
सा	नि़	म	प	ध	नि	सां नि		सां		नि	ध	नि		ग	
नि़	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	सां	ध	नि	ध	प	म	ग
रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	ह	र	द	म	हुँ	उ	च	रि	ए	ऽ
0				3				x				2			

रामकली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सगरी रैन के जागे पागे,
सुघर चतुर सुरजनवा बलमा, भोर ही मेरे आये।

अंतरा

बिन गुन माल अधर पर अंजन, जावक तिलक लगाये,
हररंग कवन सती बड़ भागिन, तन मन धन न्योछावर कराये।

स्थायी

म	म	नि	मं		प		मं							ग	
गम	नि	ध	प	–	ध	पम	प	(प)	–	म	–	(प)	–	म	ग
सऽ	ग	रि	रै	ऽ	न	केऽ	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	पा	ऽ	गे	ऽ
0				3				x				2			
ग		ग	म	ग	ग	प	म	ग	म	ग		ग	ग	नि़	
म	ग	म	ग	रे	रे	म	प	म	ग	म	ग	रे	रे	सा	–
सु	घ	र	च	तु	र	सु	र	ज	न	वा	ऽ	ब	ल	मा	ऽ
0				3				x				2			
सा	नि़	म	ग	म		म		ध							ग
नि़	सा	ग	म	प	–	प	–	पध	निसां	सारे	सांनि	धनि	धप	मग	म
भो	ऽ	र	हि	मे	ऽ	रे	ऽ	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये
0				3				x				2			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म	म	म	म	नि		ध	सां	नि		नि	नि	सां	नि	नि	नि
प	प	प	प	ध	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
बि	न	गु	न	मा	ऽ	ल	अ	ध	र	प	र	अं	ऽ	ज	न
0				3				x				2			
सां		मं	गं	गं	सां		नि	ध							
रें	–	गं	मं	रे	रे	सां	सां	पध	निसां	सांरें	सांनि	धनि	धप	मग	म
जा	ऽ	व	क	ति	ल	क	ल	गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये
0				3				x				2			
नि		नि		नि	ध		म	ग	म	ग		मग			नि़
सां	नि	सां	नि	ध	नि	ध	प	म	ग	प	मग	रे	–	सा	सा
ह	र	रं	ग	कु	व	न	स	ती	ऽ	ब	ड़ऽ	भा	ऽ	गि	न
0				3				x				2			
सा	नि़	म	ग	म	म	म		ध							ग
नि	सा	ग	म	प	प	प	–	पध	निसां	सांरें	सांनि	धनि	धप	मग	म
त	न	म	न	ध	न	नौ	ऽ	छाऽ	ऽऽ	वऽ	रऽ	कुऽ	राऽ	ऽऽ	ए
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

::स्थायी की तान::

(1)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	साग मप धनि सांनि	धप मंप मग रेसा
	0	3	x	2
(2)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	मंप धनि धप मंप	गम पम गरे सा-
	0	3	x	2
(3)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	सांनि धप मंप धनि	धप मंप मग रेसा
	0	3	x	2
(4)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	धनि सांरे सांनि धप	मंप धनि धप मंप
	0	3	x	2
(5)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	सांरें सांनि धप मंप	धनि धप मग रेसा
	0	3	x	2
(6)	सऽ ग रि र	ऽ न केऽ ऽ	सांरें सांरें निसां निसां	धनि धनि धसां निसां
	0	3	x	2
	धनि सारें सांनि धप	मंप धनि धप मंप	मग रेसा निसा गम	पग मप गम प-
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	बि न गु न	मा ऽ ल अ	धप मंप धनि धप	मंप गम पध निसां
	0	3	x	2
(2)	बि न गु न	मा ऽ ल अ	सांनि धप मंप मग	रेसा गम पध निसां
	0	3	x	2
(3)	बि न गु न	मा ऽ ल अ	ध र प र	अं ऽ ज न
	0	3	x	2
	सांरु सांनि धप मंप	धनि धप मंप मग	मग रेसा निसा गम	पध निसां धनि सां-
	0	3	x	2

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(8) बसन्त

यह राग पूर्वी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे-ध कोमल, म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। कभी-कभी ललित अंग से शुद्ध म का प्रयोग भी बसन्त राग में किया जाता है। इसका वादी तार सा और संवादी प है। इसके गाने का समय रात्रि के अन्तिम प्रहर में 4:00 से 5:00 बजे तक है। अतः बसन्त उत्तरांगवादी तथा सन्धिप्रकाश राग है। इसका प्राण स्वर तार सा तथा न्यास के स्वर सा ग प हैं। आरोह में विस्तार करते हुए पंचम अधिकतर छोड़ दिया जाता है और अवरोह में सभी स्वर प्रयुक्त होते हैं अतः इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण हैं।

बसन्त एक बहुत ही गम्भीर प्रकृति का अत्यन्त प्राचीन राग है। राग-रागिणी के सोमेश्वर (शिव) और कल्लिनाथ मतों में इसे पुरुष राग माना गया है। यह एक ऋतु राग है। इसकी अधिकतर बन्दिशों में बसन्त ऋतु का वर्णन पाया जाता है। इसका निकटवर्ती राग परज है। दोनों का अवरोह सां नि ध प करते समय ध को नि की अपेक्षा अधिक समय देकर मींड के साथ प प्रयुक्त करने से बसन्त तथा ध की अपेक्षा नि को अधिक समय देकर ध-प द्रुत गति से करने पर परज होता है।

जैसे :- **बसन्त :- सां निध ऽ प**

परज :- सां नि ऽ धप

आरोह :- सा ग म ध॒ रे॒ सां

अवरोह:- रें॒ नि ध॒, प, प (प) मं ग मं - - ग, मं ध॒ मं ग रे॒ सा

पकड़ :- सां मं ध॒ सां, मं ध॒ रें॒ सां, सां नि ध॒ (सां) नि ध॒ प प (प) मं ग मं - - ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

बसन्त – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

	ध	ध नि ध	नि सां
सां नि ध नि	ध प मं ग	मं ध सां –	रें रें सां –
0	3	x	2
	सां ग	रें नि ध	नि ध नि
ध नि सा प	मं गं रें सां	नि ध रें नि	ध नि ध प
0	3	x	2

अंतरा

ग मं ध नि	धप मं नि	सां नि	सां गं
मं ग मं ध	मं सां – सां	नि रें सां –	मं गं रें सां
0	3	x	2
सां नि ध	नि ग	ग धप	ग ग
रें नि ध नि	ध प मं ग	नि ध मं ग	मं ग रे सा
0	3	x	2

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसन्त - त्रिताल (विलंबित)

स्थायी
नबी के दरबार,
सब मिल गावो बसंत ऋतु की सुबारकी।
अंतरा
औलिया मुराद मांगन आये, मनरंग और सब ही संसार।

स्थायी

			धु
			रुनि
			नबी
नि मं मंमं	ग	धु निधु निनि	नि नि नि
धु प मंप पधु	(प) मंग मं ग	मं धुसां - सांसां	रें - सां -सां
के ऽ ऽऽ दर	बा ऽऽ ऽ र	स बऽ ऽ मिल	गा ऽ वो ऽब
3	x	2	0
नि	ग	मधुनि धुप	मं ग सा
रें नि धु प	- (प) मं ग	गमंधुनि - मंधु मं	ग रे सा रुनि
सं ऽ ऽ त	ऽ ऋ तु ऽ	कीऽऽऽ ऽ ऽऽ सु	बा र की, नबि
3	x	2	0

अंतरा

धु नि धु नि	नि नि नि	नि नि नि	नि नि नि
मंधु सां - ,सां	रें - सां सां	- सां सां सांनि	रें सां - सां
औलि या ऽ ,मु	रा ऽ द माँ	ऽ ग न आऽ	ऽ ए ऽ म
3	x	2	0
नि नि मं	मं धु ग	मधुनि धु ग	रे सा
रेनि धु प प	प मं मं ग	गमंधुनि - मंधु मंग	ग रे सा रेनि
नऽ रं ऽ ग	औ र स ब	हीऽऽऽ ऽ ऽऽसंऽ	सा ऽ र, नबि
3	x	2	0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) बार सा ग मं ध प, प (प) मं ग मं - ग, मं ग रे सा - नबी के
x
(2) बार सा म मं म ग नि ध प, (प) मं ग मं - ग गमंध गमंग रेसा नबी क
x
(3) बार सां, मं ध सां, मं ध रें सां, सा ग मं ध रें सां - - नबी के
x
(4) बार सां नि ध (सां) नि ध प मंपध धमंप - मं ग मं - ग -
x
गमंधनि मं ग मं ग रे सा नबी के

::बोलतान::

(1) (प) मंग मं ग सा म- मं म ग नि ध प मं धसां सां नि रें सां
बा ऽऽ ऽ र न बिऽ ऽ ऽ के द र बा र स ब मि ल गा वों
x
सांनि धनि सांरे सांनि धप प- मंग मं- ग- मं ग रे नि धप मंप पध
बऽ सऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ तऽ ऋऽ तुऽ ऽऽ कीऽ न बी केऽ ऽऽ दर

(2) बार प- मंग मं- ग-
x
पमं धप मंग मं- ग-
पमं धप निध प- मंग मं- ग-
पमं धप निध सांनि धप मंग मं- ग-
पमं धप निध सांनि रेसां निध प- मंग मंग रेसा निरे गमं धनि सां- नबी

(3) बार सांनि धप मंग मंध सां- -- -- --
x
धरे सांरें निसां निध सांनि धप मंग मंध सां- -- -- --
साम मग निनि धसां सांनि रे- सांनि धप मंग मंध सां-
मंग मंध सां- मंग मंध सां- -- नबी

(4) बार सांनि धप मंग मंध सां- --
x
सांनि धसां निध सांनि धप मंग मंध सां- --
निरे गं- रेंसां निसां रें- सांनि धनि सां- निध मंध नि- धप मंप ध-
पमं गमं प- मंग मंग रेसा निरे गमं धनि सां- नबी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसन्त – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सरस सुगन्ध नई बन बेली, फूल रही सब बेला चमेली।

अंतरा

पवन सुगंधित बहत चहुँ ओर, गाय बसंत चतुर अलबेली।

स्थायी

ध		नि	मं	मं		ग	म	ध	नि	सां	नि	नि			
सां	नि	ध	प	प	–	मं	ग	मं	ध	नि	सां	रें	–	सां	–
स	र	स	सु	गं	ऽ	ध	न	ई	ऽ	ब	न	बे	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			

सां	गं	मं	गं	मं	गं		नि	नि			ध			मं	ध
नि	रें	गं	मं	गं	रें	सां	सां	सां	–	निध	सां	नि	ध	प	मंध
फू	ऽ	ल	र	ही	ऽ	स	ब	बे	ऽ	लाऽ	च	मे	ऽ	ली	ऽऽ
0				3				x				2			

अंतरा

ग		ध	नि	ध		नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि		नि
मं	ग	मं	ध	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सांनि	रें	–	सां
प	व	न	सु	गं	ऽ	धि	त	ब	ह	त	च	हुँऽ	ओ	ऽ	र
0				3				x				2			

				मं	गं			सां		ध					
सां	गं	मं	गं	नि				नि				रें	नि	मं	ध
नि	रें	गं	मं	गं	रे	सां	सां	नि	ध	सां	सां	नि	ध	प	मंध
गा	ऽ	य	ब	सं	ऽ	त	च	तु	र	अ	ल	बे	ऽ	ली	ऽऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	स	र	स	सु	गं	ऽ	ध	न	गमं	धनि	रेंनि	धप	मंग	मंग	मंग	रेसा
	0				3				x				2			
(2)	स	र	स	सु	गं	ऽ	ध	न	गमं	धमं	धनि	धनि	रनि	धप	मंग	रेसा
	0				3				x				2			
(3)	स	र	स	सु	गं	ऽ	ध	न	पमं	धप	निध	सांनि	धप	मंग	मंग	रेसा
	0				3				x				2			
(4)	स	र	स	सु	गं	ऽ	ध	न	सांनि	धसां	निध	सांनि	धप	मंग	मंग	रेसा
	0				3				x				2			

::अन्तरे की तान::

(1)	प	व	न	सु	गं	ऽ	धि	त	सांनि	धप	मंग	रेसा	निरे	गमं	धनि	सां-
	0				3				x				2			
(2)	प	व	न	सु	गं	ऽ	धि	त	सांनि	धसां	निध	सांनि	धप	मंग	मंध	सां-
	0				3				x				2			
(3)	प	व	न	सु	गं	ऽ	धि	त	निरें	गं-	रेंसां	निसां	रें-	सांनि	धनि	सां-
	0				3				x				2			
	निध	मंध	नि-	धप	मंप	ध-	पमं	गमं	प-	मंग	मंग	रेसा	निरे	गमं	धनि	सां-
	0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसन्त - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

फगवा ब्रिज देखन को चलो री,
फगवे में मिलेंगे कुँवर कान्हा जहाँ, बाट चलत बोले कगवा।

अंतरा

आइ बहार सकल बन फूले, रसीले लाल को ले अगवा।

स्थायी

ध॒	नि
म॑	ध॒
फ	ग

ध॒			नि	म॑		ग		ध॒	नि	सां	नि	नि			ध॒
सां	नि	ध॒	प	(प)	-	म॑	ग	म॑	ध॒	नि	सां	रें॒	सां	-	म॑ध॒
वा	ऽ	ब्र	ज	दे	ऽ	ख	न	को	ऽ	च	लो	री	ऽ	ऽ	फग
0				3				x				2			

ध॒			नि	म॑		ग		म	ध	म	ग		म	ग	
सां	नि	ध॒	प	प	-	म॑	ग	ग	म॑	ध॒	म॑	-	ग	रे॒	सा
वे	ऽ	में	मि	लें	ऽ	गे	ऽ	कुँ	व	र	का	ऽ	न्हा	ज	हाँ
0				3				x				2			

सा	ऩि	सा	सा	ध॒	नि	ध॒						ध॒		ध॒	नि
ऩि	सा	ग	ग	म॑	ध॒	सां	-	(सां)	-	नि	ध॒	नि	ध॒	म॑	ध॒
बा	ऽ	ट	च	ल	त	बो	ऽ	ले	ऽ	क	ग	वा	ऽ,	फ	ग
0				3				x				2			

अंतरा

ग			म	ध॒		नि	ध॒	ध॒	नि	नि	नि	नि	नि		
म॑	-	ग	ग	म॑	-	ध॒	म॑ध॒	सां	सां	सां	सां	सां	रें॒	सां	-
आ	ऽ	इ	ब	हा	ऽ	र	सऽ	क	ल	ब	न	फू	ऽ	ले	ऽ
0				3				x				2			

सां	गं	रें॒	गं	रे॒	गं							ध॒		ध॒	नि
नि	रें॒	गं	रें॒	गं	रें॒	सां	-	(सां)	-	नि	ध॒	नि	ध॒	म॑	ध॒
र	सि	ले	ला	ऽ	ल	को	ऽ	ले	ऽ	अ	ग	वा	ऽ,	फ	ग
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसन्त – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

पिया संग खेलूँ री एरी माइ,
बरन बरन के बसन पेहर फुलवन के हरवा गूँद गूँद डारूँगी गरवा।

अंतरा

तैसो ही बसंत उपजे,
सबके हुलसा लीनो मनवा, अति ही चाव बढ़ीला मोरा जियरवा।

स्थायी

															ध
															रें
															पि
				ग		मं		ध	नि	सां	नि	नि			नि
निध	(प	–	पमं)	मं	–	ग	–	मं	ध	नि	सां	रें	सां	–	सां
याऽ	सं	ऽ	गऽ	खे	ऽ	ऽ	ऽ	लूँ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ए
3				x				2				0			
सां	नि		नि	नि	सां	नि	नि	नि		नि	प	नि	ध	रें	ध
रें	सां	–	सां	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	मं	ध	सां	नि	मं
री	मा	ऽ	इ	ब	र	न	ब	र	न	के	ऽ	ब	स	न	पे
3				x				2				0			
ग	मं	ग	ध	ध	ध	ध	म	म	ग			नि़	नि़		सा
मं	ग	नि	नि	मं	मंध	मं	गमं	ग	रे	सा	–	सा	रे	सा	म
ह	र	फु	ल	ब	नऽ	के	ऽऽ	ह	र	वा	ऽ	गूँ	ऽ	द	गूँ
3				x				2				0			
	ग	मं		ध	नि	ध				सां	नि	ध	धप	मं	ध
–	मं	ग	–	मं	ध	सां	–	–	–	नि	ध	नि	मं	ध	रें
ऽ	द	डा	ऽ	रूँ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ग	र	वा	ऽ	ऽ,	पि
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

ध	नि	ध		नि	नि		नि	नि	नि			नि	नि	नि	
मं	ध	सां	–	सां	सां	–	सां	सां	रें	सां	–	सां	रे	सां	–
तै	सो	ही	ऽ	ब	सं	ऽ	त	उ	प	जे	ऽ	स	ब	के	ऽ
0				3				x				2			
नि	नि	नि					नि	ध		ध	नि	नि	सां	गं	गं
सां	सां	सां	–	(सां)	–	नि	ध	नि	ध	नि	ध	ध	नि	रें	मं
हु	ल	सा	ऽ	ली	ऽ	नो	ऽ	म	न	वा	ऽ	अ	ति	ही	ऽ
0				3				x				2			
मं		गं	गं	गं		नि				ध	नि	नि		सां	नि
गं	–	रें	रें	रें	–	सां	–	–	–	मं	ध	सां	–	नि	ध
चा	ऽ	व	ब	ढ़ी	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	मो	रा	जि	ऽ	य	र
0				3				x				2			
ध	ध	मं	ध												
नि	मं	ध	रें												
वा	ऽ	ऽ,	पि												
0															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(9) श्री

यह पूर्वी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे-ध कोमल, म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे तथा संवादी प होने के कारण यह पूर्वांगवादी राग है। इसके गाने का समय सायं 4:00 से 5:30 बजे तक है। अतः यह संध्याकालीन सन्धिप्रकाश राग है। इसका प्राण स्वर रे तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। इसके आरोह में ग-ध नहीं लगते और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है इसलिए इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है।

श्री राग का वर्णन सभी प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। राग-रागिणी वर्गीकरण के सभी मतों में श्री को प्रमुख छह रागों के अन्तर्गत माना गया है। मध्य युग में यह राग वर्तमान काफ़ी थाट में गाया-बजाया जाता था। कहा जाता है कि रागों का वास्तविक रूप बचाने के लिए उनके स्वरों को पलट दिया गया था। श्री ऐसा ही राग है। काफ़ी थाट के स्वरों को पलट कर इस राग का स्वरूप बना है।
जैसेः- काफ़ी में रे-ध शुद्ध, ग-नि कोमल, म शुद्ध, जबकि श्री में इसके विपरीत रे-ध कोमल, ग-नि शुद्ध और म तीव्र स्वर प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार काफ़ी और श्री के स्वरों में सा-प के अतिरिक्त कोई समानता नहीं हैं। बस यही स्वरों का पलटना है।

देश राग के स्वर विस्तार को वर्तमान श्री के स्वरों में गायन-वादन कर इस राग का स्वरूप काफ़ी हद तक बना रहता है जैसे :-
देसः- सा रे म प, म प ध म ग रे, म प नि सां, नि सां रें नि ध प।

श्रीः- सा रे म प म प ध म ग रे म प नि सां नि सां रें नि ध प।

श्री अत्यन्त गंभीर प्रकृति का राग है। अतः वैराग्य भावना के लिए यह राग विशेष अनुकूल है। इसमें सा रे रे करते समय, पहले रे को ग का तथा दूसरे रे को सा का कण लगाया जाता है। यह कठिन राग माना जाता है इसलिए अधिकतर कलाकार इसे नहीं गाते-बजाते। इसके वादी-संवादी रे-प स्वरों में संवाद नहीं है फिर भी इन्हें अपवाद स्वरूप मान लिया गया है। इसमें पूर्वी अंग की सां नि रें नि ध प, प म ध म ग रे सा की स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह :- सा, (ग)रे (सा)रे, सा रे, म प, नि सां
अवरोह :- सां नि ध, प म ग रे, ग (ग)रे (सा)रे सा।
पकड़ :- सा (ग)रे (सा)रे सा, प, म ग रे, ग (ग)रे (सा)रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्री – झपताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	ग			रे	रे	ग	रे	ग	
रे	रे	सा	-	सा	ग	रे	ग	रे	सा
x		2			0		3		
सा	ग	रे	ग		सा	नि़		नि़	
नि़	रे	ग	रे	सा	नि़	रे	नि़	ध़	प़
x		2			0		3		
प़		सा	सा		सा	ग			नि़
मं़	प़	नि़	नि़	सा	रे	रे	सा	-	सा
x		2			0		3		
प	मं			ग	रे		ग	ग	
मं	ध	मं	ग	रे	मं	ग	रे	रे	सा
x		2			0		3		

अंतरा

प	मं	मं	प		प		सां	नि	
मं	प	ध	ध	प	सां	-	नि	रें	सां
x		2			0		3		
सां	गं	रें	गं		सां	नि		नि	
नि	रें	गं	रें	सां	नि	रें	नि	ध	प
x		2			0		3		
प	ध	सां	सां	नि	नि	सां			नि
मं	प	नि	नि	सां	रें	रें	सां	-	सां
x		2			0		3		
मं	प		नि		ध		रे	ग	
प	सां	नि	ध	प	मं	ग	ग	रे	सा
x		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्री – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

एरि हुँ तो आस न गैली, पास न गैली,
लुगवा धरे मैंका नाम।

अंतरा

जबते पी परदेस गवन कीनो,
तबतें देहरि न दीनो पाँव।

स्थायी

प	मं	सां	नि	सां			नि	सां		नि					मं
मं	प	नि	सां	रे	–	सां	सां	नि	–	सां	–	नि	धु	प	प
ए	रि	हुँ	तो	आ	ऽ	स	न	गै	ऽ	ली	ऽ	पा	ऽ	स	न
3				x				2				0			

प		मं	मं	धु		रे				धु		रे	ग		
मं	–	प	धु	मं	गरे	ग	रेसा	साप	मंधु	मं	गरे	ग	रे	सा	–
गै	ऽ	ली	ऽ	लु	गऽ	वा	धऽ	रेऽ	ऽऽ	मैं	काऽ	ना	ऽ	म	ऽ
3				x				2				0			

अंतरा

प	मं	सां		नि		नि	नि	सां	नि	नि	नि	सां			
मं	प	नि	–	सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	निसां	निधु	प
ज	ब	ते	ऽ	पी	ऽ	प	र	दे	ऽ	स	ग	व	नऽ	कीऽ	नो
3				x				2				0			

प	मं	सां	नि	गं	गं		नि	प		धु		रे	ग		
मं	प	नि	सां	रें	रें	सां	सां	मंप	मंपधु	मं	गरे	ग	रे	–	सा
त	ब	तें	ऽ	दे	ह	रि	न	दीऽ	ऽऽऽ	नो	ऽऽ	पाँ	ऽ	ऽ	व
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	सारे मंप निसां रेंनि	धप मंग रेग रेसा
	3	x	2	0
(2)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	मंप निसां रेंरें सांनि	धप मंग रेग रेसा
	3	x	2	0
(3)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	सांनि धप मंप निनि	धप मंग रेग रेसा
	3	x	2	0
(4)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	निसां रेंरें सांनि धप	मंग रेग रे- सा-
	3	x	2	0
(5)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	गै ऽ ली ऽ	पा ऽ स न
	3	x	2	0
	सारे मंप रेमं पध	मंप निसां पनि सांरें	सांनि धप मंप निनि	धप मंग रेग रेसा
	3	x	2	0
(6)	ए रि हुँ तो	आ ऽ स न	गै ऽ ली ऽ	पा ऽ स न
	3	x	2	0
	निसां रेंनि सांरें निसां	रेंरें सांनि धप मंप	सांनि धप मंप रेंरें	सांनि धप मंग रेसा
	3	x	2	0

::अंतरे की तान::

(1)	ज ब ते ऽ	पी ऽ प र	सांनि धप मंप मंग	रेम पम पनि सां-
	3	x	2	0
(2)	ज ब ते ऽ	पी ऽ प र	सांनि धप निसां रेंरें	सांनि धप मंप निसां
	3	x	2	0
(3)	ज ब ते ऽ	पी ऽ प र	दे ऽ स ग	व नऽ कीऽ नो
	3	x	2	0
	पनि निप सांसां पनि	निप रेंरें सांरें निसां	पनि सांप निसां पनि	सांनि धप मंप निसां
	3	x	2	0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(10) पूरिया

यह मारवा थाट का राग है। इसमें रे कोमल म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी ग संवादी नि होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है। यह सायंकालीन सन्धिप्रकाश राग है अतः इसका गायन-समय शाम को 5:30 से 7:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ग-नि तथा न्यास के स्वर सा-ग-नि हैं। इसके आरोह ओर अवरोह में पंचम वर्जित होने के कारण यह षाड़व जाति का राग है।

पूरिया राग का विस्तार मन्द्र और मध्य सप्तक में होने के कारण इसकी प्रकृति गम्भीर है। इस राग के अधिकतर विलम्बित ख़यालों का सम मन्द्र तीव्र म पर होता है। यह इस राग की विशेषता है जो किसी अन्य राग में नहीं दिखाई देती। इसमें अति कोमल रे का प्रयोग होता है। नि ग म॑ का अधिक और रे ध का कम से कम प्रयोग करने से यह मारवा राग से दूर रहता है। तार सप्तक में पूरिया राग का अधिक विस्तार करने से इसमें सोहनी राग की छाया दिख सकती है।

आरोह :- सा ऩि, रे॒ सा ग, म॑, ध नि रें॒ सां।
अवरोह :- सां नि ध नि, म॑ ग म॑ ग ऩि रे॒ सा।
पकड़ :- सा ऩि ध़ नि ध म़॑, ध़ ऩि रे॒ सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरिया – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ग	ग		ग			रे̱	सा	ध़		ध़	नि़	सा	नि़		
मं	मं	ग	रे̱	सा	-	नि़	ध़	नि़	-	म़ं	ध़	नि़	रे̱	-	सा
0				3				x				2			
नि़	नि़			रे̱	सा	ध़		ग			ग	मं	ग		
सा	रे̱	सा	-	नि़	ध़	नि़	-	रे̱	ग	-	मं	ग	रे̱	सा	-
0				3				x				2			
रे̱	ग	रे̱	रे̱	ध	ध	मं	रे̱	ग		ध		ग		ग	
नि़	रे̱	ग	ग	मं	मं	ग	ग	नि	ध	मं	ग	मं	ग	रे̱	सा
0				3				x				2			

अंतरा

ग	ग	मं	मं	ग		ध	नि	ध	म		नि	सां	नि		
मं	मं	ग	ग	मं	ग	मं	ध	मं	सां	-	सां	नि	रें̱	सां	-
0				3				x				2			
नि		नि		रें̱	सां	ध		सां	नि			ध	मं	ध	
सां	-	सां	-	नि	ध	नि	-	नि	रें̱	नि	ध	मं	ध	मं	ग
0				3				x				2			
ग	मं	रे̱		ग	ध			मं			ग		ग		
मं	रे̱	ग	-	नि	नि	ध	मं	ग	-	-	मं	ग	रे̱	सा	-
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरिया - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

श्याम सुंदर की सुंदर मुरतिया, हमरो मन सखी मोह लई री।

अंतरा

मुकुट सीस और कानन कुंडल,
सुंदर पीतांबर अति माधुरी।।

स्थायी

			ग	सा	नि़	नि़		रे॒	सा	ध़	सा	सा	नि़	रे॒	
गमंध	गमं	ग	रे॒	नि़	रे॒	सा	–	नि़	ध़	नि़	नि़	नि़	रे॒	ग	–
श्याऽऽ	ऽऽ	म	सुं	द	र	की	ऽ	सुं	द	र	मु	र	ति	या	ऽ
0				3				x				2			
ग	ग	म		ध	ध	म	ध	ध	ध	ध	मं	ग		ग	
मं	मं	ग	–	मं	मं	ध	मंध	नि	नि	मं	ग	मं	ग	रे॒	सा
ह	म	रो	ऽ	म	न	स	खिऽ	मो	ऽ	ह	ल	ई	ऽ	री	ऽ
0				3				x				2			

अंतरा

ग	ध	मं	ध		ध	मं	धनि	ध		नि	नि	नि	नि		नि
मं	मं	ग	मं	–	मं	ध	मंध	सां	–	सां	सां	सां	रें॒	सां	सां
मु	कु	ट	सी	ऽ	स	औ	रऽ	का	ऽ	न	न	कुं	ऽ	ड	ल
0				3				x				2			
सां	नि		नि	ध	मं	ध		ग	ग	मं	ग	मं	ग		नि़
नि	रें॒	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	रे॒	ग	म	ग	रे॒	सा	सा
सुं	ऽ	द	र	पी	ऽ	तां	ऽ	ब	र	अ	ति	मा	ऽ	धु	रि
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	श्याऽऽ ऽऽ म स	द र की ऽ	निरे गरे सा- निरे	गमं गरे निरे सा-
	o	3	x	2
(2)	श्याऽऽ ऽऽ म स	द र की ऽ	निरे गमं धनि धमं	गमं धग मंग रेसा
	o	3	x	2
(3)	श्याऽऽ ऽऽ म स	द र की ऽ	गमं धनि रेंनि धमं	गमं धग मंग रेसा
	o	3	x	2
(4)	श्याऽऽ ऽऽ म स	द र की ऽ	सुं द र मु	र ति या ऽ
	o	3	x	2
	मंमं गमं मंग मंमं	गमं गरे निरे सा-	निनि धनि निध निनि	धमं गमं गरे सा-
	o	3	x	2
(5)	श्या ऽऽ ऽऽ मस	द र की ऽ	सा- निध नि- --	गग रेसा निसा निध
	o	3	x	2
	नि- -- मंमं गमं	गरे सा- निध नि-	-- निनि धनि धमं	गमं धग मंग रेसा
	o	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	मु कु ट सी	ऽ स औ रऽ	सां- निध निनि धमं	गमं धनि सांनि रेंसां
	o	3	x	2
(2)	मु कु ट सी	ऽ स औ रऽ	निरें निध निनि धमं	गमं धनि सांनि रेंसा
	o	3	x	2
(3)	मु कु ट सी	ऽ स औ रऽ	मंमं गमं मंग मंमं	गमं धनि सांनि रेंसा
	o	3	x	2
(4)	मु कु ट सी	ऽ स औ रऽ	का ऽ न न	कुं ऽ ड ल
	o	3	x	2
	निरें निध निनि मंध	मंग मंमं निरे निध	निनि निरे गमं धनि	रेंसां निरें सांनि रेंसां
	o	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(11) मियाँमल्हार

यह काफी थाट के अन्तर्गत आता है इसमें ग कोमल, दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं इसके वादी संवादी के विषय में मतभेद है। मल्हार के अधिकतर प्रकारों में म वादी होता है इसलिए कुछ विद्वान् इसका वादी संवादी म-सा मानते हैं। कुछ के अनुसार सा-प वादी संवादी होता है किन्तु प्रचार को देखते हुए इसका वादी संवादी रे-प हो तो अधिक उपयुक्त है क्योंकि रे और प पर विशेष रूप से न्यास किया जाता है। इसका गायन-वादन मध्यरात्रि में 11:30 से 1:00 बजे तक होता है। इसके प्राण स्वर प नि तथा न्यास के स्वर सा रे प नि हैं। इसके आरोह में सातों स्वर क्रमानुसार प्रयुक्त नहीं होते और अवरोह में ध वर्जित है तथा ग म रे सा में ग वक्र रूप से प्रयुक्त होता है। अतः इसकी जाति वक्र-सम्पूर्ण-षाड़व है।

यह वर्षा कालीन ऋतु राग है। वर्षा ऋतु संबंधी विवरण मल्हार राग के अधिकतर बंदिशों में पाया जाता है। यह राग मल्हार के अनेक प्रकारों का आधार स्वरूप राग है। कहा जाता है कि तानसेन ने इस राग की रचना की थी। इसका निकटवर्ती राग बहार है। इन दोनों रागों में नि ध नि सां स्वर संगति का प्रयोग होता है। बहार में नि का कम, ध का अधिक तथा इसके विपरीत मल्हार में नि का अधिक और ध का कम मात्रा में प्रयोग किया जाता है। कामोद और मियाँ मल्हार में म रे प की मुख्य स्वर संगति मानी जाती है। दोनों में सूक्ष्म अंतर यह है कि रे, प करते समय कामोद में द्रुत तथा मल्हार में उसकी अपेक्षा विलंबित लय में रे के बाद प को मींड के साथ लिया जाता है।

आरोहः- सा, रे म रे सा, म रे प, म प <u>नि</u> ध नि सां।
अवरोहः- सां नि प, म प, ग म, रे सा।
अवरोहः- रे म रे सा, <u>नि</u> प़ म़ प़, <u>नि</u> ध़ नि़ सा, म रे प <u>ग</u> - म रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मियाँमल्हार - एकताल (मध्यलय)

स्थायी

सा	ऩि	प़		प़	म़	प़		सा	सा	ऩि	
रे	सा	ऩि̲	प़	म़	प़	ऩि̲	ध़	ऩि	ऩि	सा	-
0		3		4		x		0		2	
सा	सा	ऩि		ऩि		म	रे	म	ग̲	म	
ऩि	ऩि	सा	-	रे	सा	रे	प	ग̲	म	रे	सा
0		3		4		x		0		2	
सा	म	रे	प	म		नि		सां	नि		
म	रे	प	म	नि̲	ध	सां	-	नि	रें	सां	-
0		3		4		x		0		2	
नि		प		प	म	म	ग̲	म	म		
सां	-	नि̲	प	म	प	ग̲	म	रे	रे	सा	-
0		3		4		x		0		2	

अंतरा

प	म	प	नि̲	सां	सां	नि		सां	नि	नि	
म	प	नि̲	ध	नि	नि	सां	-	नि	रें	सां	-
0		3		4		x		0		2	
प		सां	सां	नि		नि	नि	प	ध		म
नि̲	ध	नि	नि	सां	-	रें	सां	नि̲	नि̲	प	प
0		3		4		x		0		2	
प	म	प		प		प	म	म	ग̲	म	
म	प	सां	-	नि̲	प	म	प	ग̲	म	रे	सा
0		3		4		x		0		2	
सा	सां	मं		सां	नि	म	ग̲	म	म	ऩि	
सां	मं	रें	सां	नि	सां	ग̲	म	रे	रे	सा	-
0		3		4		x		0		2	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मियाँमल्हार - एकताल (विलंबित)

स्थायी

करीम नाम तेरो, तू साहेब सत्तार।

अंतरा

दुख दलिद्र दूर कीजे, सुख देहो सबन को,
अदारंग विनति करत, सुन लेहो सत्तार।

स्थायी

											-रे
											ऽक
नि़	सा	ध़	प़	प़	ध़	ध़	नि़	ध़	नि़	नि़	नि़
सा	नि़सा	नि़	प़,मप़	नि़	नि़ध़	नि़	सा	नि़	सा	सा	सा
री	ऽऽ	ऽ	म,ऽऽ	ना	ऽऽ	म	ते	ऽ	ऽ	रो	तू
3		4		x		0		2		0	
	नि़	सा		रे	म	म	ग॒				सा
–	सा	रे	सा	प	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा,नि़सा	-रे
ऽ	सा	हे	ब	स	त्ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र,ऽऽ	ऽक
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	म प	ध	सां	नि		नि	नि	नि		ध	ध
मप	प,नि॒ध	नि॒ध	,नि	सां	–	सां	सां	रें	सां	नि॒ध	नि॒ध
दुख	द,लिऽ	ऽऽ	,द्र	दू	ऽ	र	की	ऽ	जे	सुऽ	खऽ
3		4		x		0		2		0	
ध	सां	नि	नि	सां			सां	ध		प	म
नि॒ध	नि	सां	सां	रें	सां	(सां)	ध	नि॒	प	म	प
ऽऽ	दे	ऽ	हो	स	ब	न	को	ऽ	ऽ	अ	दा
3		4		x		0		2		0	
प	प	ध	नि॒	म	म	ग॒	म	सा		प	म
मप	नि॒	नि॒	प	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	म	प
ऽऽ	रं	ऽ	ग	बि	न	ति	क	र	त	सु	न
3		4		x		0		2		0	
प	प		नि	म	म	म	ग॒				सा
मप	नि॒ध	निसां	,सां	प	ग॒	ग॒	म	रे	–	सा,नि॒सा	-रे
ऽऽ	लेऽ	ऽऽ	,हो	स	त्ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र,ऽऽ	ऽक
3		4		x		0		2		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) नाऽ सा - - नि ध नि ध, म प नि ध नि सा करीम 4
x

(2) नाऽ सा - - नि ध नि ध नि नि सा, नि म प नि नि सा करीम 4
x

(3) नाऽ नि सा रे नि ध नि सा रे प ग म रे सा करीम 4
x

(4) नाऽ म रे प म प नि नि प, प ग म रे सा करीम 4
x

(5) नाऽ म प नि ध नि नि म प, प ग म रे प, म प नि नि नि नि सां
x
(सां) नि प नि म प ग म रे सा करीम 4

::बोलतान::

(1) नाऽऽम
x
सारेप" मपनिधनिप मपगगम मरेरे निधनि सासासारे
करीम नऽमऽतेरो तूऽऽसाहेब सत्तार सत्तार सत्तारक
रीऽऽ ऽम
4

::तान::

(1) नाऽऽम निसा रेप मप गम रेसा निध निसा
x
रेप मप निप मप गम रेसा निध निसा
रेप मप निध निसां रेंसां निसां निप मप गम रेसा
निध निसा निध निसा निध निसा क रीऽऽ ऽम
4

(2) नाऽऽम रेप मप गम
x
रेप मप निप मप गम
रेप मप निध निसां निप मप गम
रेप मप निध निसां रेंसा निसां गंमं रेंसां
निध निसां निप मप गम रेसा निध निसा क रीऽऽ ऽम
4

(3) नाऽऽम सांरें सांरें निसां निसां धनि धनि मप मप गम गम रेसा निसा
x
सांरें रेंनि सांसां धनि निम पप गम मसा रेरे निसा सांरें निसां धनि
मप गम सारे निसा निध निसा क रीऽऽ ऽम
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मियाँमल्हार - तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

बोले रे पपैयरा, अब घन गरजे।

अंतरा

ऊन ऊन कर आई बदरिया, बरसन लागी,
सदारंगीले मोमदसा, दामिनी सी कौंद चौंद, मोरा जियरा लरजे।

स्थायी

															प
															नि̲
															बो
नि̲	प	प	नि̲	प				रेंनि				म			प
प	नि̲	म	प	सां	–	–	–	सां	–	–	धप	ग̲	–	–	म
ल	रे	ऽ	प	पै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यऽ	रा	ऽ	ऽ	अ
3				x				2				0			
म	म	म	मग̲	म		म		नि़				सा	नि़		रे
प	ग̲	ग̲	म	रे	–	रे	–	सा	–	–	–	नि़	सा	–	सा
ब	घ	ऽ	न	ग	ऽ	र	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ
3				x				2				0			
नि̲	नि̲	नि̲	नि̲	ध		नि̲		प				नि	ध	नि	प
ध	ध	ध	ध	नि̲	–	प	–	मप	धनि	सांरें	सांनि	सां	नि	सां	नि̲
ब	घ	ऽ	न	ग	ऽ	र	ऽ	जेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बो
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

रे		म	रे		म	प	नि̲	सां	नि		सां	नि	नि	नि	
म	–	रे	प	–	प	नि̲	ध	नि	सां	–	नि	सां	सां	सां	–
ऊ	ऽ	न	ऊ	ऽ	न	क	र	आ	ई	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ
0				3				x				2			
नि̲	नि̲	नि̲	नि̲	सां	नि	नि		सां	रें	नि	नि	ध	ध		
ध	ध	ध	ध	नि	सां	सां	–	रें	नि	सां	सां	नि̲	नि̲	प	–
ब	र	स	न	ला	ऽ	गी	ऽ	स	दा	ऽ	रँ	गी	ऽ	ले	ऽ
0				3				x				2			
	म	प	म	प		ध		रे	म	रे	म	प		सां	नि
–	प	म	प	नि̲	ध	नि̲	ध	म	रे	प	प	नि̲	ध	नि	सां
ऽ	मं	म	द	सा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	मि	नि	ऽ	सि	कौं	ऽ
0				3				x				2			
सां	नि		नि	मं	मं	सां		रें	नि̲	प		प			
नि	सां	–	सां	गं̲	गं̲मं	रें	सां	नि	सां	नि̲	प	मप	धनि	सांरें	सांनि
द	चौं	ऽ	द	मो	राऽ	जि	य	रा	ऽ	ल	र	जेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
0				3				x				2			
नि			प												
सां	–	–	नि̲												
ऽ	ऽ	ऽ,	बो												

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मियाँमल्हार - तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

विजुरी चमके बरसे मेहरवा,
आई बदरिया, गरज गरज मोहे अति ही डरावे।

अंतरा

घन गरजे घन बिजुरी चमके, पपिहा पियु की टेर सुनावे,
कहा करूँ कित जाऊँ, मोरा जियरा तरसे।

स्थायी

नि़	नि़	सा				प़		प़	म़	प़	ध़	ध़		नि़	नि़
सा	सा	रे	-	सारे	नि़सा	नि़	प़	म़	प़	नि़ध़	नि़ध़	नि़	-	सा	सा
बि	जु	री	ऽ	चऽ	मऽ	के	ऽ	ब	र	सेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे
0				3				x				2			
म	म	म	म							सा	ध़	ध़	सा	नि़	
रे	प	ग	ग	म	(म)	म	रे	सारे	नि़सा	नि़	नि़	नि़	नि़	सा	-
ह	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आऽ	ईऽ	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ
0				3				x				2			
नि़	सा	म		म	म	प		म	म	म	रे	सा		नि़	
सा	म	रे	प	प	प	निम	प	ग	गम	रे	सा	रे	-	सा	-
ग	र	ज	ग	र	ज	मोऽ	हे	अ	तिऽ	हि	ड	रा	ऽ	वे	ऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

रे				प		सां	सां	नि	नि	नि		सां	नि	नि	
म	रे	प	मप	नि॒ध	नि॒ध	नि	नि	सां	सां	सां	–	नि	रें	सां	–
घ	न	ग	रऽ	जेऽ	ऽऽ	घ	न	बि	जु	री	ऽ	च	म	के	ऽ
x				2				0				3			
ध		ध		सां	सां	नि		नि			नि	रेंनि	नि॒	ध	
नि॒ध	नि॒ध	नि॒	ध	नि	नि	सां	–	सां	रें	सां	सां	सां	ध	नि॒	प
पऽ	पीऽ	हा	ऽ	पि	यु	की	ऽ	टे	ऽ	र	सु	ना	ऽ	ऽ	वे
x				2				0				3			
रे	ग॒		रे	म		प	ध	सां	नि	नि		नि		नि	
म	म	रे	प	प	–	नि॒ध	नि॒ध	नि	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
क	हा	ऽ	क	रूँ	ऽ	किंऽ	तऽ	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ
x				2				0				3			
म	म	म	ग॒	म	म	नि़		सा	रे	सा					
ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	–	नि़	सा	रे	–				
जि	य	रा	ऽ	त	र	से	ऽ	बि	जु	री	ऽ				
x				2				0							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	सासा मरे पप मप x	गुम रेसा नि़ध़ नि़सा 2
(2)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	मरे पप निप मप x	गुम रेसा नि़ध़ नि़सा 2
(3)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	मप निध निप मप x	गुम रेसा नि़ध़ नि़सा 2
(4)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	मप निध निसां निप x	मप गुम रेसा नि़सा 2
(5)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	मप धनि सांरे निसां x	निप मप गुम रेसा 2
(6)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	सांरें निसां निध निसां x	निप मप गुम रेसा 2
(7)	वि जु री ऽ 0	चऽ मऽ के ऽ 3	गुंमं रेंसां निध निसां x	निप मप गुम रेसा 2

::अन्तरे की तान::

(1)	घ न ग रऽ 0	जेऽ ऽऽ घ न 3	सांरें निसां निध निसां x	निप मप निध निसां 2
(2)	घ न ग रऽ 0	जेऽ ऽऽ घ न 3	गुंमं रेंसां निध निसां x	निप मप निध निसां 2
(3)	घ न ग रऽ 0	जेऽ ऽऽ घ न 3	सासा मरे पप मप x	निप मप निध निसां 2
(4)	घ न ग रऽ 0	जेऽ ऽऽ घ न 3	मप निप मप निध x	निप मप निध निसां 2
	निप मप निध निसां 0	रेंसां निसां निप मप 3	निध निसां गुंमं रेंसां x	निध निसां निप मप 2
	नि- धनि -ध नि- 0	सां- नि- धनि -ध 3	नि- सां- नि- धनि x	-ध नि- सां- -- 2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(12) अड़ाना

यह राग आसावरी थाट के अन्तर्गत आता है। एक मत के अनुसार इसमें ग ध नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। दूसरे मतानुसार ग-ध कोमल, दोनों नि तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वास्तव में अड़ाना के आरोह में चढ़ा हुआ कोमल नि लगता है। स्वर लिपि में इसके लिए कोई चिन्ह न होने के कारण, चढ़े हुये कोमल नि को शुद्ध नि कह दिया गया है। इसका वादी तार सा तथा संवादी प होने के कारण यह उत्तरांग प्रधान एवं चंचल प्रकृति का राग है। इसका गायन-वादन समय मध्यरात्रि के बाद 1:00 से 4:00 बजे तक है। इसके प्राण स्वर ध-सां तथा न्यास के स्वर सा-प हैं। इसकी जाति के विषय में मतभेद है। कुछ लोग आरोह में ग और अवरोह में ध वर्जित होने के कारण षाड़व, कुछ लोग सम्पूर्ण-षाड़व तथा कुछ लोग इस राग के स्वर क्रमानुसार न होने के कारण इसकी जाति वक्र सम्पूर्ण मानते हैं।

अड़ाना राग कान्हड़ा का एक प्रकार है। इसका निकटवर्ती राग दरबारी है। नि प, नि म प सां, प सां ध - नि प, सा रे म प ध नि प स्वर संगति से अड़ाना को दरबारी से अलग करते हैं। अड़ाना का निषाद आरोह में कुछ चढ़ा लगता है। किन्तु भातखण्डे जी ने आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग करके इस राग में दोनों निषाद माने हैं। इसमें कान्हड़ा अंग की ग म रे सा, ध नि प तथा सारंग अंग की म प नि सां रें सां नि सां नि प स्वर संगतियों का मिश्रण है।

आरोह	:-	सा रे म प ध नि प म प ध नि सां।
अवरोह	:-	सां ध - नि प, म प ग - म रे सा।
पकड़	:-	रें सां रें नि सां ध नि प, म प ध नि सां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अड़ाना - झपताल (मध्यलय)

स्थायी

सां		सां	सां		नि	नि	ध		म
रें	सां	रें	नि	सां	ध	ध	नि	प	प
x		2			0		3		
प	नि	प			म	ग	सा	सा	
म	प	सां	नि	प	ग	म	रे	रे	सा
x		2			0		3		
सा	नि़	म	प	म	नि	नि	ध		
नि़	सा	रे	म	प	ध	ध	रें	सां	–
x		2			0		3		
सां	नि	सां	सां		सां	नि	नि	सां	
नि	सां	रें	रें	सां	नि	सां	ध	नि	सां
x		2			0		3		

अंतरा

प	प	म	नि	नि	ध		सां		नि
म	म	प	ध	ध	सां	–	नि	सां	सां
x		2			0		3		
सां	सां	नि	सां		सां	नि	नि	ध	
नि	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	नि	प
x		2			0		3		
मं	मं	गं	सां		सां		नि	सां	
गं	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	नि	सां
x		2			0		3		
प	नि	प			म	ग	सा	सा	
म	प	सां	नि	प	ग	म	रे	रे	सा
x		2			0		3		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अडाणा – त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

अचानक आए लाल मेरे आज घर,

हे सखी धाव धाव ते।

अंतरा

हों अपने भवन् ध्यान करती थी, मो मन के सखि भाव भाव ते।

स्थायी

प		पप	निप	रेंनि	नि	ध			प	म	म	प ध		मम	
नि	प	निमप	पसां	सां	ध	नि	प	–	म	प	प	निनिपम	प	गग	म
अ	चा	ऽऽऽ	नक	आ	ऽ	ऽ	ए	ऽ	ला	ऽ	ल	मेऽऽऽ	ऽ	रेऽ	ऽ
3				x				2				0			

मम			सा	सा		नि़	नि़	सा			सां		सां	नि	रेंसांनि
पप	मग	मगम	रेसा	रे	–	सा	सा	रें	–	सां	रें	–	सांरें	सां	ध
आऽ	जऽ	ऽऽऽ	घर	हे	ऽ	स	खि	धा	ऽ	व	धा	ऽ	वऽ	ते	ऽ
3				x				2				0			

अंतरा

प	म	प	सां	नि	रें	नि	नि	सां	नि	नि	रेंसां	सां	नि		ध
म	प	निप	नि	सां	नि	सां	सां	नि	सां	रें	सांरें	नि	सां	निध	निप
हों	ऽ	अऽ	प	ने	भ	व	न	ध्या	ऽ	न	कऽ	र	ति	थीऽ	ऽऽ
3				x				2				0			

प	नि	सां	नि	मं	गं	सां		सां			सां		रेंसां	नि	
म	प	नि	सां	गं	मं	रें	सां	रें	–	सां	रें	–	सांरें	सां	ध
मो	ऽ	म	न	के	ऽ	स	खि	भा	ऽ	व	भा	ऽ	वऽ	तें	ऽ
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) आऽ सा रे म प ध नि प नि नि प म प ग म रे सा अचानक
x

(2) आऽ म प ध नि प सां ध नि प म प ग म रे सा अचानक
x

(3) आऽ नि प नि म प सां सां ध नि प म प ध ध नि सां अचानक
x

(4) आऽ रें सां रें नि सां ध नि प म प ध नि सां अचानक
x

::तान::

(1) आऽऽए गुम रेसा मप गुम रेसा निप मप गुम रेसा सां- धु- निप मप गुम रेसा
x

रेंसां निसां धु- निप मप गुम रेसा सारे मप धु- निसां

निनि पम गुम रेसा निसा निनि पम गुम रेसा निसा

निनि पम गुम रेसा अचानक

(2) आऽऽए रेसा निसा पम गुम निप मप सांनि धनि रेंसां निसां पंमं
x

गुंमं रेंसां निसां -- -- रेंरें सांरें रेंसां रेंरें सांरें निसां धु- निप

निनि पनि निप निनि पनि मप गुम रेसा सारे मप धुनि सांधु
निसां धुनि सां- अचानक

(3) आऽऽए सारे मप धु- निप मप धनि सांधु निप
x

मप धुनि सांरें निसां धु- निप

मप धुनि सांरें निसां गुंमं रेंसां निसां धु- निप मप गुम रेसा निसा

सारे मप धु- नि- सां- धु- नि- सां- धु- नि- सां- -- -- अचानक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अड़ाना – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

गगरी मोरी भरन नहीं देत,
ढीठ लंगरवा मतवारो।

अंतरा

जित जाऊँ उत, आड़ो ही दौरत,
अब न रहूँ मैं, तोरी नगरी।

स्थायी

सां	नि
रें	सां
ग	ग

सां	रें	नि	नि̲	प	प	नि̲	प	रेंनि		रेंसां		ध̲			
रें	नि	सां	प	नि̲	म	प	सां	सां	–	नि̲	ध̲	नि̲	प	प	–
री	मो	रि	भ	र	न	न	हीं	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ
0				3				x				2			
प		म	म	प	ध̲	पम		म	ग̲	म		सा		सा	नि
म	–	प	प	नि̲	नि̲	ग̲	–	ग̲	म	रे	सा	रे	सा	रें	सां
ढी	ऽ	ठ	लँ	ग	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ	म	त	वा	रो,	ग	ग
0				3				x				2			

अंतरा

प	नि̲	नि̲	नि̲	सां	नि	नि	नि	सां	नि	नि		नि	रेंसां	ध̲	
म	प	ध̲	ध̲	नि	सां	सां	सां	नि	सां	रें	सांरें	सां	नि̲ध	नि̲	प
जि	त	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	उ	त	आ	ऽ	ड़ो	हिऽ	दौ	ऽऽ	र	त
0				3				x				2			
प	नि̲	सां	नि	मं	ग̲ं	सां		सां	रें	नि	नि	प		प	नि
म	प	नि	सां	ग̲ं	मं	रें	सां	नि	सां	रें	सां	नि̲	प	रें	सां
अ	ब	न	र	हूँ	ऽ	मैं	ऽ	तो	ऽ	री	न	ग	रि,	ग	ग
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::स्थायी की तान::

(1)	री	मो	रि	भ	र	न	न	हीं	सारे	मप	धु-	निप	गम	रेसा	ग	ग
	0				3				x				2			
(2)	री	मो	रि	भ	र	न	न	हीं	मप	धनि	सांध	निप	गम	रेसा	ग	ग
	0				3				x				2			
(3)	री	मो	रि	भ	र	न	न	हीं	रेंसां	निसां	धु-	निप	गम	रेसा	ग	ग
	0				3				x				2			
(4)	री	मो	रि	भ	र	न	न	हीं	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सारे	मप
	0				3				x				2			
	धु-	निप	मप	धनि	सांरें	निसां	गंमं	रेंसां	निसां	धु-	निप	मप	गम	रेसा	ग	ग
	0				3				x				2			

::अंतरे की तान::

(1)	जि	त	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	उ	त	सांरें	निसां	धु-	निप	मप	धनि	सांरें	निसां
	0				3				x				2			
(2)	जि	त	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	उ	त	निप	मप	गम	रेसा	सारे	मप	धु-	निसां
	0				3				x				2			
(3)	जि	त	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	उ	त	आ	ऽ	ड़ो	हिऽ	दौ	ऽऽ	र	त
	0				3				x				2			
	रेंरें	सांरें	निसां	गंमं	रेंसां	धु-	निप	मप	धनि	सां-	मप	धनि	सां-	मप	धनि	सां-
	0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(13) दरबारी कान्हड़ा

यह राग आसावरी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें ग ध नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी रे संवादी प होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है। इसका गायन, वादन समय मध्यरात्रि है। इसके प्राण स्वर ग-ध तथा न्यास के स्वर सा रे प हैं। इस राग की जाति सम्पूर्ण-षाड़व है क्योंकि इसके अवरोह में नि ध प सरल रूप में प्रयुक्त नहीं होते। इस राग में स्वरों का क्रमानुसार प्रयोग नहीं होता, इसलिए इसे वक्र-सम्पूर्ण जाति का राग भी कहा जा सकता है।

दरबारी गम्भीर प्रकृति का पुरुष राग है। कर्नाटकी संगीत में इसे दरबारी कान्हड़ा ही कहते हैं। विलम्बित लय में मन्द्र और मध्य सप्तक में इसका विस्तार करने से दरबारी राग का स्वरूप पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है। इसका निकटवर्ती राग अड़ाना है। तार सप्तक में दरबारी को गाने-बजाने से अड़ाना की छाया दिखने लगती है। इस राग की रचना तानसेन ने की थी। इसमें अति कोमल ग-ध का प्रयोग कुछ विद्वान् करते हैं। यह कान्हड़ा के प्रकारों का आधार स्वरूप राग है। इसके ग-ध आन्दोलित होते हैं। इसमें सारंग अंग की तानें सा रे म प नि प सां सां नि प रें सां नि सां नि प म प नि नि प म गाई-बजाई जाती हैं।

आरोह :- नि सा रे ग रे सा, म प ध नि सां।
अवरोह :- सां ध नि प, म प ग म रे सा।
पकड़ :- ग रे रे सा ध नि सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ग	ग			सा	नि	सा	सा	म		ग	सा	सा			
रे	रे	सा	-	नि	सा	रे	रे	ग	-	म	रे	रे	-	सा	-
0				3				x				2			
सा	सा	नि		म	रे	म		सा	रे	सा	सा	नि	नि	ध	नि
नि	नि	सा	-	रे	म	रे	सा	नि	सा	रे	रे	ध	ध	नि	प
0				3				x				2			
प	नि	नि	सा	नि	नि	सा	नि		सा	प	नि	म	ग	सा	
म	प	ध	नि	सा	ध	नि	सा	-	प	म	प	ग	म	रे	सा
0				3				x				2			

अंतरा

प	प	म	म	नि	नि	सां	सां	नि		नि		सां	गं	गं	
म	म	प	प	ध	ध	नि	नि	सां	-	सां	-	रें	रें	सां	-
0				3				x				2			
सां	सां	नि		गं	गं	गं		सां	सां	नि	सां	नि	नि	ध	नि
नि	नि	सां	-	रें	रें	सां	-	नि	नि	सां	रें	ध	ध	नि	प
0				3				x				2			
प	नि	प		नि	नि	ध	नि	प	नि	पम	ग	सा	ग	ग	
म	प	सां	-	ध	ध	नि	प	म	प	ग	म	रे	रे	सा	-
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा - एकताल (विलंबित)

स्थायी

मुबारक बादियाँ शादियाँ तोहे दीनी, अल्लाह ही रसूल।

अंतरा

ऐसी शादी होवे, लाख करोड़ शादियाँ।

स्थायी

सा
,रे
,मु

नि	सासा	नि	सासा	म	म	ग	ग	म		नि	नि
सा	रेरेसानि	सा	रेरे	ग	ग	म	रेमप,म	प	,मप	ध	ध
बा	ऽऽऽऽ	ऽ	रक	बा	ऽ	ऽ	ऽऽ,दि	याँ	,ऽऽ	ऽ	ऽ
3		4		x		0		2		0	
ध	नि	प	निप	म	म			सा			
नि	प	म	पनि	ग	ग	(म)	,रेसा	रे	रे	-ग	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	शा	ऽ	ऽ	,दिऽ	याँ	ऽ	ऽऽ	ऽ
3		4		x		0		2		0	
सासा	नि		निसा	नि		नि	नि	सा	सासा	मम ध ध	नि
रेरेसानि	सा	-	,धनि	सा	निसा	सा	,सा	रेसानिसा	रेरे	गगनिनि,	पमप
ऽऽऽऽ	ऽ	ऽ	,तोहे	दी	ऽऽ	नी	ऽ,अ	ल्लाऽऽऽ	,हिर	सूऽलऽ,	मुऽऽ
3		4		x		0		2		0	
म		सा									
रे	सा	रेरेसानि	सा,रेरे								
बा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ,रक								
3		4									

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अंतरा

पनि
मप
ऐसी

प	रेंसांनि	सां	नि ध	नि		नि		नि	रें	नि	नि
सां	ध	नि	सांनि	सां	,निसां	सां	-	सां	सांनि	रें	सांसां
शा	ऽ	ऽ	ऽदि	हो	,ऽऽ	वे	ऽ	ला	ऽऽ	ख	ऽक
x		0		2		0		3		4	
सां		नि	ध	ध ध प		प	सा	सा		सा	सासा
रेंरेंसांनि	सां	ध	निप	निनिपम	प,मप	सां	निसां,रेसा	रे	सा	रेंरेसानि	सारेरे
रोऽऽऽ	ऽ	र	ऽऽ	शाऽऽऽ	ऽ,दिऽ	याँ	ऽऽ,मुऽ	बा	ऽ	ऽऽऽऽऽ,	रक
x		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::आलाप::

(1) बा सा नि सा नि रे सा रे सा नि सा ध नि रे सा मु बारक
x 4

(2) बा सा ध़ नि़ प़, म़ प़ ध़ नि़ प़ सा, ध नि रे सा मु बारक
x 4

(3) बा सा रे ग रे सा ध नि सा, सा रे ग म रे सा मु बारक
x 4

(4) बा म प ध नि प, सा रे ग म प ध नि प म प
x

म प नि ग म रे सा मु बारक
4

::तान::

(1) बाऽ गुम रेसा निसा धनि रे- सा-
x

पनि मप गम रेसा निसा धनि रे- सा-

सांरें निसां धनि मप गम रेसा निसा धनि रे- सा-

निसा धनि रे- सा- निसा धनि रे- मु बारक
4

(2) बाऽ सारे गम रेसा
x

सारे ग- मप ध- निप मप गम रेसा
x

सारे ग- मप धनि सां- सांरें गंमं रेंसां निसां ध- निप मप गम रेसा

मप गम रेसा मप गम रेसा मु बारक
4

(3) बाऽ रेंरें सांरें रेंसां रेंरें सांरें निसां ध- निप निनि पनि निप निनि पनि
x

मप गम रेसा रेरे सारे रेसा रेरे सारे निसा ध- निप़ मप़ ध- निसा

धनि रे- -- सा- मु बारक
4

(4) बाऽ रेरे सानि सा- रेरे सारे रेसा रेरे सानि सा- रेरे सानि धनि सारे
x

गम गम रेसा निसा गम रेसा निसा रेध़ -नि प़- मप़ धनि सा- धनि

रे- सा- मु बारक
4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

जो गुरु कृपा करे, कोटिक पाप कटत पल छिन मों।

अंतरा

गुरु की महिमा हरि सों भारी, वेद पुरानन सबहि बिचारी,
ब्रह्मा व्यास रटे पल छिन मों।

स्थायी

सा		ग	नि़	नि़	सा		सा	म		ग		सा			
रे	–	सा	सा	सा	रे	–	रे	ग	–	–	म	रे	–	सा	–
जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
सा		प	प	म		म	म	प		नि	प	म	म	सा	
म	–	म	म	प	–	प	प	म	मप	प	नि	ग	गम	रे	सा
को	ऽ	टि	क	पा	ऽ	प	क	ट	तऽ	प	ल	छि	नऽ	मों	ऽ
0				3				x				2			

अंतरा

प	प	म		प	नि	सां		नि	नि	नि		सां	नि	नि	
म	म	प	–	नि	प	नि	–	सां	सां	सां	–	नि	सां	सां	–
गु	रु	की	ऽ	म	हि	मा	ऽ	ह	रि	सों	ऽ	भा	ऽ	री	ऽ
0				3				x				2			
सां	नि	नि	नि	नि			नि	सां	सां	रें	सां	नि	ध		
नि	सां	सां	सां	रें	–	सां	सां	नि	नि	सां	रें	ध	नि	प	–
वे	ऽ	द	पु	रा	ऽ	न	न	स	ब	ही	बि	चा	ऽ	री	ऽ
0				3				x				2			
प		नि		नि		नि	प	म	ग	सा		सा	ग	ग	
सां	–	सां	–	म	–	प	नि	ग	म	रे	सा	रे	रे	सा	–
ब्र	ऽ	ह्मा	ऽ	व्या	ऽ	स	र	टे	ऽ	प	ल	छि	न	मों	ऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	रे	-	सा	सा	सा	रे	-	रे	ध़	-	नि़	-	सा	-	रेसा	नि़सा
	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
	0				3				x				2			
(2)	रे	-	सा	सा	सा	रे	-	रे	ग	म	रेसा	नि़सा	पनि़	मप	गम	रेसा
	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	रे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
	0				3				x				2			
(3)	रे	-	सा	सा	सा	रे	-	रे	ग	-	म	प	पनि़	मप	गम	रेसा
	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
	0				3				x				2			

::स्थायी की तान::

(1)	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	रेरे	सानि़	धनि	सारे	गम	गम	रेसा	नि़सा
	0				3				x				2			
(2)	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	नि़सा	रेम	रेसा	नि़सा	रेम	पग	-म	रेसा
	0				3				x				2			
(3)	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	पनि	मप	गम	रेसा	नि़सा	धनि	रे-	सा-
	0				3				x				2			
(4)	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	सांरें	निसां	ध-	निप	मप	गम	रेसा	नि़सा
	0				3				x				2			
(5)	जो	ऽ	गु	रु	कृ	पा	ऽ	क	गम	रेसा	नि़सा	धनि	रे-	सा-	पनि	मप
	0				3				x				2			
	गम	रेसा	नि़सा	धनि	रे-	सा-	सांरें	निसां	ध-	निप	मप	गम	रेसा	नि़सा	धनि	रेसा
	0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::अंतरे की तान::

(1)	गु	रु	की	ऽ	म	हि	मा	ऽ	सांरें	निसां	ध-	निप	मप	धनि	सां-	निसां
	o				3				x				2			
(2)	गु	रु	की	ऽ	म	हि	मा	ऽ	मप	धनि	सांरें	निसां	गुंमं	रेंसां	ध-	निसां
	o				3				x				2			
(3)	गु	रु	की	ऽ	म	हि	मा	ऽ	ह	रि	सों	ऽ	भा	ऽ	री	ऽ
	o				3				x				2			
	गुंमं	रेंसां	निसां	रेंसां	निसां	ध-	निप	मप	धनि	सां-	मप	धनि	सां-	मप	धनि	सां-
	o				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

घर जाने दे छाँड़ मोरी बैयाँ,
हा हा करत तोरे पैयाँ परत हूँ, मोहन से झगरैयाँ।

अंतरा

नगर बगर के लोगवा सुनत हैं, चर्चा करत ब्रज नारियाँ,
जाओ जी जाओ जी तुम खाओगे गालियाँ,
मोहन से झगरैयाँ।

स्थायी

														रे	ग॒
														म	म
														घ	र

म	म	ग॒	रेसा		नि़	सा	सा	रे	म	म					
रे	रे	सा	नि॒	-	सा	रे	रे	प	प	ग॒	-	-	-	-	-
जा	ने	दे	छाँ	ऽ	ड़	मो	रि	बै	ऽ	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
सा	सा		ग॒	नि़	नि़	नि़	नि़	सा	रे		सा	नि॒	ध॒		
रे	रे	-	सा	सा	सा	सा	सा	नि॒	सा	-	रे	ध॒	नि॒	प़	-
हाँ	हाँ	ऽ	क	र	त	तो	रे	पै	याँ	ऽ	प	र	त	हूँ	ऽ
0				3				x				2			
प		प	प	म		म	म	प		नि॒	प	म		रे	ग॒
म	-	म	म	प	-	प	प	म	-	प	नि॒	ग॒	-	म	म
मो	ऽ	ह	न	से	ऽ	झ	ग	रै	ऽ	ऽ	ऽ	याँ	ऽ,	घ	र
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	प	म	म	प		सां		नि॒	नि॒	नि॒	नि॒	सां	नि॒	नि॒	
म	म	प	प	नि॒	प	नि॒	–	सां	सां	सां	सां	नि॒	सां	सां	–
न	ग	र	ब	ग	र	के	ऽ	लो	ग	वा	सु	न	त	हैं	ऽ
0				3				x				2			
सां	नि॒		नि॒	नि॒	ग॒ं	ग॒ं	नि॒	सां		रें	सां	नि॒		ध॒	
नि॒	सां	–	सांनि॒	रें	रें	सां	सां	नि॒	–	सां	रें	ध॒	–	नि॒	प
च	र्चा	ऽ	(कऽ)	र	त	ब्र	ज	ना	ऽ	ऽ	रिं	याँ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			
प	प	प	म	म	म	प		प	नि॒	प	नि॒		ध॒		
म	म	म	प	प	प	नि॒	प	म	प	सां	ध॒	–	नि॒	प	–
जा	ओ	जि	जा	ओ	जि	तु	म	खा	ओ	गे	गा	ऽ	लि	याँ	ऽ
0				3				x				2			
प		नि॒	नि॒	प			म	प		नि॒	प	म		रे	ग॒
सां	–	सां	सां	नि॒	–	प	प	म	–	प	नि॒	ग॒	–	म	म
मो	ऽ	ह	न	से	ऽ	झ	ग	रै	ऽ	ऽ	ऽ	याँ	ऽ,	घ	र
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ना द्रे द्रे तुं द्रे द्रे दीम् त दीम् त, दीम् दीम् तनन दीम् दीम तनन,
ना द्रे द्रे दानि तुं द्रे द्रे दीम् तन देरे ना।

अंतरा

ना द्रे द्रे तुं, द्रे द्रे द्रे द्रे, दीम् दीम् तनन,
धा किट तक धुम, किट तक धा, क्ड़ाँ धा, क्ड़ाँ धा, क्ड़ाँ धा तन देरे ना।

स्थायी

सा	नि़	सा	सा	सा	रे	ग		म			प				म
नि़	सा	रे	रे	सा	नि	सा	रे	ग	–	–	म	प	–	–	प
ना	द्रे	द्रे	द्रे	तुं	द्रे	द्रे	द्रे	दी	ऽ	ऽ	म्त	दी	ऽ	ऽ	म्त
0				3				x				2			
नि		नि	नि	ध		प	म	नि			नि	ध		प	म
ध	–	ध	ध	नि	प	म	प	ध	–	–	ध	नि	प	म	प
दी	ऽ	ऽ	म्दी	ऽ	म्त	न	न	दी	ऽ	ऽ	म्दी	ऽ	म्त	न	न
0				3				x				2			
प	प	प	म	प	म		नि	म				म	ग		
म	म	म	प	म	प	पनि	मप	ग	–	म	प	रे	रे	सा	–
ना	द्रे	द्रे	दा	नि	तुं	द्रेऽ	द्रेऽ	दी	ऽ	म्त	न	दे	रे	ना	ऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प	प	प	प	म	म	नि	नि	सां		नि	नि		नि	नि	नि
म	म	म	म	प	प	ध	ध	नि	–	सां	सां	–	सां	सां	सां
ना	द्रे	द्रे	तुं	द्रे	द्रे	द्रे	द्रे	दी	ऽ	ऽ	म्दी	ऽ	म्त	न	न
x				2				0				3			

नि	मं	मं	गं					प		प	म		प	नि	प
सां	गं	गं	मं	रेंसां	रेंरें	सां	–	नि	प	सां	प	–	म	प	नि
धा	किट	तक	धुम	किट	तक	धा	ऽ	क्ड़ाँ	ऽ	धा	क्ड़ाँ	ऽ	धा	क्ड़ाँ	ऽ
x				2				0				3			

म		प	म	म	ग		
ग	–	म	प	रे	रे	–	सा
धा	ऽ	त	न	दे	रे	ऽ	ना
x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरबारी कान्हड़ा – धमार (विलंबित)

स्थायी

मंदर डफ बाजन लागे री, आयो फागुन मास

स्थायी

			सा
			मं
नि सा रे	रे ग - - म	प ग -	रे - सा
द र ड	फ बा ऽ ऽ ज	न ला ऽ	गे ऽ री
3	x	2	o
ध - नि	सा सा - - सा	रे रे -	सा - सा
आ ऽ यो	ऽ फ ऽ ऽ गु	न मा ऽ	स ऽ, मं
3	x	2	o
नि सा रे	प ग - - म	रे सा -	
द र ड	फ बा ऽ ऽ ज	न ला ऽ	
3	x	2	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 11½ मात्रा से

सा
म

नि	1सा	निसा	रेरे	|	ग-	-म	पग	-रे	-सा	|	ध-	निसा	|	सा-	-सा	रेरे
द	1 मं	दर	डफ	|	बाऽ	ऽज	नला	ऽगे	ऽरी	|	आऽ	योऽ	|	फऽ	ऽगु	नमा
3				|	x					|	2		|	o		
-सा	-सा	निसा	रेप	|	ग-					|			|			
ऽस	ऽ,मं	दर	डफ	|	बा					|			|			
3				|	x					|			|			

तिगुन 4 मात्रा से

सा
म

नि	सा	र	रे	|	ग	-	-	सानिसा	ररेग	|	--म	पग-	|	रे-सा	ध-नि	सासा-
द	र	ड	फ	|	बा	ऽ	ऽ	मंदर	डफबा	|	ऽऽज	नलाऽ	|	गेऽरी	आऽयो	ऽफऽ
3				|	x					|	2		|	o		
-सारे	रे-सा	-सानि	सारेप	|	ग-					|			|			
ऽगुन	माऽस	ऽ,मंद	रडफ	|	बा					|			|			
3				|						|			|			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

चौगुन 5¼ मात्रा से

सा

मं

नि	सा	रे	रे	ग	-	-	म	प	123सा	निसारेरे	ग--म	पग-रे	-साध-
द	र	ड	फ	बा	ऽ	ऽ	ज	न	123मं	दरडफ	बाऽऽज	नलाऽगे	ऽरीआऽ
3				x					2		0		
निसासा-	-सारेरे	-सा-सा	निसारेप	ग-									
योऽफऽ	ऽगुनमा	ऽसऽ,मं	दरडफ	बा									
3				x									

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

अबीर गुलाल कुमकुम केसर छाड़त करत कौतूहल हास।

अंतरा

म	प	-	ध	-	-	नि	सां	-	सां	नि	सां	सां	सां
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	गु	ला	ऽ	ल	कु	म	कु	म
x					2		0			3			
नि	सां	-	रें	रें	सां	-	नि	सां	रें	ध	नि	प	प
के	ऽ	ऽ	स	र	छां	ऽ	ड़	त	ऽ	ऽ	क	र	त
x					2		0			3			
म	प	सां	ग	म	रे	सा	रे	सा	सा	नि	सा	रे	प
की	तू	ऽ	ऽ	ऽ	ह	ल	हा	स,	मं	द	र	ड	फ
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दुगुन 8 मात्रा से

म	प	-	ध	-	-	नि	मप	-ध	--	निसां	-सां	निसां	सांसां
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	गु	अबी	ऽर	ऽऽ	गुला	ऽल	कुम	कुम
x					2		0			3			
निसां	-रें	रेंसां	-नि	सांरें	धनि	पप	मप	सांग	मरे	सारे	सासा	निसा	रेप
केऽ	ऽस	रछां	ऽड़	तऽ	ऽक	रत	कीतू	ऽऽ	ऽह	लहा	स,मं	दर	डफ
x					2		0			3			

तिगुन सम से

मप-	ध--	निसां-	सांनिसां	सांसांनि	सां-रें	रेंसां-	निसांरें	धनिप	पमप	सांगम	रेसारे	सासानि	सारेप
अबीऽ	रऽऽ	गुलाऽ	लकुम	कुमके	ऽऽस	रछांऽ	ड़तऽ	ऽकर	तकीतू	ऽऽऽ	हलहा	स,मंद	रडफ
x					2		0			3			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 3 ½ मात्रा से

म प - 12मप -ध--	निसां-सां निसांसांसां	निसां-रें रेंसां-नि सांरेंधनि	पपमप सागमरे सारेसासा निसारेप
अ बी ऽ 12अबी ऽरऽऽ	गुलाऽल कुमकुम	केऽऽस रछांऽड तऽऽक	रतकीतू ऽऽऽह लहास,मं दरडफ
x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(14) मुलतानी

यह राग तोड़ी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें रे ग ध कोमल, म तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी प तथा संवादी तार सा है। इसका गायन-वादन समय दिन के तीसरे प्रहर में 1:00 से 4:00 बजे तक है। इसका प्राण स्वर ग तथा न्यास के स्वर सा प नि है। इस राग के आरोह में रे-ध वर्जित तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है।

कहा जाता है कि तेरहवीं शताब्दी में इस राग की रचना मुल्तान (वर्तमान पाकिस्तान) निवासी बहाउद्दीन ज़करिया ने की थी इसलिए इस राग का नाम मुल्तानी है। इसका वादी सा रे ग म प में से प होने के कारण यह पूर्वांग प्रधान राग है। मुल्तानी और मधुवन्ती राग का आरोह समान होने के कारण दोनों रागों में एक दूसरे का तिरोभाव किया जा सकता है।

आरोह :- नि़ सा ग म॑ प नि सां।

अवरोह :- सां नि ध प म॑ ग रे सा।

पकड़ :- नि़ सा म॑ ग प, प ग म॑ ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुलतानी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा		सा		ग		मं		प		प			प		
नि़	सा	मं	ग	प	मं	ध	प	मं	प	नि	ध	प	ध	प	मं
3				x				2				0			
मं	प	ध	प	नि		प		प	प		ग	मं	सा		
ग	मं	प	नि	सां	नि	ध	प	मं	ग	-	मं	ग	रे	सा	-
3				x				2				0			
सा		सा	प	ग		मं		प		प			प		
नि़	सा	मं	ग	प	-	ध	प	मं	प	नि	ध	प	ध	प	मं
3				x				2				0			

अंतरा

ग		प	प	मं	सां		नि	सां	नि	सां					
प	मं	ग	मं	प	नि	-	सां	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध	प
3				x				2				0			
प	ध		प		प		प	प	प		प	मं	सा		
मं	प	नि	ध	प	ध	प	मं	ग	मं	प	मं	ग	रे	सा	-
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुलतानी – त्रिताल (विलंबित)

स्थायी

गोकुल गाँव के छोरा, बरसाने की नारी रे।

अंतरा

इन दोउन मन मोह लियो है, रहे सदारंग निहार रे।

स्थायी

		मं	सा	रे॒नि॒	रे॒	नि॒	नि॒	सा	नि॒	सा	ग॒	प	मं	मं	ग॒
–	(प)	ग॒	रे॒सा	सा	नि॒	सा	सा	नि॒	सा	मंग॒	प	मंप	,प	(प)ग॒	मंग॒
ऽ	गो	ऽ	कुल	गाँ	ऽ	ऽ	व	के	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	,छो	राऽ	ऽऽ
3				x				2				0			

मं	प	ध॒	सां		नि	गं॒		मं	प		रें॒सां			ग	मंपध॒
ग॒	म	प	नि	–	सां	रें॒	सां	प	सां	–	नि	(प)	मंग॒	मंग॒	ग॒मंपनि
ब	र	सा	ऽ	ऽ	ने	की	ऽ	ना	ऽ	ऽ	रि	रे	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ
3				x				2				0			

अंतरा

मं		मं	प	ध॒	सां	नि	नि	सां		नि		सां	नि	सां	
प	(प)	ग॒	मं	प	नि	सां	सां	नि	निसां	रें॒	सां	नि	सां	नि	-ध॒प
इ	न	दो	ऽ	उ	न	म	न	मो	ऽऽ	ह	लि	या	ऽ	है	ऽऽऽ
3				x				2				0			

मं	प	ध॒	सां	नि	गं॒		नि	सां	सां	नि				ग	मंपध॒
ग॒	म	प	नि	सां	रें॒	सां	सां	नि	नि	सां	-नि	(प)	मंग॒	मंग॒	ग॒मंपनि
र	हे	ऽ	स	दा	ऽ	रं	ग	नि	हा	ऽ	ऽर	रे	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽ
3				x				2				0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

:: आलाप ::

(1) गाँव सा (सा) ऩि ध़ प़, प़ ऩि, प़ ऩि सा ग - रेसा गोकुल
x

(2) गाँव ऩि सा मं ग प, ऩि सा ग, सा ग मं, ग मं प, (प) मं ग रे सा गोकुल
x

(3) गाँव प, मं प ग मं प, प मं ग मं प नि धप, मं ग रेसा गोकुल
x

(4) गाँव ग मं प नि, प नि सां - -, सां नि - धप, पग मंग रेसा गोकुल
x

:: बोलतान ::

(1) सा ऩि सा साऩि सा ग मं प - प - प, - प मं ग - मं - प नि ध प, - ग मं
गाँ ऽ ऽ व गो ऽ कु ल गा ऽ व के ऽ, ऽ छो ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ब
x
प - नि - सां - गं रें सां - सां नि धप प मं ग मं ग रे सा
सा ऽ न की ऽ ना ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ री ऽ रे ऽ गोकुल

:: तान ::

(1) गाँऽऽव ऩिसा गरे सा-
x
ऩिसा गमं गरे सा-
ऩिसा गमं पमं गमं गरे सा-
ऩिसा गमं पनि धप मंप गमं गरे सा-
ऩिसा गमं पनि सांनि धप मंप गमं गरे सा-
ऩिसा गमं पनि सांगं रेंसां निध पमं गमं गरे सा- गोकुल

(2) गाँऽऽव पमं गमं गरे सा- ऩिसा गमं प- --
x
पमं गमं पनि धप मंप गमं गरे सा- ऩिसा गमं प- --
पमं गमं पनि सांनि धप मंप गमं गरे सा- ऩिसा गमं प- --
ऩिसा गमं प- -- ऩिसा गमं प- -- गोकुल

(3) गाँऽऽव गरे साग रेसा
x
गग रेसा ऩिसा गमं प-
गमं पग मंप गमं पनि धप मंप गमं पनि सां-
पनि सांप निसां पनि सांगं रेंसां निनि धप मंप गमं गरे सा-
मंप गमं गरे सा- मंप गमं गरे सा- गोकुल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुलतानी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रुनक झुनक मोरी पायल बाजे, बिछुवा छुम छुम छननन साजे।

अंतरा

सेज चढ़त मोरी झाँझन हाले, सास ननद की लाजे।

स्थायी

मं	मं	मं	ग	मं	सा		नि़	सा	नि़	सा	प	प	मं		म
प	प	ग	प	ग	रे	सा	सा	नि़	सा	मं	ग	मं	प	मं	ग
रु	न	क	झु	न	क	मो	रि	पा	ऽ	य	ल	बा	ऽ	जे	ऽ
0				3				x				2			
मं	प	ध	सां	नि	सां	प		प	प	मं	मं			ग	
ग	मं	प	नि	सां	नि	ध	प	मं	मं	प	ध	(प)	-	मं	ग
बि	छु	वा	ऽ	छु	म	छु	म	छ	न	न	न	सा	ऽ	जे	ऽ
0				3				x				2			

अंतरा

प		मं	मं	मं	मं	प	ध	सां		नि	सां	नि		नि	
मं	-	प	ध	प	ग	मं	प	नि	-	सां	नि	सां	-	सां	-
से	ऽ	ज	च	ढ़	त	मो	रि	झाँ	ऽ	झ	न	हा	ऽ	ले	ऽ
0				3				x				2			
सां		नि	सां	गं	सां			प	ध	प				ग	
नि	-	सां	गं	रें	रें	सां	-	मं	प	सां	नि	(प)	-	मं	ग
सा	ऽ	स	न	न	द	की	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::बोलतान::

(1)	प प ग प	ग रे सा सा	निसागमं प-गमं	पनिसां- सांनिधप
	रु न क झु	न क मो रि	पाऽऽऽ ऽऽयऽ	लऽऽऽ बाऽजेऽ
	0	3	x	2
(2)	प प ग प	ग रे सा सा	ग मं प नि	सांनि धप मंप मंग
	रु न क झु	न क मो रि	प ऽ य ल	बाऽ ऽऽ ऽऽ जेऽ
	0	3	x	2
(3)	प प ग प	ग रे सा सा	सां- -नि -- ध-	प (प) (प) मंग
	रु न क झु	न क मो रि	पाऽ ऽय ऽऽ लऽ	बा ऽ ऽ जेऽ
	0	3	x	2

::स्थायी की तान::

(1)	रु न क झु	न क मो रि	निसा गमं पमं गमं	पमं गमं गरे सा-
	0	3	x	2
(2)	रु न क झु	न क मो रि	पमं गमं पनि धप	मंप मंग मंग रेसा
	0	3	x	2
(3)	रु न क झु	न क मो रि	सांनि धप मंप गमं	पमं गमं गरे सा-
	0	3	x	2
(4)	रु न क झु	न क मो रि	निसां गरें सांनि धप	मंप मंग मंग रेसा
	0	3	x	2
(5)	रु न क झु	न क मो रि	पा ऽ य ल	बा ऽ जे ऽ
	0	3	x	2
	निसा ग- साग मं-	गमं प- मंप नि-	पनि सां- निसां गरें	सांनि धप मंग रेसा
	0	3	x	2

::अन्तरे की तान::

(1)	से ऽ ज च	ढ त मो रि	सांनि धप मंग रेसा	निसा गमं पनि सां-
	0	3	x	2
(2)	से ऽ ज च	ढ़ त मो रि	सांनि धप मंप गमं	पमं गमं पनि सां-
	0	3	x	2
(3)	से ऽ ज च	ढ़ त मो रि	निसां गरें सांनि धप	मंप गमं पनि सां-
	0	3	x	2
(4)	से ऽ ज च	ढ़ त मो रि	सांनि धप मंप गमं	पमं गमं गरे सा-
	0	3	x	2
	निसा गमं पग मंप	गमं प- नि- सां-	गमं प- नि- सां-	गमं प- नि- सां-
	0	3	x	2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुलतानी – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

आज बजत बधाई बरसाने, मैं तो सुनकर आई अपने कान।

अंतरा

नर नारिन मिल मंगल गावो सनननननननन दरस ध्यान।

स्थायी

	मं
ग	मं
आ	ज

मं	मं	मं	मं	मं			नि़	सा	नि़	सा	प	मं	मं	मं	प
प	प	ग	प	ग	रे	सा	सा	नि़	सा	मंग	मं	प	प	ग	मं
ब	ज	त	ब	धा	ई	ब	र	सा	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ने	मैं	तो
0				3				x				2			

ध	सां	नि	सां	गं				सां	नि		नि		मं	प	
प	नि़	सां	गं	रें	-	सां	-	नि	सां	नि	ध	प	प	ग	मं
सु	न	क	र	आ	ऽ	ई	ऽ	अ	प	ने	का	ऽ	न,	आ	ज
0				3				x				2			

अंतरा

मं	प	मं		प	प	प	ध	सां		नि	सां	नि		नि	
प	मं	प	-	मं	ग	मं	प	नि	-	सां	नि	सां	-	सां	-
न	र	ना	ऽ	रि	न	मि	ल	मं	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	वो	ऽ
0				3				x				2			

सां	सां	नि	सां	गं	सां		नि	सां	नि		नि			मं	प
नि	नि	सां	गं	रें	रें	सां	सां	नि	सां	नि	ध	-	प	ग	मं
स	न	न,	न	न	न	न	न	द	र	स	ध्या	ऽ	न,	आ	ज
0				3				x				2			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::राग विभास::

आरोहः- सा रे ग प ध सां।

अवरोहः- सां ध प ग रे सा।

पकड़ः- सा ध प, ध ग प, सां ध प, ध ग प गपधप ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभास- चौताल (विलम्बित)
(भैरव मेलजन्य प्रकार)

स्थायी

ये नर हर नारायण गोपाल गिरिधर।

स्थायी

ध	प	ग	रे	सा	सा	रे	सा	-	ग	प	प
ये	ऽ	न	र	ह	र	ना	ऽ	ऽ	रा	ऽ	य
0		3		4		x		0		2	
प	ध	-	ध	-	प	प	ग	-	रे	-	सा
न	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	गि	रि	ऽ	ध	ऽ	र
0		3		4		x		0		2	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 10 मात्रा से

ध	प	ग	धप	गरे	सासा	रेसा	–ग	पप	पध	–ध	–प
ये	ऽ	न	येऽ	नर	हर	नाऽ	ऽरा	ऽय	नगो	ऽपा	ऽल
o		3		4		x		o		2	
पग	–रे	–सा	धप	गरे	सासा						
गिरि	ऽध	ऽर	येऽ	नर	हर						
o		3		4							

तिगुन 3 मात्रा से

ध	·प	ग	ध	प	ग	रे	सा	धपग	रेसासा	रेसा-	गपप
ये	ऽ	न	र	ह	र	ना	ऽ	येऽन	रहर	नाऽऽ	राऽय
o		3		4		x		o		2	
पध-	ध-प	पग-	रे-सा								
नगोऽ	पाऽल	गिरिऽ	धऽर								
o		3									

चौगुन 4 ½ मात्रा से

ध	प	ग	रे	सा	सा	रे	सा	-	ग	12धप	गरेसासा
ये	ऽ	न	र	ह	र	ना	ऽ	ऽ	रा	12येऽ	नरहर
o		3		4		x		o		2	
रेसा-ग	पपपध	-ध-प	पग-रे	-साधप	गरेसासा						
नाऽऽरा	ऽयनगो	ऽपाऽल	गिरिऽध	ऽरयेऽ	नरहर						
o		3		4							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

गोपीपति घनश्याम कमल नयन बनवारी
गरुड़ध्वज चतुर्भुज मनोहर।

अंतरा

प	-	प	ध	ध	-	सां	सां	-	सां	-	सां
गो	ऽ	पि	प	ति	ऽ	घ	न	ऽ	श्या	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	
रें	रें	रें	गं	रें	सां	रें	सां	-	ध	-	प
क	म	ल	न	य	न	ब	न	ऽ	बा	ऽ	रि
x		0		2		0		3		4	
प	ग	प	-	ध	ध	ध	सां	सां	ध	-	प
ग	रु	ड़	ऽ	ध्व	ज	च	तु	र	भु	ऽ	ज
x		0		2		0		3		4	
प	ग	-	रे	-	सा						
म	नो	ऽ	ह	ऽ	र						
x		0		2							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

प-	पध	ध-	सांसां	-सां	-सां	रेंरें	रेंगं	रेंसां	रेंसां	-ध	-प				
गोऽ	पिप	तिऽ	घन	ऽश्या	ऽम	कम	लन	यन	बन	ऽवा	ऽरि				
x		o		2		o		3		4					
पग	प-	धध	धसां	साध	-प	पग	-रे	-सा	धप	गरे	सासा				
गरु	ड़ऽ	ध्वज	चतु	रभु	ऽज	मनो	ऽह	ऽर	येऽ	नर	हर				
x		o		2		o		3		4					

तिगुन 9 मात्रा से

प	-	प	ध	ध	-	सां	सां	प-प	धध-	सांसां-	सां-सां
गो	ऽ	पि	प	ति	ऽ	घ	न	गोऽपि	पतिऽ	घनऽ	श्याऽम
x		o		2		o		3		4	
रेंरेंरें	गरेंसां	रेंसां-	ध-प	पगप	-धध	धसांसां	ध-प	पग-	रे-सा	धपग	रेसासा
कमल	नयन	बनऽ	वाऽरि	गरुड़	ऽध्वज	चतुर	भुऽज	मनोऽ	हऽर	येऽन	रहर
x		o		2		o		3		4	

चौगुन सम से

प-पध	ध-सांसां	-सां-सां	रेंरेंरेंगं	रेंसारेंसां	-ध-प	पगप-	धधधसां	सांध-प	पग-रे	-साधप	गरेसासा
गोऽपिप	तिऽघन	ऽश्याऽम	कमलन	यनबन	ऽवाऽरि	गरुड़ऽ	ध्वजचतु	रभुऽज	मनोऽह	ऽरयेऽ	नरहर
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मेघमल्हार

आरोहः- सा रे रे म रे प, म प नि सां।

अवरोहः- सां नि प म - - रे सा, नि़ प़ म़ प़ सा।

पकड़ः- रे म, रे सा, नि़ प़, नि़ सा, रे, म रे प रे म रे सा।

नोट- वास्तव में मेघमल्हार के आरोह में चढ़ा हुआ कोमल नि लगता है। स्वर लिपि में इसके लिए कोई चिन्ह न होने के कारण, चढ़े हुये कोमल नि को शुद्ध नि कह दिया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेघमल्हार – चौताल (विलंबित)

स्थायी

आयो अब बरखारुत उत्कट कांती नरेस
अंबोधर नगप्रमत्त कामीजन सब हरषत।

स्थायी

नि	सां	सां	–	सां	सां	रें	रें	सां	–	नि	प
आ	ऽ	यो	ऽ	अ	ब	ब	र	खा	ऽ	रु	त
x		0		2		0		3		4	
म	–	प	प	सां	–	नि	–	प	प	–	रे
उ	ऽ	त्क	ट	कां	ऽ	ती	ऽ	न	रे	ऽ	स
x		0		2		0		3		4	
रे	म	नि	–	प	प	रे	रे	म	रे	–	सा
अं	ऽ	बो	ऽ	ध	र	न	ग	प्र	म	ऽ	त्त
x		0		2		0		3		4	
सा	–	रे	–	सा	सा	प	मरे	म	रे	सा	सा
का	ऽ	मी	ऽ	ज	न	स	बऽ	ह	र	ष	त
x		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दुगुन सम से

निसां	सां-	सांसां	रेंरें	सां-	निप	म-	पप	सां-	नि-	पप	-रे
आऽ	योऽ	अब	बर	खाऽ	रुत	उऽ	त्कट	कांऽ	तीऽ	नरे	ऽस
x		0		2		0		3		4	
रेम	नि-	पप	रेरे	मरें	-सा	सा-	रे-	सासा	पमरे	मरे	सासा
अंऽ	बोऽ	धर	नग	प्रम	ऽत्त	काऽ	मीऽ	जन	सवऽ	हर	षत
x		0		2		0		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

नि	सां	सां	-	सां	सां	रें	रे	निसांसां	-सांसां	रेंरेंसां	-निप
आ	ऽ	यो	ऽ	अ	ब	ब	र	आऽयो	ऽअब	बरखा	ऽरुत
x		0		2		0		3		4	
म-प	पसां-	नि-प	प-रे	रेमनि	-पप	रेरेम	रे-सा	सा-रे	-सासा	पमरेम	रेसासा
उऽत्क	टकांऽ	तीऽन	रेऽस	अंऽबो	ऽधर	नगप्र	मऽत्त	काऽमी	ऽजन	सबऽह	रषत
x		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

निसांसां-	सांसांरेंरें	सां-निप	म-पप	सां-नि-	पप-रे	रेमनि-	पपरेरे	मरे-सा	सा-रे-	सासापमर	मरेसासा
आऽयोऽ	अबबर	खाऽरुत	उऽत्कट	कांऽतीऽ	नरेऽस	अंऽबोऽ	धरनग	प्रमऽत्त	काऽमीऽ	जनसबऽ	हरषत
x		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

चमकत दामिनी पताक डंका भयो अंश नीरव
कृष्ण बरन मधुर मेघ गगन भयो समंतात

अंतरा

म प	नि सां	सां –	नि सां	रें नि	सां सां
च म	क त	दा ऽ	मि नी	प ता	ऽ क
x	0	2	0	3	4
सां –	रें –	सां सां	रें सां	नि –	प प
डं ऽ	का ऽ	भ यो	अ श	नी ऽ	र व
x	0	2	0	3	4
रें रें	रें रें	रें मं	रें रें	सां नि	सां सां
कृ ष	णा ब	र न	म धु	र मे	ऽ घ
x	0	2	0	3	4
नि सां	रें रें	सां –	रें सां	– नि	– प
ग ग	न भ	रयो ऽ	स मं	ऽ ता	ऽ त
x	0	2	0	3	4

· Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

मप	निसां	सां-	निसां	रेंनि	सांसां	सां-	रें-	सांसां	रेंसां	नि-	पप
चम	कत	दाऽ	मिनी	पता	ऽक	डंऽ	काऽ	भयो	अंश	नीऽ	रव
x		0		2		0		3		4	
रेंरें	रेंरें	रेंमं	रेंरें	सांनि	सांसां	निसां	रेंरें	सां-	रेंसां	-नि	-प
कृष	णब	रन	मधु	रमे	ऽघ	गग	नभ	योऽ	समं	ऽता	ऽत
x		0		2		0		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

म	प	नि	सां	सां	-	नि	सां	मपनि	सांसां-	निसारें	निसांसां
च	म	क	त	दा	ऽ	मि	नी	चमक	तदाऽ	मिनीप	ताऽक
x		0		2		0		3		4	
सां-रें	-सांसां	रेंसांनि	-पप	रेंरेंरें	रेंरेंमं	रेंरेंसां	निसांसां	निसारें	रेंसां-	रेंसां-	नि-प
डंऽका	ऽभयो	अंशनी	ऽरव	कृष्ण	बरन	मधुर	मेऽघ	गगन	भयोऽ	समंऽ	ताऽत
x		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

मपनिसां सां-निसां	रेंनिसांसा सां-रें-	सांसांरेंसां नि-पप	रेंरेंरेंरें रेंमंरेंरें	सांनिसांसां निसांरेंरें	सां-रेंसां -नि-प
चमकत दाऽमिनी	पताऽक डंऽकाऽ	भयोअंश नीऽरव	कृष्णब रनमधु	रमेऽघ गगनभ	योऽसमं ऽताऽत
x	0	2	0	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संचारी

बहुधार घन बरसत तोय भार मंद चलत
अति मन हर नाद करत चातक कुल सब हुलसत।

सा	सा	नि	नि	-	नि	नि	प	म	म	प	प
ब	हु	ऽ	धा	ऽ	र	घ	न	ब	र	स	त
x		0		2		0		3		4	
म	-	प	सां	-	सां	नि	-	नि	नि	प	प
तो	ऽ	य	भा	ऽ	र	मं	ऽ	द	च	ल	त
x		0		2		0		3		4	
रे	म	नि	नि	प	प	रे	रे	म	रे	रे	सा
अ	ति	म	न	ह	र	ना	ऽ	द	क	र	त
x		0		2		0		3		4	
नि	सा	रे	रे	सा	सा	प	रे	म	रे	सा	सा
चा	ऽ	त	क	कु	ल	स	ब	हु	ल	स	त
x		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दुगुन सम से

सासा	निनि	-नि	निप	मम	पप	म-	पसां	-सां	नि-	निनि	पप
बहु	ऽधा	ऽर	घन	बर	सत	तोऽ	यभा	ऽर	मंऽ	दच	लत
x		0		2		0		3		4	
रेम	निनि	पप	रेरे	मरे	रेसा	निसा	रेरे	सासा	परे	मरे	सासा
अति	मन	हर	नाऽ	दक	रत	चाऽ	तक	कुल	सब	हुल	सत
x		0		2		0		3		4	

तिगुन 9 मात्रा से

सा	सा	नि	नि	-	नि	नि	प	सासानि	नि-नि	निपम	मपप
ब	हु	ऽ	धा	ऽ	र	घ	न	बहुऽ	धाऽर	घनब	रसत
x		0		2		0		3		4	
म-प	सां-सां	नि-नि	निपप	रेमनि	निपप	रेरेम	रेरेसा	निसारे	रेसासा	परेम	रेसासा
तोऽय	भाऽर	मंऽद	चलत	अतिम	नहर	नाऽद	करत	चाऽत	ककुल	सबहु	लसत
x		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

सासा<u>निनि</u>	-<u>निनि</u>प	ममपप	म-पसां	-सां<u>नि</u>-	<u>निनि</u>पप
बहुऽधा	ऽरघन	बरसत	तोऽयभा	ऽरमंऽ	दचलत
x		0		2	
रेम<u>निनि</u>	पपरेरे	मरेरेसा	<u>नि</u>सारेरे	सासापरे	मरेसासा
अतिमन	हरनाऽ	दकरत	चाऽतक	कुलसब	हुलसत
0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभोग

अभिनव दूर्वा कंदलि मंडित क्षित सोहत
अति भूषन नवरत नादिक वेशवधु चतुर कहत।

म· प	नि सां	सां –	सां –	नि सां	सां सां
अ भि	न ब	दू ऽ	र्वा ऽ	कं ऽ	द लि
x	0	2	0	3	4
नि सां	रें मं	रें सां	नि सां	रें सां	नि प
मं ऽ	डि त	क्षि ति	सो ऽ	ह त	अ ति
x	0	2	0	3	4
रें रें	मं पं	मं रें	सां सां	नि सां	सां सां
भू ऽ	ष न	न ब	र त	ना ऽ	दि क
x	0	2	0	3	4
म प	सां सां	नि प	रे म	रे रे	सा सा
वे ऽ	श व	धु ऽ	च तु	र क	ह त
x	0	2	0	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

मप निसां	सां- सां-	निसां सांसां	निसां रेंमं	रेंसां निसां	रेंसां निप
अभि नव	दूऽ र्वाऽ	कंऽ दलि	मंऽ डित	क्षिति सोऽ	हत अति
x	0	2	0	3	4
रेंरें मंपं	मंरें सांसां	निसां सांसां	मप सांसां	निप रेम	रेरे सासा
भूऽ षन	नव रत	नाऽ दिक	वेऽ शव	धुऽ चतु	रक हत
x	0	2	0	3	4

तिगुन 9 मात्रा से

म प	नि सां	सां –	सां –	मपनि सांसां-	सां-नि सांसांसां
अ भि	न व	दू ऽ	र्वा ऽ	अभिन वदूऽ	र्वाऽकं ऽदलि
x	0	2	0	3	4
निसांरें मंरेंसां	निसांरें सांनिप	रेंरेंमं पंमंरें	सांसांनि सांसांसां	मपसां सांनिप	रेमरे रेसासा
मंऽडि तक्षिति	सोऽह तअति	भूऽष ननव	रतना ऽदिक	वेऽश वधुऽ	चतुर कहत
x	0	2	0	3	4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

मपनिसां	सां-सां-	निसांसांसां	निसारेंमं	रेंसांनिसां	रेंसांनिप
अभिनव	दूऽर्वाऽ	कंऽदलि	मंऽडित	क्षितिसोऽ	हतअति
x		0		2	
रेंरेंमंपं	मेंरेंसांसां	निसांसांसां	मपसांसां	निपरेम	रेरेसासा
भूऽषन	नवरत	नाऽदिक	वेऽशव	धुऽचतु	रकहत
0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::राग भूपाल तोड़ी::

आरोहः- सा रे ग प ध सां।

अवरोहः- सां ध प ग रे सा।

पकड़ :- ध, प ग रे ग रे सा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाल तोड़ी
चौताल (विलम्बित)

स्थायी

सुगंध मलयागिरी में सुवास मानो बेनि भुजंग ले तू वतन।

स्थायी

प	प	सां	सां	सां	रे	सां	–	ध	ध	प	–
सु	गं	ऽ	ध	म	ल	या	ऽ	गि	रि	में	ऽ
x		o		2		o		3		4	
प	प	सां	सां	–	रे	सां	–	ध	–	प	–
सु	वा	ऽ	स	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ
x		o		2		o		3		4	
ग	–	ध	ध	प	प	ग	–	रे	रे	सा	सा
बे	ऽ	नि	भु	जं	ग	ले	ऽ	तु	व	त	न
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 7 मात्रा से

प	प	सां	सां	सां	र	पप	सांसां	सांरें	सां-	धध	प-
सु	गं	ऽ	ध	म	ल	सुगं	ऽध	मल	याऽ	गिरि	मेंऽ
x		o		2		o		3		4	
पप	सांसां	-रें	सां-	ध-	प-	ग-	धध	पप	ग-	रेरे	सासा
सुवा	ऽस	ऽमा	ऽऽ	ऽऽ	नोऽ	बेऽ	निभु	जंग	लेऽ	तूव	तन
x		o		2		o		3		4	

तिगुन सम से

पपसां	सांसांर	सां-ध	धप-	पपसां	सां-रे	सां-ध	-प-	ग-ध	धपप	ग-र	रसासा
सुगंऽ	धमल	याऽगि	रिमेंऽ	सुवाऽ	सऽमा	ऽऽऽ	ऽनोऽ	बेऽनि	भुजंग	लेऽतू	वतन
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 4 मात्रा से

प	प	सां पपसांसां	सांरसां- धधप-	पपसांसां -रसां-	ध-प- ग-धध	पपग- रेरसासा
सु	ग	ऽ सुगंऽध	मलयाऽ गिरिमेंऽ	सुवाऽस ऽमाऽऽ	ऽऽनोऽ बेऽनिभु	जंगलेऽ तूवतन
x		o	2	o	3	4

· Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

चंद्रबदन की उपमा कहाँ लौं करूँ
बखान करना, न लेत तू वतन।

अंतरा

प	–	प	प	ध	ध	सां	–	सां	सां	सां	–
चं	ऽ	द	ब्र	द	न	की	ऽ	उ	प	मा	ऽ
x		o		2		o		3		4	
ध	ध	–	सां	–	–	गं	रं	–	सां	ध	प
क	हाँ	ऽ	लौं	ऽ	ऽ	क	रूँ	ऽ	ब	खा	न
x		o		2		o		3		4	
प	प	प	–	प	ध	–	ध	सां	सां	ध	प
क	र	ना	ऽ	न	ले	ऽ	त	तु	व	त	न
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 7 मात्रा से

प	-	प	प	ध	ध	प-	पप	धध	सां-	सांसां	सां-
चं	ऽ	द्र	ब	द	न	चंऽ	द्रब	दन	कीऽ	उप	माऽ
x		o		2		o		3		4	
धध	-सां	--	गंरे	-सां	धप	पप	प-	पध	-ध	सांसां	धप
कहाँ	ऽलौं	ऽऽ	करूँ	ऽब	खान	कर	नाऽ	नले	ऽत	तूव	तन
x		o		2		o		3		4	

तिगुन सम से

प-प	पधध	सां-सां	सांसां-	धध-	सां--	गंरे-	साधप	पपप	-पध	-धसां	साधप
चंऽद्र	बदन	कीऽउ	पमाऽ	कहाँऽ	लौंऽऽ	करूँऽ	बखान	करना	ऽनले	ऽततू	वतन
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 4 मात्रा से

प	-	प	प-पप	धधसां-	सांसांसां-	धध-सां	--गंरें	-सांधप	पपप-	पध-ध	सांसाधप
चं	ऽ	द्र	चंऽद्रब	दनकीऽ	उपमाऽ	कहाँऽलौं	ऽऽकरूँ	ऽबखान	करनाऽ	नलेऽत	तूवतन
x		o		2		o		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नायकी कान्हड़ा

आरोहः- सा रे <u>नि़</u> सा रे प प <u>ग</u> म, मं प सां

अवरोहः- सां <u>नि</u> प <u>नि</u> प प <u>ग</u>मपमरेसा रे सा

पकड़ः- सा रे <u>नि</u> सा, रे प प <u>ग</u> म <u>ग</u>मपमरेसा रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नायकी कान्हड़ा-धमार (विलम्बित)

स्थायी

लाल लाड़ली खेल निकसे होरी

स्थायी

नि॒ सा रे प	प ग॒ म रे –	सा –	नि॒ नि॒ सा
ला ल ला ड़	ली ऽ ऽ खे ऽ	ल ऽ	नि क ऽ
3	X	2	0
नि॒ – प़ –	म – प सां –	नि॒ प	म रे सा
से ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ री
3	X	2	0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 13 मात्रा से

नि सा निसा रेप	पग मरे -सा -नि निसा	नि- प-	म- पसां -नि
ला ल लाल लाड़	लीऽ ऽखे ऽल ऽनि कऽ	सेऽ ऽऽ	होऽ ऽऽ ऽऽ
3	X	2	3
पम रेसा निसा रेप			
ऽऽ ऽरी लाल लाड़			
3			

तिगुन 3 1/3 मात्रा से

नि सा रे प	प ग म 1निसा रेपप	गमरे -सा-	निनिसा नि-प -म-
ला ल ला ड़	ली ऽ ऽ 1लाल लाड़ली	ऽऽखे ऽलऽ	निकऽ सेऽऽ ऽहोऽ
3	X	2	0
पसां- निपम रेसानि सारेप			
ऽऽऽ ऽऽऽ ऽरीला ललाड़			
3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 7 मात्रा से

नि	सा	रे	प	प	ग	म	रे	-	सा	निसारेप	पगमरे	-सा-नि	निसानि-
ला	ल	ला	ड़	ली	ऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	लाललाड़	लीऽऽखे	ऽलऽनि	कऽसेऽ
3				x					2				
प-म-	पसां-नि	पमरेसा	निसारेप										
ऽऽहोऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽरी	लाललाड़										
3													

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

अंतरा

संग सखा सखी, रंग भर लिये खेल रचो री।

म	प	–	सां	–	–	सां	सां	–	–	नि	सां	सां	–
सं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	स	खा	ऽ	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ
3					x		2			0			
नि	सां	–	रें	–	सां	–	नि	नि	सां	नि	नि	प	–
र	ग	ऽ	भ	ऽ	र	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ
3					x		2			0			
म	प	–	सां	–	नि	प	म	रे	सा	नि	सा	रे	प
ख	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	र	चो	ऽ	री	ला	ल	ला	ड़
3					x		2			0			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 8 मात्रा से

म	प	-	सां	-	-	सां	मप	-सां	--	सांसां	--	निसां	सां-
सं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	स	संऽ	ऽग	ऽऽ	सखा	ऽऽ	सऽ	खीऽ
x					2		0			3			
निसां	-रें	-सां	-नि	निसां	निनि	प-	मप	-सां	-नि	पम	रेसा	निसा	रेप
रंग	ऽभ	ऽर	ऽली	ऽऽ	ऽऽ	येऽ	खेऽ	ऽल	ऽऽ	रचो	ऽरी	लाल	लाड़
x					2		0			3			

तिगुन सम से

मप-	सां--	सांसां-	-निसां	सां-नि	सां-रे	-सां-	निनिसां	निनिप	-मप	-सां-	निपमं	रेसानि	सारेप
सांऽऽ	गऽऽ	सखाऽ	ऽसऽ	खीऽरं	गऽभ	ऽरऽ	लीऽऽ	ऽऽये	ऽखेऽ	ऽलऽ	ऽरचो	ऽरीला	ललाड़
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 3 ½ से

म प - 12मप -सां--	सांसां-- निसांसां-	निसां-रें -सां-नि निसांनिनि	प-मप -सां-नि पमरेसा निसारेप
सं ऽ ऽ 12संऽ ऽगऽऽ	सखाऽऽ सऽखीऽ	रंगऽभ ऽरऽली ऽऽऽऽ	येऽखेऽ ऽलऽऽ रचोऽरी लाललाड़
x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

धमार उपज सम से

(1)

निसा	रेप	मप	गम	रेसा	|	निसा	रेप	|	पग	मनि	सारे	|	पप	गम	निसा	रेप
लाल	लाड़	लीऽ	खेऽ	लऽ	|	लाल	लाड़	|	लीऽ	ऽला	लला	|	ड़ली	ऽऽ	लाल	लाऽ
x						2			0				3			

प
ली
x

(2)

निसारेरे	पमप-	नि-सां-	गमंरेंसां	निनिप-	|	म-पसां	-निपम	|	रेसानिसा	रेपपग	मरे-सा	|	-निसारे	पपगम	रे-सा-	निसारेप
लाऽलला	ऽड़लीऽ	खेऽलऽ	खेऽलऽ	निकसेऽ	|	होऽऽऽ	ऽऽऽऽ	|	ऽरीलाल	लाड़लीऽ	ऽखेऽल	|	ऽलालला	ड़लीऽऽ	खेऽलऽ	लाललाड़
x						2			0				3			

प
ली
x

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मधमाद सारंग

आरोहः- नि सा रे म प नि सां

अवरोहः- सां नि प म रे सा

पकड़ः- नि सा रे म रे, प रे म रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मधमाद सारंग - धमार (विलम्बित)

स्थायी

ढपकी धुंकारे बाजत बन बन नाचत कुँवर कृष्ण कान।

स्थायी

म	प	सां	निसां	रें	सां	- नि -	सां		-	नि	प	-
ढ	प	की	ऽऽ	धुं	का	ऽ ऽ ऽ	ऽ		ऽ	रे	ऽ	ऽ
3				x			2			0		
म	-	म	प	नि नि	प म	रे	सा		सा	रे	म	रे
वा	ऽ	ज	त	ब न	ब न	ऽ	ऽ		न	च	त	ऽ
3				x			2			0		
म	प	नि	सां	रें	-	- सां -	-		सां	नि	नि	प
कुँ	व	र	ऽ	कृ	ऽ	ऽ ष्णा ऽ	ऽ		का	ऽ	ऽ	न
3				x			2			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन 6 मात्रा स

म	प	सां	निसां	रैं	सां	-	नि	-	मप	सांनिसां	रेंसां	-नि	-सां
ढ	प	की	ऽऽ	धुं	का	ऽ	ऽ	ऽ	ढप	कीऽऽ	धुंका	ऽऽ	ऽऽ
3				x					2		0		
-नि	प-	म-	मप	निनि	पम	रेसा	सारे	मरे	मप	निसां	रें-	-सां	--
ऽरे	ऽऽ	वाऽ	जत	बन	बन	ऽऽ	नच	तऽ	कुँव	रऽ	कृऽ	ऽष्णा	ऽऽ
3				x					2		0		
सांनि	निप	मप	सांनिसां										
काऽ	ऽन	ढप	कीऽऽ										
3													

तिगुन 12 2/3 मात्रा स

म	प	12 म	पसांनिसां	रेंसां-	नि-सां	-निप	-म-	मपनि	निपम	रेसासा	रेमरे	मपनि	सारें-
ढ	प	12 ढ	पकीऽऽ	धुंकाऽ	ऽऽऽ	ऽरेऽ	ऽबाऽ	जतब	नबन	ऽऽना	चतऽ	कुँवर	ऽकृऽ
3				x					2		0		
-सां-	-सांनि	निपम	पसांनिसां										
ऽष्णाऽ	ऽकाऽ	ऽनढ	पकीऽऽ										
3													

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 3 ½ मात्रा से

म	प	सां	निसां	रें	सां	12मप	सांनिसांरेंसां	-नि-सां	-निप-	म-मप	निनिपम	रेसासारे	मरेमप
ढ	प	की	ऽऽ	धुं	का	12ढप	कीऽऽधुंका	ऽऽऽऽ	ऽरेऽऽ	बाऽजत	बनबन	ऽऽनच	तऽकुँव
3				x					2		0		
निसांरें-	-सां--	सांनिनिप	मपसानिसां										
रऽकृऽ	ऽष्णाऽऽ	काऽऽन	ढपकीऽऽ										
3													

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

एक गावत एक मृदंग बजावत डमरू बाजत
एक नाचत दे दे ताल तान।

अंतरा

म प - नि सां	सां सां	नि सां -	सां रें मं रें
ए क ऽ गा ऽ	व त	ए क ऽ	मृ दं ऽ ग
x	2	0	3
सां सां - नि प	म प	निध नि प	रे - सा सा
ब जा ऽ व त	म प	रूऽ ऽ ऽ	बा ऽ ज त
x	2	0	3
सा सा - रे -	म रे	म प -	नि सां सां -
ए क ऽ ना ऽ	ऽ ऽ	च त ऽ	दे ऽ दे ऽ
x	2	0	3
रें - - सां -	- सां	नि नि प	म प सां निसां
ता ऽ ऽ ल ऽ	ऽ त	ऽ ऽ न	ढ प की ऽऽ
x	2	0	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम स

मप	-नि	सांसां	सानि	सां-	सांरें	मरें	सांसां	-नि	पम	पनिध	निप	रे-	सासा		
एक	ऽगा	ऽव	तए	कऽ	मृदं	ऽग	बजा	ऽव	तम	परूऽ	ऽऽ	बाऽ	जत		
x					2		o			3					
सासा	-रे	-म	रेम	प-	निसां	सां-	रें-	-सां	—	सांनि	निप	मप	सांनिसां		
एक	ऽना	ऽऽ	ऽच	तऽ	देऽ	देऽ	ताऽ	ऽल	ऽऽ	ताऽ	ऽन	ढप	कीऽऽ		
x					2		o			3					

तिगुन 9 1/3 मात्रा से

म	प	-	नि	सां	सां	सां	नि	सां	1मप	-निसां	सांसानि	सां-सा	रेंमरें
ए	क	ऽ	गा	ऽ	व	त	ए	क	1एक	ऽगाऽ	वतए	कऽमृ	दंऽग
x					2		o			3			
सांसां-	निपम	पनिधनि	परे-	सासासा	सा-रे	-मरे	मप-	निसांसां	-रें-	-सां-	-सांनि	निपम	पसांनिसा
बजाऽ	वतड	मरूऽऽ	ऽबाऽ	जतए	कऽना	ऽऽऽ	चतऽ	देऽदे	ऽताऽ	ऽलऽ	ऽताऽ	ऽनढ	पकीऽऽ
x					2		o			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

चौगुन सम से

मप-<u>नि</u>	सांसांसां<u>नि</u>	सां-सारें	मरेंसांसां	-<u>नि</u>पम	प<u>नि</u>ध<u>नि</u>प	रे-सासा	सासा-रे	-मरेम	प-<u>नि</u>सां	सां-रें-	-सां--	सां<u>निनि</u>प	मपसां<u>नि</u>सा		
एकऽगा	ऽवतए	कऽमृदं	ऽगंबजा	ऽवतड	मरूऽऽऽ	बाऽजत	एकऽना	ऽऽऽच	तऽदेऽ	देऽताऽ	ऽलऽऽ	ताऽऽन	ढपकीऽऽ		
x					2		0			3					

धमार उपज सम से

(1)	<u>नि</u>सा	रेम	रेम	पप	मप	<u>नि</u>सां	रें<u>नि</u>	सांसां	मप	सां-	मप	सां-	मप	सां-
	ढप	कीऽ	धुंका	ऽर	बाऽ	जत	बन	बन	ढप	कीऽ	ढप	कीऽ	ढप	कीऽ
	x					0		2			3			

रें

ढ७x

(2)	रेंमरेंसां	रें<u>नि</u>सांसां	प<u>नि</u>पम	रेमरेसा	मप<u>नि</u>सा	रेंमरेंसां	<u>नि</u>पमरे	सासामप	सां-रेंसां	-सां<u>नि</u>सां	सांमपसां	-रेंसां-	सां<u>नि</u>सांसां	मपसां-
	ढपकीऽ	धुंकाऽर	बाऽजत	बनबन	नाचतऽ	कुवरऽ	कृऽश्नका	ऽनढप	कीऽधुंका	ऽरबाज	तढपकी	ऽधुंकाऽ	रबाजत	ढपकीऽ
	x					0		2			3			

रें

ढ७x

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

::राग शहाना::

आरोह:- सा म म प ग म ध नि प म प सां

अवरोह:- सां नि ध नि प म प ग म रे सा

पकड़ :- ग म ध नि प म प सां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

19 राग शहाना - धमार (विलम्बित)

नि नि - प -	- प	ध म -	प - मप प
कुं ज ऽ न ऽ	ऽ उ	ड़ त ऽ	है ऽ ऽऽ गु
x	2	o	3
सां - - नि ध	नि प	म प -	ग - म -
ला ऽ ऽ ल ऽ	ऽ रि	दै ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
x	2	o	3
म प - म ग	म -	रे - ग	सा - - -
हो ऽ ऽ री ऽ	ऽ ऽ	खे ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ
x	2	o	3
सा म - म -	- प	प - -	प - ग म
कृ ऽ ऽ ष्णा ऽ	ऽ क	न्है ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
x	2	o	3

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुगुन सम से

निनि	-प	--	पध	म-	प-	मपप	सां-	-नि	धनि	पम	प-	गु-	म-
कुंज	ऽन	ऽऽ	उड़	तऽ	हैऽ	ऽऽगु	लाऽ	ऽल	ऽऽ	रिदै	ऽऽ	याऽ	ऽऽ
x					2		0			3			
मप	-म	गुम	-रे	-गु	सा-	--	साम	-म	--	पप	--	प-	गुम
होऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽखे	ऽऽ	लेऽ	ऽऽ	कृऽ	ऽष्णा	ऽऽ	कन्है	ऽऽ	याऽ	ऽऽ
x					2		0			3			

तिगुन 9 1/3 मात्रा से

नि	नि	-	प	-	-	प	ध	म	1निनि	-प-	-पध	म-प	-मपप
कुं	ज	ऽ	न	ऽ	ऽ	उ	ड़	त	1कुंज	ऽनऽ	ऽउड़	तऽहै	ऽऽऽगु
x					2		0			3			
सां--	निधनि	पमप	-गु-	म-म	प-म	गुम-	रे-गु	सा--	-साम	-म-	-पप	--प	-गुम
लाऽऽ	लऽऽ	रिदैऽ	ऽयाऽ	ऽऽहो	ऽऽरी	ऽऽऽ	खेऽऽ	लेऽऽ	ऽकृऽ	ऽष्णाऽ	ऽकन्है	ऽऽया	ऽऽऽ
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन सम से

निनि-प	--पध	म-प-	मपपसां-	-निधनि	पमप-	ग-म-	मप-म	गम-रे	-गसा-	--साम	-म--	पप--	प-गम
कुंजऽन	ऽऽउड़	तऽहैऽ	ऽऽगुलाऽऽ	लऽऽ	रिदैऽऽ	याऽऽऽ	होऽऽरी	ऽऽऽखे	ऽऽलेऽ	ऽऽकृऽ	ऽष्णाऽऽ	कन्हैऽऽ	याऽऽऽ
x					2		o			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म	प	-	नि	-	सां	नि	सां	सां	-	नि	सां	सां	-
स	ब	ऽ	स	ऽ	ऽ	खि	य	न	ऽ	मि	ऽ	ल	ऽ
x					2		0			3			
नि	सां	-	रें	-	सां	-	नि	सां	-	नि	ध	नि	प
ब	न	ऽ	ब	ऽ	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
x					2		0			3			
नि	प	-	प	-	-	प	ध	म	-	प	-	म	प
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	त	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नं	द
x					2		0			3			
सां	-	-	नि	ध	नि	प	म	प	-	प	ग	म	-
ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	रि	दे	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
x					2		0			3			
म	प	-	म	ग	म	-	रे	-	ग	सा	-	-	-
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	खे	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ
x					2		0			3			
सा	म	-	म	-	-	प	प	-	-	प	-	ग	म
कृ	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ	क	न्है	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दुगुन सम से

मप	-नि	-सां	निसां	सां-	निसां	सां-	निसां	-रें	-सां	-नि	सां-	निध	निप
सब	ऽस	ऽऽ	खिय	नऽ	मिऽ	लऽ	बन	ऽब	ऽन	ऽआ	ऽऽ	ईऽ	ऽऽ
x					2		o			3			
निप	-प	--	पध	म-	प-	मप	सां-	-नि	धनि	पम	प-	पग	म-
खोऽ	ऽल	ऽऽ	तहैं	ऽऽ	ऽऽ	नंद	लाऽ	ऽल	ऽऽ	रिदे	ऽऽ	याऽ	ऽऽ
x					2		o			3			
मप	-म	गम	-रे	-ग	सा-	--	साम	-म	--	पप	--	प-	गम
होऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽखो	ऽऽ	लेऽ	ऽऽ	कृऽ	ऽष्णा	ऽऽ	कन्है	ऽऽ	याऽ	ऽऽ
x					2		o			3			

तिगुन सम से

मप-	नि-सां	निसांसां	-निसां	सां-नि	सां-रें	-सां-	निसां-	निधनि	पनिप	-प-	-पध	म-प	-मप
सबऽ	सऽऽ	खियन	ऽमिऽ	लऽब	नऽब	ऽनऽ	आऽऽ	ईऽऽ	ऽखेऽ	ऽलऽ	ऽतहैं	ऽऽऽ	ऽनंद
x					2		o			3			
सां--	निधनि	पमप	-पग	म-म	प-म	गम-	रे-ग	सा--	-साम	-म-	-पप	--प	-गम
लाऽऽ	लऽऽ	रिदेऽ	ऽयाऽ	ऽऽहो	ऽऽरी	ऽऽऽ	खेऽऽ	लेऽऽ	ऽकृऽ	ऽष्णाऽ	ऽकन्है	ऽऽया	ऽऽऽ
x					2		o			3			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौगुन 8 मात्रा से

म	प	-	नि	-	सां	नि	मप-नि	-सांनिसां	सां-निसां	सां-निसां	-रें-सां	-निसां-	निधनिप
स	ब	ऽ	स	ऽ	ऽ	खि	सबऽस	ऽऽखिय	नऽमिऽ	लऽबन	ऽबऽन	ऽआऽऽ	ईऽऽऽ
x					2		0			3			
निप-प	--पध	म-प-	मपसां-	-निधनि	पमप-	पगुम-	मप-म	गुम-रे	-गुसा-	--साम	-म--	पप--	प-गुम
खेऽऽल	ऽऽतहैं	ऽऽऽऽ	नंदलाऽ	ऽलऽऽ	रिदेऽअ	याऽऽऽ	होऽऽरी	ऽऽऽखे	ऽऽलेऽ	ऽऽकृऽ	ऽष्णाऽऽ	कन्हैऽऽ	याऽऽऽ
x					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार - उपज सम से

(1)	मपसां-	मपसां-	मपसां-	गमंरेंसां	-गमंरें	|	सां-गमं	रेंसां-रें		
	कुँजनऽ	कुँजनऽ	कुँजनऽ	उड़तहै	ऽउड़त	|	हैऽउड़	तहैऽगु		
	x					|	2			
	निसांधनि	परेंनिसां	धनिपरें			|	निसांधनि	पनिधनि	पधमप	गमरे-
	लाऽलऽ	रीगुलाऽ	लऽरीगु			|	लाऽलऽ	रीदैयाहो	रीखेलेकृ	रनकन्हैऽ
	0					|	3			
(2)	सां-निध	निपपप	पधमप	सां-सां-	सांधनिप	|	निधनिप	पपपध		
	याऽकुँज	नऽहड़	तहैऽगु	लाऽलऽ	रीढैऽया	|	कुँजनऽ	उड़तहै		
	x					|	2			
	मपसां-	सां-सांध	निपनिध			|	निपपप	पधमप	सां-सां-	सांधनिप
	ऽगुलाऽ	लऽरीदै	ऽयाकुंज			|	नऽउड़	तहैऽगु	लाऽलऽ	रीदैअया
	0					|	3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट

	पूर्वांग	उत्तरांग	
1.	सा रे ग म	प ध नि सां	बिलावल
2.	सा रे ग म	प ध नि सां	भैरव
3.	सा रे ग म	प ध नि सां	काफी
4.	सा रे ग म	प ध नि सां	भैरवी

पूर्वांग के प्रथम अर्धमेल के साथ उत्तरांग के चारों अर्धमेलों को बारी बारी जोड़ने से चार मेल या थाट बनते हैं इसी प्रकार पूर्वांग के दूसरे अर्धमेल के साथ उत्तरांग के चारों अर्धमेलों को पुनः बारी-बारी जोड़ने से चार नये मेल या थाट बनेगें, ठीक इसी प्रकार पूर्वांग के तीसरे और चौथे अर्धमेलों से साथ उत्तरांग के सभी अर्धमेलों को बारी-बारी जोड़ने से कुल 4 x 4 = 16 मेल या थाट हुए। इन सबमें शुद्ध म का प्रयोग हुआ है। शुद्ध म के स्थान पर तीव्र म के प्रयोग से 16 नये थाट होगें अतः 16 + 16 = 32 थाट अधिकतम हिन्दुतानी संगीत पद्धति में होते है, जिनमे से कल्याण, बिलावल आदि दस थाट प्रयोग में आते है।

कर्नाटकीय संगीत पद्धति में 12 स्वरों के 16 नाम होने के कारण चार के स्थान पर छः अर्धमेल बनते है, अतः 6 x 6 = 36 शुद्ध म के और 36 ही तीव्र म के कुल 72 मेल या थाट 'पं० व्यंकटमकी' ने 'चतुर्दण्डी प्रकाशिका' में कहे हैं। जिनमे से मुखारी आदि 19 मेल प्रचार में हैं।

आगे हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 32 थाट सारणी में दिये जा रहे हैं–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र०	पूर्वांग	उत्तरांग	विवरण	प्रस्तार
1.	बिलावल	बिलावल	सभी शुद्ध	सा रे ग म प ध नि
2.	बिलावल	भैरव	ध कोमल	सा रे ग म प ध नि
3.	बिलावल	काफी	नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
4.	बिलावल	भैरवी	ध, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
5.	भैरव	बिलावल	रे कोमल	सा रे ग म प ध नि
6.	भैरव	भैरव	रे, ध कोमल	सा रे ग म प ध नि
7.	भैरव	काफी	रे, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
8.	भैरव	भैरवी	रे, ध, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
9.	काफी	बिलावल	ग कोमल	सा रे ग म प ध नि
10.	काफी	भैरव	ग, ध कोमल	सा रे ग म प ध नि
11.	काफी	काफी	ग, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
12.	काफी	भैरवी	ग, ध, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
13.	भैरवी	बिलावल	रे, ग कोमल	सा रे ग म प ध नि
14.	भैरवी	भैरव	रे, ग, ध कोमल	सा रे ग म प ध नि
15.	भैरवी	काफी	रे, ग, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि
16.	भैरवी	भैरवी	रे, ग, ध, नि कोमल	सा रे ग म प ध नि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17.	कल्याण	बिलावल	म तीव्र	सा रे ग म॑ प ध नि
18.	कल्याण	भैरव	म तीव्र ध कोमल	सा रे ग म॑ प ध॒ नि
19.	कल्याण	काफी	म तीव्र नि कोमल	सा रे ग म॑ प ध नि॒
20.	कल्याण	भैरवी	म तीव्र ध, नि कोमल	सा रे ग म॑ प ध॒ नि॒
21.	पूर्वी	बिलावल	म तीव्र रे कोमल	सा रे॒ ग म॑ प ध नि
22.	पूर्वी	भैरव	म तीव्र रे, ध कोमल	सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि
23.	पूर्वी	काफी	म तीव्र रे, नि कोमल	सा रे॒ ग म॑ प ध नि॒
24.	पूर्वी	भैरवी	म तीव्र रे, ध, नि कोमल	सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि॒
25.	मधुवन्ती	बिलावल	म तीव्र ग कोमल	सा रे ग॒ म॑ प ध नि
26.	मधुवन्ती	भैरव	म तीव्र ग, ध कोमल	सा रे ग॒ म॑ प ध॒ नि
27.	मधुवन्ती	काफी	म तीव्र ग, नि कोमल	सा रे ग॒ म॑ प ध नि॒
28.	मधुवन्ती	भैरवी	म तीव्र ग, ध, नि कोमल	सा रे ग॒ म॑ प ध॒ नि॒
29.	तोड़ी	बिलावल	म तीव्र रे, ग कोमल	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध नि
30.	तोड़ी	भैरव	म तीव्र रे, ग, ध कोमल	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि
31.	तोड़ी	काफी	म तीव्र रे, ग, नि कोमल	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध नि॒
32.	तोड़ी	भैरवी	म तीव्र रे, ग, ध, नि कोमल	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि॒

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरोह तमसो ज्योतिः
Bekaraan Aalami
Foundation

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi